नारदमुनिभाषितम्

वृष्टिविज्ञानम्

(ग्रहचारार्क्षवारतिथ्यानुसारेण संवत्सरादिफलकथनम्)

डॉ० श्रीकृष्ण 'जुगनू'
अनुभूति चौहान

भारतीय ज्योतिर्विज्ञानियों के लिए प्रकृति का अध्ययन अति महत्त्वपूर्ण विषय रहा है। प्रकृति की गतिविधियों के आधार पर हमारी ऋषि मनीषा ने सृष्ट्योपयोगी विचारों, मान्यताओं को जन्म दिया। प्रकृति के परिवेश से लेकर उसमें होने वाले परिवर्तनों, स्पंदनों से जीवनोपयोगी निष्कर्ष दिए। वृष्टि विषयक मान्यताओं के मूल में यही विचार जान पड़ता है। ज्योतिर्विज्ञान की अवधारणा रही है कि जो कुछ होने वाला है, वह पूर्व में विचार लिया जाए, इसके लिए कई विधियों से सङ्केत पाए जा सकते हैं। इनमें ग्रहों का संचरण, तिथियों पर आने वाले वार, वारों को सूर्य, चन्द्रादि के मण्डलों में होने वाले परिवर्तन, ग्रहण, वेध-छिद्र, ग्रहों की युति, एक राशि में संचरण, नक्षत्रों का वार, तिथि, ग्रहों के साथ तालमेल या विरोध, पशु-प्राणियों का पूर्वाभास आदि मुख्य स्वीकारे गए हैं।

इस प्रकार की विविध क्रियाओं के ज्ञानादि के लिए ही लोकाञ्चल से ज्योतिर्विज्ञान अस्तित्व में आया और धीरे-धीरे वह संस्कारों की सिद्धि का हेतु हो गया। नारद मुनि ने स्पष्ट किया है- **विनैतदखिलं श्रौतस्मार्त कर्मं न सिद्ध्यति। तस्माज्जगद्धितायेदं ब्रह्मणा रचितं पुरा।**

महर्षि नारद ने वृष्टिविज्ञान विषयक स्वतन्त्र शास्त्र का प्रणयन किया है। नारद कथित वृष्टिशास्त्र को मयूरचित्रक नाम से भी जाना जाता है। मयूरचित्रम् में वर्णित विषय अनुसन्धान की दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय है। यह विषयक किसानों से लेकर व्यापारियों तक के लिए उपयोगी है। मौसम विज्ञानियों, सरोवर विज्ञानियों, पौध-सस्य विज्ञानियों तक के लिए यह उपादेय माना जा सकता है। प्रस्तुत ग्रन्थ में मयूरचित्रम् के साथ ही गार्गीसंहिता का पाठ भी दिया गया है, इसका प्रकाशन इसके प्रतिलिपिकाल १६८९ ई० से पूरे ३१५ वर्षों बाद हो रहा है।

नारदमुनिभाषितम्

मयूरचित्रम्

(ग्रहचारार्क्षवारतिथ्यानुसारेण संवत्सरादिफलकथनम्)

(परिशिष्टोक्त गार्गीसंहिता)

परिमल संस्कृत ग्रन्थमाला सं. १३३

नारदमुनिभाषितम्

वृष्टिविज्ञानम्

[मयूरचित्रम्]

(ग्रहचारार्क्षवारतिथ्यानुसारेण संवत्सरादिफलकथनम्)

सम्पादक एवं टीकाकार

डॉ० श्रीकृष्ण 'जुगनू'

अनुभूति चौहान

परिमल पब्लिकेशन्स

दिल्ली

प्रकाशक :

परिमल पब्लिकेशन्स

२७/२८ व २२/३, शक्तिनगर,

दिल्ली - 110007

फोन : 23845456, 47015168

e-mail : order@ parimalpublication.com

ISBN : 978-81-7110-474-1

संस्करण : वर्ष 2014

मूल्य : ₹ 250.00

मुद्रक :

विशाल कौशिक प्रिंटर्स

नजदीक जी.टी.बी. हॉस्पिटल,

जगतपुरी विस्तार, दिल्ली-११००९३

-चं2/359

पुरोवाक्

भारतीय ज्योतिर्विज्ञानियों के लिए प्रकृति का अध्ययन अति महत्वपूर्ण विषय रहा है। प्रकृति की गतिविधियों के आधार पर हमारी ऋषि मनीषा ने सृष्ट्योपयोगी विचारों, मान्यताओं को जन्म दिया। प्रकृति के परिवेश से लेकर उसमें होने वाले परिवर्तनों, स्पंदनों से जीवनोपयोगी निष्कर्ष दिए। वृष्टि विषयक मान्यताओं के मूल में यही विचार जान पड़ता है। ज्योतिर्विज्ञान की अवधारणा रही है कि जो कुछ होने वाला है, वह पूर्व में विचार लिया जाए, इसके लिए कई विधियों से सङ्केत पाए जा सकते हैं। इनमें ग्रहों का संचरण, तिथियों पर आने वाले वार, वारों को सूर्य, चंद्रादि के मण्डलों में होने वाले परिवर्तन, ग्रहण, वेध-छिद्र, ग्रहों की युति, एक राशि में संचरण, नक्षत्रों का वार, तिथि, ग्रहों के साथ तालमेल या विरोध, पशु-प्राणियों का पूर्वाभास आदि मुख्य स्वीकारे गए हैं।

इस प्रकार की विविध क्रियाओं के ज्ञानादि के लिए ही लोकाञ्चल से ज्योतिर्विज्ञान अस्तित्व में आया और धीरे-धीरे वह संस्कारों की सिद्धि का हेतु हो गया। नारद मुनि ने स्पष्ट किया है- *विनैतदखिलं श्रौतस्मार्तं कर्म न सिद्ध्यति। तस्माज्जगद्धितायेदं ब्रह्मणा रचितं पुरा।*

संवत्सर के पूर्वावलोकन के सन्दर्भ में यही कुछ मान्यता है। यूं तो ताजिक नाम से इसका पृथक् ही शास्त्र भी माना गया है किंतु जिन लोकाश्रित ज्योतिर्विधियों से वृष्टि आधारित वर्ष का पूर्वानुमान किया जाता है, उसे मयूरचित्रकान्तर्गत माना गया है। वायु परीक्षा, ग्रहों का जलराशियों, जलनक्षत्रों के साथ संचरण, दूरी, नैकट्य वारों के अनुसार मासारंभ या अन्य तिथियों में गगनदर्शन से लेकर चींटी, टीटहरी, काक निलय, मेघ, योगायोग, ग्रहफल, गर्भज्ञानादि इसके अन्तर्भूत हैं। इसे जानने वाले लोग समाज में सम्मान्य रहे हैं, साम्प्रत मौसम विज्ञान के विकास से पूर्व ज्योतिषप्रासाद का एक वातायन इस ओर भी खुला और इसका विकास भी हुआ। कहा भी गया है कि इसका जानने वाला लोक प्रसिद्ध होता है- *यं ज्ञात्वा दैवविदो लोके ख्यातिं समायान्ति।*

प्रसिद्ध ज्योतिर्विद महर्षि पराशर ने तो यहाँ तक कहा कि यदि हमारा जीवन कृषि आश्रित है तो कृषि वृष्टि आधारित है और वृष्टि विषयक सूक्ष्म, वृहद् सङ्केतों पर हमारी दृष्टि रहनी ही चाहिए- *वृष्टिमूला कृषिः सर्ववृष्टिमूलञ्च जीवनम्। तस्मादादौ*

प्रयत्नेन वृष्टिज्ञानं समाचरेत्। यह इस ज्ञान के महत्व का परिचायक है। ऋषियों ने इस ज्ञान को सृष्टिकल्याण के हेतु, कालजयी करने के उद्देश्य से कई ग्रंथों का प्रणयन किया। इन्हीं में से एक ग्रंथ 'मयूरचित्रम्' हैं। नारद मुनि को इसका प्रणेता माना जाता है। नारद ज्योतिर्विज्ञान निष्णात् रहे हैं। वृष्टि के विषय में उनके मत पुराण, संहितादि में मिलते हैं। कई निबंधकारों ने उद्धृत भी किए हैं किंतु उनका इसी नाम से रचित ग्रंथ दुर्लभ ही माना जाता है। अध्येताओं के लिए इसके पाण्डुलिपियों को देखना पड़ता है और विडम्बना है कि अधिकांश पाठ त्रुटित ही मिलते हैं, पाठांतर भी नहीं, उस पर भी ऋषि ज्ञान देवभाषा में ही निबद्ध होने से कई कठिनाइयाँ होती हैं।

कुछ समय पूर्व कोलम्बिया विश्वविद्यालय की एक विद्यार्थी से भेंट हुई जो भारतीय विज्ञान विषयक धारणाओं पर अध्ययन करने हमारे यहाँ आई। उसी दिन एक समाचार पत्र में एक चित्र छपा था जिस पर टीट्टिभाण्ड अथवा टिटहरी पक्षी को उसके अण्डों के साथ दिखाया गया था। कैप्शन में लिखा था- 'लोकजीवन में टिटहरी के अण्डों के आधार पर ही वर्षा के पूर्वानुमान की मान्यता है। कहते हैं कि यदि वह ऊँचाई पर अण्डे देती है तो वर्षा खूब होती है और नीचे अण्डे देती है तो पानी कम बरसता है। ज्योतिष की मान्यताओं में टिट्टिभाण्ड के अण्डों के लिए यह भी कहा गया है कि जितने अण्डों के मुँह नीचे होंगे, उतने महीनों तक वर्षा होती है।'

इसी चित्र को लेकर उक्त विद्यार्थी से विमर्श होने लगा, उसने ज्योतिषशास्त्रीय मान्यताओं के प्रमाण मुझसे माँगे, मैंने कुछ जुटा दिए। उसके लिए यह एक नया विषय था और मेरे लिए भी। वह तो चली गई किंतु मैं सोचती रही थी, एक सामान्य बात के लिए वह कोलम्बिया से प्रमाण मांग सकती है तो मैं इस ज्ञानसरोवर के मध्य क्यों नहीं। इस ज्ञान की दिशा में कुछ करूं...।

'मयूरचित्रम्' इसी प्रयास की उपज है। पाण्डुलिपि रूप में विद्यमान मयूरचित्रम् ग्रंथ के खण्डित, त्रुटित और अस्पष्ट होने की चर्चा कई विद्वानों ने की है। मैंने इसके पाठ के शोधन, संशोधन की दिशा में किञ्चित प्रयास करते हुए इसे सर्वसुलभ बनाने का प्रयास किया है। पाठ की खोज से लेकर संपादन और पाठांतर और एतद् विषयक पठन-पाठन में परिजनों का विशेष सहयोग रहा। पापा और मम्मी ने ममत्वमय मदद दी, मैं उनकी ऋणि हूँ।

प्रकाशन कर इसे सर्वसुलभ बनाने का दायित्व परिमल पब्लिकेशंस, दिल्ली के संचालक श्रद्धेय श्रीकन्हैयालालजी जोशी ने ग्रहण किया, उनके प्रति आभार।

मेरा मानना है कि मयूरचित्रम् में वर्णित विषय अनुसंधान की दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय है। यह विषयक किसानों से लेकर व्यापारियों तक के लिए उपयोगी है। मौसम विज्ञानियों, सरोवर विज्ञानियों, पौध-सस्य विज्ञानियों तक के लिए यह उपादेय माना जा सकता है। घाघ-भड्डरी ने जहाँ इस ज्ञान को लोकभाषा में लोकप्रिय किया, वहीं खनार, डाक, सहदेवादि के वचनों ने भी सूक्तिरूप में लोककण्ठ का सम्मान पाने, हर किसी का हियहार होने का सौभाग्य पाया है। प्रस्तुत ग्रंथ में मयूरचित्रम् के साथ ही गार्गीसंहिता का पाठ भी दिया गया है, इसका प्रकाशन इसके प्रतिलिपिकाल १६८९ ई. से पूरे ३१५ वर्षों बाद हो रहा है। इसके लिए इतना ही कहना चाहूँगी- *यादृशं पुस्तकं दृष्टं तादृशं लिखितं मया। यदि शुद्धमशुद्धं वा मम दोषो न विद्यते॥*

आशा है विद्वाज्जनों को मेरा यह प्रयास रुचिकर लगेगा। यदि कहीं त्रुटियाँ रही हैं तो वह मेरी भूल है, अच्छाइयाँ प्रभु श्रीनाथजी की कृपा है। *तुष्यन्ति सुजना बुध्वा विशेषान्मदुदूरितान्। अबोधेन हसन्तो मां तोषमेष्यन्ति दुर्जनाः॥*

उदयपुर **अनुभूति चौहान**

विक्रम संवत् २०६२

प्रयत्नेन वृष्टिज्ञानं समाचरेत्। यह इस ज्ञान के महत्व का परिचायक है। ऋषियों ने इस ज्ञान को सृष्टिकल्याण के हेतु, कालजयी करने के उद्देश्य से कई ग्रंथों का प्रणयन किया। इन्हीं में से एक ग्रंथ 'मयूरचित्रम्' हैं। नारद मुनि को इसका प्रणेता माना जाता है। नारद ज्योतिर्विज्ञान निष्णात् रहे हैं। वृष्टि के विषय में उनके मत पुराण, संहितादि में मिलते हैं। कई निबंधकारों ने उद्धृत भी किए हैं किंतु उनका इसी नाम से रचित ग्रंथ दुर्लभ ही माना जाता है। अध्येताओं के लिए इसके पाण्डुलिपियों को देखना पड़ता है और विडम्बना है कि अधिकांश पाठ त्रुटित ही मिलते हैं, पाठांतर भी नहीं, उस पर भी ऋषि ज्ञान देवभाषा में ही निबद्ध होने से कई कठिनाइयाँ होती हैं।

कुछ समय पूर्व कोलम्बिया विश्वविद्यालय की एक विद्यार्थी से भेंट हुई जो भारतीय विज्ञान विषयक धारणाओं पर अध्ययन करने हमारे यहाँ आई। उसी दिन एक समाचार पत्र में एक चित्र छपा था जिस पर टीट्टिभाण्ड अथवा टिटहरी पक्षी को उसके अण्डों के साथ दिखाया गया था। कैप्शन में लिखा था- 'लोकजीवन में टिटहरी के अण्डों के आधार पर ही वर्षा के पूर्वानुमान की मान्यता है। कहते हैं कि यदि वह ऊँचाई पर अण्डे देती है तो वर्षा खूब होती है और नीचे अण्डे देती है तो पानी कम बरसता है। ज्योतिष की मान्यताओं में टिट्टिभाण्ड के अण्डों के लिए यह भी कहा गया है कि जितने अण्डों के मुँह नीचे होंगे, उतने महीनों तक वर्षा होती है।'

इसी चित्र को लेकर उक्त विद्यार्थी से विमर्श होने लगा, उसने ज्योतिषशास्त्रीय मान्यताओं के प्रमाण मुझसे माँगे, मैंने कुछ जुटा दिए। उसके लिए यह एक नया विषय था और मेरे लिए भी। वह तो चली गई किंतु मैं सोचती रही थी, एक सामान्य बात के लिए वह कोलम्बिया से प्रमाण मांग सकती है तो मैं इस ज्ञानसरोवर के मध्य क्यों नहीं। इस ज्ञान की दिशा में कुछ करूं...।

'मयूरचित्रम्' इसी प्रयास की उपज है। पाण्डुलिपि रूप में विद्यमान मयूरचित्रम् ग्रंथ के खण्डित, त्रुटित और अस्पष्ट होने की चर्चा कई विद्वानों ने की है। मैंने इसके पाठ के शोधन, संशोधन की दिशा में किञ्चित प्रयास करते हुए इसे सर्वसुलभ बनाने का प्रयास किया है। पाठ की खोज से लेकर संपादन और पाठांतर और एतद् विषयक पठन-पाठन में परिजनों का विशेष सहयोग रहा। पापा और मम्मी ने ममत्वमय मदद दी, मैं उनकी ऋणि हूँ।

प्रकाशन कर इसे सर्वसुलभ बनाने का दायित्व परिमल पब्लिकेशंस, दिल्ली के संचालक श्रद्धेय श्रीकन्हैयालालजी जोशी ने ग्रहण किया, उनके प्रति आभार।

मेरा मानना है कि मयूरचित्रम् में वर्णित विषय अनुसंधान की दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय है। यह विषयक किसानों से लेकर व्यापारियों तक के लिए उपयोगी है। मौसम विज्ञानियों, सरोवर विज्ञानियों, पौध-सस्य विज्ञानियों तक के लिए यह उपादेय माना जा सकता है। घाघ-भड्डरी ने जहाँ इस ज्ञान को लोकभाषा में लोकप्रिय किया, वहीं खनार, डाक, सहदेवादि के वचनों ने भी सूक्तिरूप में लोककण्ठ का सम्मान पाने, हर किसी का हियहार होने का सौभाग्य पाया है। प्रस्तुत ग्रंथ में मयूरचित्रम् के साथ ही गार्गीसंहिता का पाठ भी दिया गया है, इसका प्रकाशन इसके प्रतिलिपिकाल १६८९ ई. से पूरे ३१५ वर्षों बाद हो रहा है। इसके लिए इतना ही कहना चाहूँगी- *यादृशं पुस्तकं दृष्टं तादृशं लिखितं मया। यदि शुद्धमशुद्धं वा मम दोषो न विद्यते॥*

आशा है विद्वाज्जनों को मेरा यह प्रयास रुचिकर लगेगा। यदि कहीं त्रुटियाँ रही हैं तो वह मेरी भूल है, अच्छाइयाँ प्रभु श्रीनाथजी की कृपा है। *तुष्यन्ति सुजना बुध्वा विशेषान्मदुदूरितान्। अबोधेन हसन्तो मां तोषमेष्यन्ति दुर्जनाः॥*

उदयपुर **अनुभूति चौहान**

विक्रम संवत् २०६२

भा
व्यय
तिवि
ध्योप
कृति
दनों
यता
ातिवि
ला है
विि
रण,
द्रादि
-छि
वार,
णियों
इस
लोक
ण,
रचित्र
ात
लेखन
ारिय
वर
उपा
चित्र
है,
से पूरे

ऋतुविज्ञान की अवधारणा एवं मयूरचित्रम्

भारतीय मनीषा ने लोकाश्रित विज्ञान की विविध शाखाओं के रूप में कई अनुशासनों पर दृष्टि निक्षेपकर पर्याप्त शोधानुसंधान करते हुए शास्त्रों का प्रवर्तन किया। इनमें कृषिशास्त्र, खनिशास्त्र, नौकाशास्त्र, रथशास्त्र, विमानशास्त्र, यन्त्रशास्त्र, वास्तुशास्त्र, शिल्पशास्त्र, प्राकारशास्त्र, नगररचनाशास्त्रादि आदि मुख्य हैं। ये जीवनोपयोगी विज्ञान के रूप में स्वीकार्य हैं। इसमें जलशास्त्र भी मुख्य हैं। यद्यपि इस शास्त्र को विज्ञान की कोटि में माना गया है और इसका मूल उत्स वेदों में निहीत है तथापि जब संहिता आधारित विषयों का विश्लेषण-विवेचन और वर्गीकरण हुआ तो यह महत्वपूर्ण शास्त्र कुछ अङ्गों के साथ ज्योतिर्विज्ञान के अन्तर्गत मान लिया गया।

मरुताश्रित जल और उसके प्रकार-

ऋग्वेद में आया है कि जल अति महत्वपूर्ण तत्त्व हैं। इन्द्र जल बरसाते हैं। वहां इन्द्र से वर्षा की कामना की गई है। मरुत इसके स्वामी हैं जो इन्द्र के अनुचर, समान प्रीति करने वाले, स्वर्णिम रथों पर आरुढ़ होने वाले हैं। वे नित्य उद्देश्यपूर्ण यज्ञ में आगमन करते हैं। वे तृषित और जलाभिलाषी के लिए जल का प्रवाह करते हैं, लोक को अनुगृहीत करते हैं। लोककल्याण उन्हें अभीष्ट हैं। वे अन्तरिक्ष में मेघों को कम्पित करते हैं, उनके आने से वन-प्रदेश भी कम्पित हो जाते हैं, जब वे बिन्दुदार मृगों को रथ से योजितकर उग्र होते हैं तब पृथ्वी भी क्षुब्ध हो जाती है। वे वीर मरुद्गण, अति तेजस्वी, वृष्टिजल के आच्छादक, जुड़वाँ के तुल्य, उत्तम दर्शनीय और अति रूपवान् हैं, उनका वर्ण बभ्रु हैं और अरुणिम वर्ण अश्वों से युक्त हैं। वे अपने शुभकार्यों से अमर कीर्ति को प्राप्त करते हैं-

आ रुद्रास इन्द्रवन्तः सजोषसो हिरण्यरथाः सुविताय गन्तन।

इयं वो अस्मत्प्रति हर्यते मतिस्तृष्णजे न दिव उत्सा उदन्यवे॥

वाशीमन्त ऋष्टिमन्तो मनीषिणः सुधन्वान इषुमन्तो निषङ्गिणः।

स्वश्वाः स्थ सुरथाः पृश्निमातरः स्वायुधा मरुतो याथना शुभम्॥

धूनुथ द्यां पर्वतान्दाशुषे वसु नि वो वना जिहते यामनो भिया।

कोपयथ पृथिवीं पृश्निमातरः शुभे यदुग्राः पृषजीरयुग्ध्वम्॥

वातत्विषो मरुतो वर्षनिर्णिजो यमाइव सुसदृशः सुपेशसः।

पिशङ्गाश्वा अरुणाश्वा अरेपसः प्रत्वक्षसो महिना द्योरिवोरसः॥

पुरुद्रप्सा अञ्जिमन्तः सुदानवस्त्वेषसन्दृशो अनवभ्रराधसः।

सुजातासो जनुषा रुक्मवक्षसो दिवो अर्का अमृतं नाम भेजिरे॥

(ऋग्वेद ५, ५७, १-५)

इस प्रकार जल विज्ञान का वेदों में संकेत मिलता है। इसी प्रकार का वर्णन ऋग्वेद के सातवें मण्डल *(४९, २)* तथा अथर्ववेद में भी उपलब्ध है। निश्चय ही यह इस ज्ञानशाखा के उद्भव और विकास का आधार रहा है। तैत्तिरीयसंहिता में वर्षा को जनजीवन के रक्षक तत्त्व के रूप में जाना गया है। उसमें यज्ञ विधि से वर्षा करने व रोकने के प्रयोग दिए गए हैं। ऋग्वेद में पहली बार वनस्पति के लिए उपयोगी जल के चार प्रकार कहे गए हैं- १. दिव्या या वर्षा से प्राप्त जल २. खनित्रिमा अथवा कृत्रिम या कूपादि का जल ३. स्वयंजा या झरनों, स्रोतों का जल और ४. समुद्रार्था अथवा समुद्रगामी सरिताओं का पानी *(७, ४९, २)*।

अथर्ववेद काल में कृषि के लिए पाँच जल-स्रोतों का उपयोग होता था और पानी को भी उसी स्रोत के नामानुसार जाना जाता था-

शं न आपो धन्वन्या३ः शमु सन्त्वनूप्याः। शं नः खनित्रिमा आपः शमु याः कुम्भ आभृताः शिवा नः सन्तु वार्षिकी। (१, ६, ४)

तथा-

अपो देवीरुप ह्वये यत्र गावः पिबन्ति नः। सिन्धुभ्यः कर्त्वं हविः॥ (१, ४, ३)

इस प्रकार इस काल में स्रोतानुसार जल के नाम निम्न थे- १. धन्वन्य अथवा मरुप्रदेश का जल २. अनूप्य अथवा जिस प्रदेश में पर्याप्त रूप से पानी मिलता है या सरोवरादि का जल ३. खनित्रिम या खुदाई कर बनाए गए कूप, वापी, कुण्ड आदि का जल ४. वार्षिक अथवा वृष्टि से प्राप्त जल ५. सिन्धुभ्यः अथवा सरिताओं में प्रवहमान पानी। यजुर्वेद *(१६, ३७, ३८)* व तैत्तरीयसंहिता *(४, ५, ७, १-२)* के रचनाकाल तक वनस्पत्यर्थ कुआँ, नहर, सोतों के पानी, तडाग, सरिता एवं बांधों का उपयोग होने लगा था- स्रुत्याय, कुल्याय, सरस्याय, नादेयाय, वैशन्ताय, कूप्याय, अवट्याय, मेघ्याय, वर्ष्याय इत्यादि।

वेदों से लेकर अन्यान्य वाङ्मय में जल के लिए कई शब्दों, संज्ञाओं का प्रयोग हुआ है। निरुक्त *(१, १२)* में १०१ शब्द मिलते हैं। इनमें मुख्य हैं-

अर्ण, अम्ब, सलिल, अम्बु, रस, सरस, उदक, तोय, वार, वारि, जल, नीर, अमृत, योनि, रेतस्, पूर्ण, नेभस्, मेघजा, पानीय, जीवन, स्वच्छभूत इत्यादि। जल को प्रकृति का महत्वपूर्ण तत्त्व मानते हुए ऋषियों ने इसे 'भूमिरापोऽनलोवायु' जैसे पञ्चभूतों में से एक माना है। इसीलिए इसे जीवकाया के एक अङ्ग के रूप में भी देखा गया है।

जलशास्त्र के अङ्गों में दो मुख्य हैं-

१. भूमिगत जलविज्ञान और

२. आकाशीय जलविज्ञान।

इसमें प्रथम अङ्ग को दकार्गल या उदकार्गल नाम से जाना गया है और द्वितीय को वृष्टिविज्ञान कहा गया है। प्रथमाङ्ग का सर्वप्रथम विवेचन और अध्ययन कदाचित मनु ने किया क्योंकि वराहमिहिर ने इसका उल्लेख किया है-

सारस्वतेन मुनिना दकार्गलं यत् तदवलोक्य।

आर्याभिः कृतमेतद्वृत्तैरपि मानवं वक्ष्ये॥

(बृहत्संहिता ५४, ९९)

बाद में सारस्वत, बलदेव, काश्यप, वराहाचार्य ने इसे नवीन सन्दर्भों के साथ प्रस्तुत किया। भटोत्पल (शकाब्द ८८८) ने इनका उल्लेख किया है। इसी प्रकार शार्ङ्गधर, सुरपाल, चक्रपाणि मिश्र प्रभृति विद्वानों ने भी इस दिशा में अपने निष्कर्ष प्रस्तुत किए हैं।

द्वितीयाङ्ग अथवा वृष्टिविज्ञान के आद्याध्येता महर्षि नारद माने जाते हैं। यूं वृष्टिविज्ञान को भी वेदसम्मत माना जाता है। वेदों में अतिवृष्टि, अनावृष्टि से कृषि की रक्षा का सन्दर्भ मिलता है *(ऋग्वेद ६, ५०, १४२; ६, ७, ११)*। ऋतुओं के साथ इसका सम्बन्ध स्थापित किया गया है। ब्राह्मणग्रंथों में इस सम्बन्ध में विशेष स्थापनाएँ देखी जा सकती है। *(ऐतरेयब्राह्मण ४, १४, ५ तथा शतपथब्राह्मण १, ९, ३, १९)*

वृष्टि को जगत का पालन करने वाला माना गया है। पानी है तो सब है, पानी से ही प्राण, पानी से ही जीव-जगत है। इसलिए इस ज्ञान को महत्वपूर्ण माना गया है। महर्षि पाराशर ने कृषि सहित चराचर का मूल वृष्टि को माना है-

वृष्टिमूला कृषि: सर्वा वृष्टिमूलं च जीवनम्।

तस्मादादौ प्रयत्नेन वृष्टिज्ञान समाचरेत्॥

(कृषिपराशर १०)

इस प्रकार पराशर मुनि ने वृष्टि विज्ञान का महत्व उजागर किया है। इसी प्रकार वराहाचार्य (५०५-५८० ई.) का मानना है कि संसार का प्राण अन्न है और वह वर्षा के ही अधीन है, इसीलिए यह प्रयास करना चाहिए कि वर्षा के लक्षणों की परीक्षा की जानी चाहिए-

अन्नं जगत: प्राणा: प्रावृट्कालस्य चान्नमायत्तम्।

यस्मादत: परीक्ष्य: प्रावृट्काल: प्रयत्नेन॥

(बृहत्संहिता २१, १)

वराहमिहिर ने इस वृष्टि विषयक ज्ञान के प्रणेता के रूप में सर्वप्रथम गर्ग का स्मरण किया है। उसके काल तक पराशर, काश्यप, वज्र आदि ने भी गर्भलक्षणों का वर्णन किया था-

तल्लक्षणानि मुनिभिर्यानि निबद्धानि तानि दृष्ट्वेदम्।

क्रियते गर्गपराशरकाश्यपवज्रादि रचितानि॥

(वही २)

वराह के काल तक उक्त आचार्यों में से कई आचार्यों ने कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा पर गर्भ देखने के नियम भी बनाए थे किंतु वे खरे नहीं उतरते थे अत: वराह ने गर्ग के मत को ही ग्रहण किया था। वराह के विवृत्तिकार उत्पल ने इस प्रसंग में सिद्धसेन का उद्धरण दिया है-

शुक्लपक्षमतिक्रम्य कार्तिकस्य विचारयेत्।

गर्भाणां सम्भवं सम्यक् सस्यसम्पतिकारकम्॥

(वही ५)

वस्तुत: यह विज्ञान बड़ा ही रोचक विषय रहा है। मनुष्य ही क्या, सृष्टि के विभिन्न प्राणी वृष्टि की कल्पना करते हैं। वृक्ष, गुल्म, लता, चींटी, टिट्टिभाण्ड, सर्प, सरिसृप, चीड़ियाँ, गाय, वृषभ, कुक्कुरादि से लेकर पर्वत, गुहाओं तक इसकी हलचल

को अनुभव किया जा सकता है। ऋषियों ने इसी अनुभव प्रसूत वृष्टिज्ञान को सृष्टि के हित की आकाङ्क्षा से लिपिकृत किया। इस दिशा में मनु सहित महर्षि गर्ग, अत्रि, कश्यप, वशिष्ठादि ने विशेष योगदान किया और उसे ज्योतिर्विज्ञान की दृष्टि से विशिष्ट माना गया है।

कालान्तर में जबकि कृषि और पशुधन आधारित अर्थव्यवस्था समाज का प्रधान अङ्ग बनी तो वृष्टि के साथ ही इन विषयों को भी महत्व मिलता चला गया। इसी कारण ग्रह, नक्षत्र, योग, युति, वार, संवत्सर आदि के आधार पर न केवल वृष्टि अपितु उससे जुड़े राजनीतिक मन्तव्य, उपज-निपज, अन्न-तिलादि का संग्रह-भण्डारण, विपणन, लाभालाभ जैसे प्रकरण भी इस विद्या के साथ जुड़े। यह क्रम ५वीं-६ठवीं सदी में विशेषरूप से आरंभ हुआ। हालांकि चाणक्य ने वृष्टि पर विशेष दृष्टि रखने, वर्षानुमान के साथ ही नाप-मानक भी रखने का निर्देश बहुत पहले ही दे दिया था। मौर्य राजवंश के केंद्रीय अन्न भण्डार (कोष्ठागार) में वर्षा नापने की व्यवस्था होती थी और राज्य की ओर से मौसम की पूर्व घोषणाएं करने की परंपरा थी (अर्थशास्त्र, अधिकरण द्वितीय, 5)। कोष्ठागार में ऐसा पात्र रखा जाता था जिसका मुँह 1 अरत्नी चौड़ा होता और यह वर्षा नापने के काम आता था। तब एक अरत्नी 24 अङ्गुल और आज के डेढ़ फुट के के बराबर था। वराह ने इसके लिए आढ़क नाम दिया है।

वृष्टिविषयक ग्रंथ व मयूरचित्रक-

गर्ग कृत संहिताशास्त्र में वृष्टि पर विशेषाध्याय मिलता है। मुझे 'गार्गीसंहिता' नाम से एक स्वतंत्र ग्रंथ की पुरानी मातृका (पाण्डुलिपि) मिली है जिसकी पुष्पिका में कहा गया है- संवत् १७४६ वर्षे वैशाख सुदी 11 गुरे लिखितं भट्ट रूपजी कस्येणायं ग्रंथः।॥ श्रीरस्तु॥ महाराजाधिराज पुरोहितजी श्री गरीबदाशजी कस्येदं पुस्तकं॥ श्रीरस्तु॥ गार्गीयसंहिता की यह एक ऐसी पाण्डुलिपि है जिसमें कुल २२१ श्लोकों में गर्भ व वृष्टिविज्ञान को परिभाषित किया गया है। इसके श्लोकों का आरंभ रुद्रयामलीय मेघमाला या गुरुसंहिता के अनुसार ही हुआ है जिसमें शिव द्वारा ईश्वरी या उमा को वृष्टिविज्ञान का कथन किया गया है-

शृणु शक्त्य (शक्त?) यथातथ्यं चैत्रायाः पञ्चमी फलं।

चैत्रस्य शुक्ल पञ्चम्यामभ्र(भ्रू?)छत्रं यदा नभः॥ १॥

निर्मला वा (स?) दिशः सर्वा दृश्यन्ते वायुना युताः (वायु संयुताः?)।

गोधूमांस्तत्र गृह्णीयान्महर्घानपि बुद्धिमान् ॥ २ ॥

संप्राप्ते श्रावणे मासि लाभस्त्रिगुणितो (? लाभश्च त्रिगुणो) भवेत् ।.

इस प्रकार हमारे यहाँ वृष्टिविज्ञान की जानकारी देने वाले कई ग्रंथ रहे होंगे। तुलनीय रूप से उनके मतों में अधिक अंतर नहीं है किंतु ऐसा जान पड़ता है कि समय-समय पर जो अध्ययन और अनुसंधान इस दिशा में होता रहा, उससे इन ग्रंथों के सृजन की धारा भी निरंतर रही। यद्यपि ज्योतिष के कई ग्रंथों, निबंधों में भी वृष्टिविषयक योगाध्याय मिलते हैं किंतु इसके स्वतंत्र ग्रंथ भी रहे हैं। इन ग्रंथों में संस्कृत भाषा में निबद्ध ग्रंथ मुख्य हैं-

१. कृषिपराशर २. काश्यपीयकृषिसूक्ति ३. संवत्सरकथन ४. संवत्सरफलम्

५. कृषिपद्धति ६. मयूरचित्रक ७. गुरुसंहिता ८. मेघमाला ९. कादम्बिनी

१०. वनमाला ११. कृषिसङ्ग्रह इत्यादि

प्राकृत-अपभ्रंश में लिखा गया एक ग्रंथ है-

१. भड्डुलीपुराण (घाघ-भड्डुली वार्ता)

घाघ, भड्डुली या भड्डुरी ने वृष्टिविज्ञान विषयक सूत्रों को लोक भाषा में निबद्ध किया, यही कारण है कि हमारे यहाँ पर बंगाल, मिथिला से लेकर सिंध तक उसकी उक्तियाँ कण्ठकोश पर जीवंत है। उसके वचनों के कई संग्रह भी दोहा, चौपाइयों के रूप में मिलते हैं जिनमें 'घाघ-भड्डुरी की कहावतें', 'घाघ-भड्डुरी वार्ता', 'घाघ कहे सुन भड्डुरी' आदि नाम से सङ्ग्रह उपलब्ध होते हैं। इन ग्रंथों की कई पाण्डुलिपियाँ भी मिलती हैं। घाघ कहीं-कहीं डाक नाम से भी प्रचलित हैं, यह भी हो सकता है कि कोई पृथक नाम हो। उसके नाम पर 'डाकवचनामृत' (डाक कहे सुन डाकिनी) ग्रंथ मिलता है।*

इसी प्रकार दक्षिण भारत में कन्नड़ में 'तिरिक्कुरल', 'रत्तमतशास्त्रसु', तमिल में

---

* घाघभड्डुरी, खनार वचन, डाकवचनामृत, तिरिक्कुरल, रत्तमतशास्त्रसु, करनपथु, वारिशास्त्रञ्चेत्येतेषु एकस्यापि भाषा सुसंस्कृता परिशुद्धा च न वर्तते। घाटभड्डुरीति ग्रंथस्य भाषा हिन्दी प्रदेशस्य ग्रामेषु या प्रचलति सैव वर्तते। डाकवचनामृतेऽपि मैथिलीभाषायाः विकृतं स्वरूपं, तथैव खनारवचन-नामकग्रन्थस्योत्कलभाषायाः विकृतं रुपम्। मेघमालायाः अपि तादृश्येव स्थितिरस्ति। अस्याः अपि भाषा अति सरला, कुत्रचिद्व्याकरणदृष्ट्याऽपिशुद्धापि। मेघमालामयूरचित्रकवनमाला इत्यादिषुग्रंथेषु ये विषयाः वर्णिताः ते सर्वेऽपि घाघभड्डुरी प्रभृति ग्रंथैः सह साम्यं भजन्ते।
सर्वनारायण झा : मेघमाला, श्रीगङ्गानाथझा केंद्रीय संस्कृत विद्यापीठ, प्रयाग १९९३ ई, पृष्ठ ७

'करनपथु', नेपाली में 'वारिशास्त्र' मिलते हैं। इसी प्रकार 'सहदेव कथन', 'खनारवचन' नामक ग्रंथ भी वृष्टि विज्ञानाश्रित हैं और मिलते हैं।

इन शास्त्रों की परंपरा कुछ ऐसी रही है कि लोकजीवन के कई रचनाकारों ने भी अपनी ओर से अनुभूत वाक्यों को तुकबंद कर घाघ, खनार, सहदेव आदि के नाम से प्रचलित कर दिया। मालवा, मेवाड़, ब्रज, बुंदेलखण्ड, गुजरात, सिंध आदि प्रदेशों में वर्षा विषयक वाक्यों को इस सन्दर्भ में देखा-सुना जा सकता है। स्वयं तुलसीदास भी पीछे नहीं रहे-'उदित अगस्ति पंथ जल सोहा, संत हृदय जस गत मद मोहा' (रामचरितमानस, ४, १५, ३) चौपाई में वराहमिहिर के अगस्त्याचार का 'उदये च मुनेरगस्त्यनाम्नः ,कुसुमायोगमल प्रदूषितानि। हृदयानि सत्तामिव स्वभावात् पुनरम्बूनि भवन्ति निर्मलानि' (बृहत्संहिता १२,८) श्लोक ही आधार जान पड़ता है।

इनके अतिरिक्त वराहमिहिर कृत बृहत्संहिता तो इस ज्ञान का महत्वपूर्ण स्रोत है। वराह को यह विषय इतना उपयोगी लगा था कि पुनरुक्तिदोष को जानते हुए भी उसने इसे दोबारा लिखने का उपक्रम किया। अपने प्रश्नशास्त्र व पञ्चपक्षी में भी इस विषय को स्थान दिया। समाससंहिता भी इनमें से एक है, दुर्भाग्य से उसकी कोई प्रतिलिपि आज तक नहीं मिली है। लल्लाचार्य कृत 'रत्नकोश' में भी यह विषय रहा होगा क्यों कि उसे संहिताग्रंथ माना जाता है किंतु उसका पाठ भी अद्यावधि अनुपलब्ध है। यूं लल्ल ने 'शिष्यधीवृद्धिद' में भूवायुकक्ष का उल्लेख करते हुए में उसमें होने वाले प्रभावों की ओर सङ्केत किया है। लल्ल के अनुसार निर्घात, उल्का, परिवेश, विद्युत, इन्द्रधनुष, मेघ, अपूर्व गन्धर्वनगर इत्यादि चमत्कार भूवायुकक्ष में ही होते हैं-

निर्घातोल्कापरिवेषविद्युच्छक्रचापसलितमुचः।

गन्धर्वनगरपूर्वा मध्ये भूवायुकक्षायाम्॥

अन्य ग्रंथों में भावप्रकाश, हारितसंहिता, वर्षप्रबोध, मकरन्दप्रकाश, भावकथन, प्रश्नचूड़ामणि, गर्गमनोरमा, फलकथन, त्रैलोक्यप्रकाश, ग्रहयोगचर्चा, नरपति जयचर्यास्वरोदय, ज्योतिर्निबन्ध, ज्योतिषप्रकाश, ज्योतिषसागर, सङ्ग्रहशिरोमणि आदि के नाम स्मरणीय हैं। रामदीन दैवज्ञ (१८७० ई.) कृत 'बृहद्दैवज्ञरञ्जनम्' में भी प्रभूत सामग्री उपलब्ध है। इसमें मयूरचित्रक से कई श्लोकभी उद्धृत किए गए हैं।

'भद्रबाहुसंहिता' नामक ग्रंथ में भी वृष्टि विज्ञान विषयक कई श्लोक हैं। १७वीं सदी के इस संग्रह में पूर्व ग्रंथों के आधार पर द्वितीय से द्वादश अध्याय तक मयूरचित्रक

के विषयों को ही विस्तार दिया गया है। वराह के इस कथन का भद्रबाहुसंहिता के रचनाकार ने विस्तार दिया है कि जो दैव का जानकार पुरुष रात-दिन गर्भलक्षण में मन लगाकर सावधान चित्त से रहता है, उसके वाक्य मुनियों के समान मेघगणित में कभी मिथ्या नहीं होते-

दैवविदवहितचित्तो द्युनिशं यो गर्भलक्षणे भवति।

तस्य मुनिरेव वाणी न भवति मिथ्याम्बुनिर्देशे॥

(बृहत्संहिता २१, ३)

इस ग्रंथ के उक्त अध्यायों में राष्ट्रघातक उल्कापात, कृषिफलादेश, वैयक्तिक फलादेश, व्यापारिक फल, रोग एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी फलादेश, परिवेशों का साधारण फलादेश, वर्षा एवं कृषि विषयक फलादेश, सूर्य परिवेष, ऋतुओं के अनुसार विद्युत्त निमित्त का फल आदि विशेष उल्लेख्य हैं।

इसी प्रकार बल्लालसेन (११६८ ई.) ने 'अद्भुतसागर' में मयूरचित्र से श्लोक दिए हैं और परिवेश, इन्द्रधनुष, उल्का, विद्युत, वायु, मेघ, प्रवर्षण, अतिवृष्टि, कबन्ध, भूकम्प, जलाशयादि पर प्रकाश डाला है। कवि वसंतराज कृत 'वसंतराजशाकुनम्' में भी इस पर विचार किया गया है। इसमें काकालयफल के सन्दर्भ में कहा गया है कि वर्षफल का आश्रय लेकर वायस के घोंसला एवं अण्डाजनित शुभाशुभ शकुनों में उत्तम है। वैशाखमास में निरुपद्रव शुभवृक्ष पर काकनिलय शुभसूचक होता है जबकि निंद्य, शुष्क, सकंटक वृक्ष का नीड़ दुर्भिक्ष कारक होता है।

वसंतराज में स्पष्ट किया गया है कि प्राणधारी अन्न से संतुष्ट होते हैं, अन्न जल से होता है और जल मेघों से होता है जो कि वर्षा काल में आते हैं, मेघों का विचार पोदकी पक्षी से करें और फल जानना चाहिए-

प्राणंत्यमी प्राणभृतोऽशनेन तस्याम्बुना जन्म तदंबु मेघात्।

मेघो भवेत्प्रावृषि तेन तस्याः श्यामारुतेऽस्मिन्क्रियते विमर्शः॥

(वसंतराजशाकुन १६, ३२७)

सङ्ग्रहशिरोमणि में ग्रंथांतर से टिट्टिभाण्ड विचार देते हुए कहा गया है कि भू के उच्च प्रदेश में यदि टिट्टिभ अण्डा देता है, तो उत्तम, निम्न प्रदेश के अण्डे से थोड़ी वृष्टि होती है। नीचे मुखवाले अण्डों की जितनी संख्या होगी, उतने मास तक वर्षा होगी और ऊर्ध्व मुख अण्डों के बराबर मास तक अवर्षण होगा-

स्थितेषूच्चप्रदेशेषु टिट्टिभाण्डेषु चोत्तमा।

निम्नप्रदेशसंस्थेषु स्वल्पा वृष्टिः प्रजायते॥

वृष्टिः प्रजायते मासैरधोवक्राण्डसंख्यकैः।

वृष्टिर्नैव भवेन्मासैरूर्ध्ववक्राण्डसंख्यकैः॥

(प्रभा २३, ७०२-७०३)

टिटहरी के अण्डों के आधार पर वर्षा के विषय में कथन की परंपरा लोक जीवन के अनुभवों की उपज है जिसे निमित्तशास्त्रों में स्वीकारा गया है। इस प्रकार लोक के अनुभवों के आधार पर मयूरचित्रम् के विषयों का विकासक्रम निरंतर रहा है।

नारदीय मयूरचित्र-

महर्षि नारद ने वृष्टिविज्ञान विषयक स्वतन्त्र शास्त्र का प्रणयन किया है। नारद कथित वृष्टिशास्त्र को मयूरचित्रक नाम से जाना जाता है। नारद के नाम से ही इसे 'नारदीयमयूचित्र' या 'नारदोक्तमयूरचित्र' भी कहा जाता है। इसमें मूलतः केतुचार से लेकर वृष्टि, मासफल, संवत्सरफल तथा सद्योवृष्टिलक्षण आदि विषय मिलते हैं।

यों नारद का योगदान भक्ति सहित ज्ञान-विज्ञान की विभिन्न शाखाओं के पल्लवन की दिशा में अप्रतिम कहा जाता है, ऐसा जान पड़ता है कि नारदीय-स्कूल की परंपरा हमारे यहाँ पर विद्यमान रही है। यह ठीक वैसे ही थी जैसे कि शौनक, वशिष्ठ, विश्वामित्रादि की रही है। 'छान्दोग्योपनिषद' सातवें प्रपाठक में एक आख्यान मिलता है जिसमें नारद सनत्कुमार आदि ऋषियों के समीप ब्रह्मविद्या की जिज्ञासा लेकर पहुँचते हैं। सतत्कुमार आदि नारद मुनि से प्रश्न करते हैं कि वे अब तक कौन-कौन सी विद्याओं का अध्ययन कर चुके हैं ? इस पर नारद अपने अधीत विद्याओं में ज्ञानशाखाओं में वेद, इतिहासपुराण, पितृकर्म, गणित, भाग्यविज्ञान, निधि, तर्क, नीति, देव, पञ्चतत्त्व, धनुर्वेद, ज्योतिष, गन्धर्वादि विद्याओं का उल्लेख करते हैं-

स होवाचर्ग्वेदं भगवोऽध्यमेमि, यजुर्वेदं, सामवेदमाथर्वणं चतुर्थमितिहासपुराणं पञ्चमं वेदानां वेदं पित्र्यं राशिं दैवं निधिं वाकोवाक्यमेकायनं देवविद्यां भूतविद्यां क्षत्रविद्यां नक्षत्रविद्यां सर्पदेवजनविद्यामेतद्भगवोध्येमि॥ (छान्दोग्योपनिषद ७, १, ९)

विमर्श में सनत्कुमारादि ऋषि विज्ञान का माहात्म्य विवेचित करते हुए पञ्चतत्त्वों की परमसत्ता को प्रकट करते हैं। इसी क्रम में दशमखण्ड में जलविद्या को स्पष्ट करते

हुए कहते हैं-

आपो वान्नाद्भूयः। तस्माद्यदा सुवृष्टिर्न भवति, व्याधीयन्ते प्राणा अन्नं कनीयो भविष्यतीति। अथ यदा सुवृष्टिर्भवत्यानन्दिनः प्राणा भवन्त्यन्नं बहु भविष्यतीति। आप एवेमा मूर्ता येयं पृथिवी, यदन्तरिक्षं, यद् द्यौः, यत्पर्वताः यद् देवमनुष्याः, यत्पशवश्च वयाँसि च, तृणवनस्पतयः, श्वापदान्याकीटपतङ्गपिपीलकमाप एवेमा मूर्ताः। अप उपास्स्वेति॥

(तदैव १०, १)

अर्थात्- जल ही अन्न से अधिक है, जल से अन्न होता है। इस कारण जब सुवृष्टि नहीं होती तो प्राण दुःखित होते हैं कि अन्न थोड़ा होगा। जब अच्छी वर्षा होती है तो प्राण आनन्दित होते हैं कि अन्न बहुत होगा। जल ही पूर्व कथित मूर्तिमन्त पदार्थ है। जो यह पृथ्वी, अन्तरिक्ष, द्युलोक, पर्वत, देवमनुष्य, पशु-पक्षी, तृण-वनस्पति, हिंस्रजीव, कीट से पतङ्ग व चींटी तक, जल ही मूर्त है। जल ही इनमें मूर्तिमन्त है। इसलिए जलों को उपासित करना चाहिए।

इस प्रकार नारद का ज्योतिष के प्रति अध्ययन, अनुसंधान का बोध होता ही है, वृष्टिविज्ञान विषयक ज्ञान के प्रति उनके अध्ययनीय जागरण का भी पता चलता है। कदाचित इसी आख्यान से मयूरचित्रक विषय का आरम्भ जानना चाहिए क्योंकि इसी कथन का पल्लवन मयूरचित्रक में अवलोकित किया जा सकता है। नारद ने अपने अन्य अधीत ज्ञानों की पृष्ठभूमि पर संभवतः मयूरचित्रक विषय को विस्तार दिया, स्थापनाएँ और प्रतिष्ठाएँ प्रदान कीं।

वस्तुतः नारदीय परंपरा के अध्येताओं ने जिन शास्त्र-शाखाओं का अपने ढंग से प्रकीर्णन किया, उसका दिग्दर्शन नारदपुराण, बृहन्नारदीयपुराण, नारदसंहिता, बृहन्नारदसंहिता, नारदीय छन्द-प्रस्तारशास्त्र, नारदीयशिल्पादि में देखा जा सकता है। इस परंपरा के अन्य ग्रंथ भी हो सकते हैं। नारदपुराण में तो इस प्रकार के अनेक विषयों का समावेश है।

नारद के इस विषयक शास्त्र का सङ्केत वराहमिहिर ने दिया है और उसके टीकाकार उत्पल ने भी। केतुचार के सम्बन्ध में वराह ने सर्वप्रथम गर्ग, पराशर, असित, देवल आदि आचार्यों का स्मरण करते हुए नारद के सम्बन्ध में कहा है कि उनके अनुसार केवल एक ही केतु है जिसके अनेक रूप हैं-

शतमेकाधिकमेके सहस्रमपरे वदन्ति केतूनाम्। बहुरूपमेकमेव प्राह मुनिर्नारदः केतुम्॥ (बृहत्संहिता ११, ५)

नारद ने मयूरचित्रम् में यही कहा है- *एकोऽपि बहुधा भाति प्राहैतन्नारदोमुनिः। वक्ष्यामि च फलं तेषां यदुक्तं मुनि पुङ्गवैः॥* (१, ३)

इसी प्रकार उत्पल ने अपनी विवृत्ति में वराह के '*गार्गीयं शिखिचारं पाराशरमसित देवलकृतं च। अन्यांश्च बहून दृष्ट्वा क्रियतेऽयमनाकुलश्चारः*' के श्लोक की टीका करते हुए नारद का स्मरण किया है- *गार्गीय गर्गप्रोक्तम्। शिखिचारं केतुचारम्। तथा पाराशरं पराशरकृतम्। असितनामाचार्यस्तत्कृतम्। देवलकृतं देवलविरचितं च। एतान केतुचारान् दृष्ट्वा अवलोक्य। तथा अन्यानपि काश्यपऋषिपुत्रनारदवज्रादिविरचितान् बहून् प्रभूतान् दृष्ट्वा मया अयमनाकुलो निःसंदेहः केतुचारः क्रियते विरच्यत इति॥* (११, १)

इसके बाद उत्पल ने पाँचवें श्लोक की विवृत्ति करते हुए नारद का श्लोक भी उद्धृत किया है- *दिव्यान्तरिक्षगो भौम एकः केतुः प्रकीर्तितः। शुभाशुभफलं लोके ददात्यस्तमयोदयैः॥* (वही ५ पर उद्धृत)

किंतु मयूरचित्रम् के प्रस्तुत पाठ में यह श्लोक नहीं हैं और इसका आशय पहले व तीसरे श्लोक में निहित मिलता है। संभवतः यह नारद कृत किसी अन्य संहितादि से लिया गया है जिसमें ग्रहाचार के प्रसंग में यह मत दिया गया हो किंतु यह अवश्य है कि वराह के काल तक नादर का मत आदर पूर्वक प्रचलन में था।

नारद कृत मयूरचित्रम् ग्रंथ वृष्टिविज्ञान व संवत्सर कथन की दृष्टि से भारतीय ज्ञानरञ्जक ग्रंथों की कोटि में माना जाता है। इसमें कुल १६ अध्याय हैं-

१. केतुचार नामक प्रथम अध्याय

२. ग्रहयोगफल नामक द्वितीय अध्याय

३. चैत्रमासफल नामक तृतीय अध्याय

४. वैशाखमासफलवर्णन नामक चतुर्थ अध्याय

५. ज्येष्ठमासफल नामक पञ्चम अध्याय

६. आषाढ़मासफल नामक षष्ठअध्याय

७. श्रावणमासफल नामक सप्तम अध्याय

८. भाद्रपदमासफल नामक अष्टम अध्याय

९. आश्विनमासफल नामक नवम अध्याय

१०. कार्तिकमासफल नामक दशम अध्याय

११. मार्गशीर्षमासफल नामक एकादश अध्याय

१२. पौषमासफल नामक द्वादश अध्याय

१३. माघमासफल नामक त्रयोदश अध्याय

१४. फाल्गुनमासफल नामक चतुर्दश अध्याय

१५. सर्वमासफल नामक पञ्चदश अध्याय

१६. वृष्टिसूचकयोग नामक षोडश अध्याय

जैसा कि पूर्व में कहा गया है कि इस ग्रंथ का कई ग्रंथों में नामोल्लेख मिलता है और श्लोकों को भी उद्धृत किया गया है।

मयूरचित्र का प्रकाशन-

इस ग्रंथ के प्रकाशित पाठ के विषय में विद्वानों को विशेष जानकारी नहीं है। मयूरचित्रम् के नाम पर अधिकांश विद्वानों ने वराहमिहिर के मयूरचित्रकाध्याय को देखा है अथवा किसी पाण्डुलिपि का सहारा लिया है किंतु विडम्बना है कि इस ग्रंथ की अधिकांश पाण्डुलिपियाँ अव्वल तो खण्डित होती हैं अथवा त्रुटित।

मयूरचित्रम् का प्रकाशन सन् १८९४ ई. में आगरा से हुआ था। आगरा कॉलेज के मुख्य संस्कृत पण्डित केशवप्रसाद शर्मा ने आगरा वेलनगंज में बारहगादा स्थित अपने गोदाम में टीका कर इसे प्रकाशित करवाया था। इसका प्रकाशन गफूर बख्त कुतुबफरोश, आगरा के अधिकार में हुआ था। शिला मुद्रण विधि से मुद्रित कुल ७२ पृष्ठों के इस ग्रंथ के अन्त में पुष्पिका दी गई है- व्यामाव्ध्यंक निशाकरैस्स मुदिते वर्षे शुभै वैक्रमे मासे चास्य युजेसिते कुज दिने दुर्गातिथौ पुष्यभे। श्रीमच्चित्रमयूरणमहितो ग्रंथशिलायंत्रके श्रीमत्केशवशर्मणागलिपुरे मुद्रांकितां प्रापित: ॥ १ ॥ संवत् १९५१

उन्होंने इसकी भूमिका में लिखा था-

'प्रकट हो कि यह ग्रंथ बहुत अच्छा है, इसमें नारदमुनि ने बारहों महीने के फल ऐसे कहे हैं कि जिनसे प्रत्येक वस्तु के सस्ते और महंगे होने तथा वर्षा आदि का सब वृत्तान्त जाना जाता है जिससे सहज ही में मनुष्य सम्वतसर का हाल कह सके इसलिए मैंने इसके टीका बनाने और छापने का उद्योग कर कई पुस्तकें मंगवाई परंतु सब

अशुद्ध पाई, इसलिए इसके सुधारने और टीका बनाने में बहुत परिश्रम हुआ।'

इस पाठ में पृष्ठ ३ से लेकर ७२ तक अविकल मयूरचित्रम् का मूलपाठ एवं तत्कालीन भाषा में केवल भावानुवाद दिया गया है, कुछ स्थानों पर अर्थ नहीं किया गया। पाठ पुराना होने से सुपाठ्य नहीं रहा है किंतु यह महत्वपूर्ण इसलिए है कि पण्डित केशवप्रसाद द्विवेदी संस्कृत के विद्वान थे* और उन्होंने कई पाठों के आधार पर इसके श्लोकों का सम्पादन किया था। बनारस, उदयपुर आदि के पाठों में जो अंश खण्डित हैं, वे भी इसमें पूरे मिलते हैं। इसलिए इस पाठ का स्वतंत्र महत्व है। *(*मनुस्मृति के मुम्बई संस्करण में केशवप्रसाद द्विवेदी ने अपना परिचय दिया है- ब्रह्मावर्तात्प्रतीच्यां सुरतटिनितटे वर्त्तते राधनाख्यो ग्रामस्तस्मिन्हि जातो द्विजकुलतिलकः श्रीभवानीप्रसादः। तत्सूनुः श्रीद्विवेदी समजनि विदितो देवमण्याख्यया यस्तस्माज्जात-स्सबुद्धिः परमसुख इति ख्यातिमान् पण्डिताग्र्यः॥ तस्यात्मजः केशवपूर्वकोऽहं प्रसादनामा बहुधा प्रसिद्धः। अकारि येनेह मनुप्रणीतशास्त्रस्य टीका नृगिराऽगराख्ये॥)*

इस मूलपाठ सहित भावानुवाद का उस समय भी बहुत कम लोगों को पता चला क्योंकि शिलामुद्रण पर अधिक प्रतियाँ नहीं छापी जा सकी थीं किंतु एक पण्डित ने इसके प्रकाशन के पाँच वर्ष बाद ही, नवम्बर १८९९ ई. में मुम्बई से इसका प्रकाशन करवाया। मुम्बई पाठ में श्लोक नहीं रखे गए। अविकल हिंदी भावानुवाद सीसे के टाइपवाले प्रेस पर मुद्रित किया गया। इसमें संपादन की चूकें बहुत रहीं। ग्रंथ के मुखपृष्ठ पर छापा गया- भड्डरकृत मयूरचरित्र भाषा (जिसमें केतु के उदय का विचार और फल, तारों का उदय और फल, ग्रहण योग विचार और फल, उत्पात योग का फल बारहों महीने के वार और तिथियों का फल संवत्सर विचार और फल आदि अनेक विचार हैं) तथा अन्दर लिखा गया- अथ मयूरचरित्र भाषा, महर्षि नारदजीकृत। यह पाठ फरवरी १९०० ई. में प्रकाशित होकर जारी हुआ था। बाद में खेमराज श्रीकृष्णदास ने केवल संस्कृत पाठ का प्रकाशन भी किया, उनके सूचीपत्र में इसका उल्लेख है किंतु यह पाठ मुझे देखने को नहीं मिला।

उक्त पाठों को लोकप्रियता नहीं मिली और यह महत्वपूर्ण ग्रंथ अधिकारिक विद्वानों की पहुँच से दूर ही रहा और विद्वानों ने भारतीय वैज्ञानिक शास्त्रों का परिचय प्रस्तुत करते हुए इस ग्रंथ की पाण्डुलिपियों की ओर ही सङ्केत किया। यथा- संस्कृत एण्ड साइंस (डॉ. एसएस जानकी, चैन्नई), डेवलमेंट ऑफ ज्याग्राफिक् नॉलिज इन एंशियण्ट इण्डिया (मायाप्रसाद त्रिपाठी, इलाहाबाद) आदि।

प्रस्तुत पाठ में मयूरचित्रम् के उक्त दोनों ही पाठों का सहारा लिया गया है। श्लोक मूलतः, किञ्चित पाठ शोधन के साथ आगरावाले पाठ से दिए गए हैं जबकि पाठांतर के रूप में पाद टिप्पणियों में निम्न मातृकाओं का सन्दर्भ दिया गया है-

'क' मातृका- यह पाण्डुलिपि उदयपुर के प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान में उपलब्ध है और खण्डित है, इसमें लिपिकाल नहीं दिया गया है। १५.५×१३ आकार के पृष्ठों वाली इस मातृका में कुल १ से २९ तक पत्र हैं तथा प्रति पृष्ठ १६ पङ्क्तियाँ हैं और प्रति पङ्क्ति लगभग १६ अक्षर लिखे गए हैं।

'ख' मातृका- यह पाण्डुलिपि भी उदयपुर के प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान में विद्यमान हैं और पूरी है। इसमें भी लिपिकाल नहीं है। २५×११ आकार के पृष्ठों वाली इस मातृका में कुल २६ पत्र हैं तथा प्रति पृष्ठ १० पङ्क्तियाँ हैं और प्रति पङ्क्ति लगभग २८ अक्षर लिखे गए हैं।

'ग' मातृका- यह पाण्डुलिपि वाराणसी स्थित सरस्वती भवन पुस्तकालय में विद्यमान है और इसकी पञ्जियन संख्या ४३३३२ है। मैंने इसे देखा नहीं है किंतु रामदीन दैवज्ञकृत बृहद्दैवज्ञरञ्जनम् (संपादक- मुरलीधर चतुर्वेदी) तथा डॉ. धुनीराम त्रिपाठी कृत 'प्राच्य भारतीयम् ऋतुविज्ञानम्' में उद्धृत श्लोकों के आधार पर उद्धरण दिए हैं। डॉ. त्रिपाठी ने श्लोकों के पाठ के अशुद्ध होने का कई स्थानों पर उल्लेख किया है। बृहद्दैवज्ञरञ्जनम् के अनूदित पाठ में मयूरचित्र की ३४९१३ सङ्ख्या वाली पाण्डुलिपि का उल्लेख भी है। इसका उपयोग भी पाठ संपादन में 'ग' सङ्केताक्षर से ही किया गया है।

इस ग्रंथ पर समग्रतया अध्ययन होना शेष है। ऋतुविज्ञान के सन्दर्भ में इस पर शोधाध्ययन किया जा सकता है। मौसम के अध्येताओं के लिए इसके निष्कर्ष महत्वपूर्ण हो सकते हैं। कृषि, सस्य, पादपादि विज्ञानियों के लिए भी यह ग्रंथ उपादेय है। प्रयोगशालाओं में इसके निर्णयों, निर्देशों को परखा जाना चाहिए।

***

अध्यायानुक्रमणिका

१. केतुचारोनाम प्रथमोऽध्यायः

२. ग्रहाणां योगफलकथनम् द्वितीयोऽध्यायः

३. चैत्रादिमासफलकथनम् तृतीयोऽध्यायः

४. वैशाखमासफलवर्णनोनाम चतुर्थोऽध्यायः

५.ज्येष्ठमासफलकथनम् पञ्चमोऽध्यायः

६. आषाढमासफलकथनम् षष्ठोऽध्यायः

७. श्रावणमासफलकथनम् सप्तमोध्याय:

८. भाद्रपदमासफलकथनम् अष्टमोऽध्याय:

९. आश्विनमासफलकथनम् नवमोऽध्याय:

१०. कार्तिकमासफलकथनम् दशमोऽध्याय:

११. मार्गशीर्षफलकथनम् एकादशोऽध्यायः

१२. पौषमासफलकथनम् द्वादशोऽध्यायः

१३. माघमासफलकथनम् त्रयोदशोऽध्यायः

१४. फाल्गुनमासफलकथनम् चतुर्दशोऽध्यायः

१४. फाल्गुनमासफलकथनम् चतुर्दशोऽध्याय:

१५. सर्वमासफलम् नाम पञ्चदशोऽध्यायः

१६. ग्रहयोगफलमाह षोडशोऽध्यायः

श्री गणेशायनमः

नारदमुनिभाषितः

।। मयूरचित्रम् ।।

केतुचारोनाम प्रथमोऽध्यायः

अथ केत्वोदयास्तकथनं

उदयास्तमनं केतो गर्णितेन प्रकाश्यतम्।
इहोच्यतेफलं तस्य भेदाश्च मुनि भाषिताः ।। १ ।।

मुनि नारद मयूरचित्रक ग्रंथ का आरंभ करते हुए कहते हैं कि केतु का उदय और अस्त गणित से जाना जा सकता है। यहाँ केतु का फल कहा जा रहा है। केतु के विषय में मुनियों ने जो भेदादि कहे हैं, उनका भी फलाफलम् यहाँ कहा जाएगा।

त्रिविधोत्पातलक्षणमाह

येस्युः ख-दिव्य-भौमाश्च उत्पातास्त्रिविधायते।
एकोतरशतं प्रोक्ताः सहस्त्रमिति चापरे।। २ ।।

प्रकृति में होने वाले उत्पात तीन प्रकार के कहे गए हैं १. अन्तरिक्षोत्पात २. दिव्योत्पात तथा ३. भौमोत्पात। इन तीनों ही उत्पातों के एक सौ एक भेद कहे गए हैं किसी आचार्य ने सहस्त्रभेद तक बताए हैं।

निजसिद्धान्तमाह

एकोऽपि बहुधा भाति प्राहैतन्नारदोमुनिः।
वक्ष्यामि च फलं तेषां यदुक्तं मुनि पुङ्गवैः ।। ३ ।।

नारद मुनि ने कहा कि एक ही केतु अनेक भेदोपभेदों वाला होता है, उसके जो फल पूर्वकाल में मुनियों ने कहे हैं, उनका यहाँ पर वर्णन किया जाएगा।

(महर्षि गर्ग ने सहस्त्र केतु बताए हैं- अतीतोदयचारामशुभानां च दर्शने। आगन्तूनां

सहस्त्रं स्याद् ग्रहाणां तन्निबोध मे॥ बृहत्संहिता की भटोत्पलीयविवृत्ति ११, ५)

फलपाकनियमा:

यावन्त्यहानि दृश्यन्ते तावन्मासैः फलं भवेत्।

मासे मासे च विज्ञेयमित्यू चर्मुनयो परे॥ ४॥

यह सामान्य मत है कि आकाश में जितने दिन केतु का दर्शन होता है, उतने ही मास तक उसका फल जानना चाहिए अर्थात् केतु का एक दिन फल की दृष्टि से एक मास का जाने। अन्य मुनियों का मत है कि यह फल मास-मास ही जाने अर्थात् जिस माह में केत्वोदय हो, उस मास में उसका फल जानना चाहिए।

(वराह का भी यही मत है कि केतु जितने दिनों तक दिखाई देगा, उतने ही मास तक उसके फल का परिपाक होगा किंतु ४५ दिन के विलम्ब पर ही केतु का फल होना शुरू होता है- यावन्त्यहानि दृश्यो मासास्तावन्त एव फलपाक:। मासैरब्दांश्च वदेत्प्रथमात् पक्षत्रयात्परत:॥ तथैव ७; यहाँ उत्पल ने गर्ग के मत को उद्धृत किया है- यावन्त्यहानि दृश्य: स्यात्तावन्मासान् फलं भवेत्। मासांस्तु यावद् दृश्येत् तावतोऽबदांश्च वैकृतम्॥ त्रिपक्षात् परत: कर्म पच्यतेऽस्य शुभाशुभम्। सद्यस्कमुदिते केतौ फलं नेहाऽऽदिशेत् बुध:॥ तथैव)

लक्षणानुसारेणफलं

सुस्निग्धो-रुचिर सूक्ष्म-ऋजुः शुक्लः शुभ्रदः।

विपरीतो शुभः केतुस्त्रिशिखेन्द्र धनुप्रभः॥ ५॥

केतु के दर्शन के सम्बन्ध में कहा जा रहा है कि यदि केतु सुस्निग्ध, रुचिकर, सूक्ष्म, सीधा व स्पष्ट-श्वेतवर्ण युक्त दिखाई दे तो यह जाने कि वह शुभकारी है, इसके विपरीत लक्षण दिखाई देने पर अशुभकारी जानना चाहिए। त्रिशूल या तीन शिखाओं वाला दिखाई दे तो भी अशुभ जानना चाहिए।

(वराहमिहिर का श्लोक इसी का साधुपाठ है। तुलनीय है- ह्रस्वस्तनुः प्रसन्नः स्निग्ध स्त्वृजुरचिरसंस्थितः शुक्लः। उदितोऽथवाभिवृष्टः सुभिक्षसौख्यावहः केतुः॥ तथैव ११, ८)

पञ्चविंशतिः केतवो

मुक्ता-कनकशङ्काशाः पञ्चविंशति सङ्ख्यकाः।

प्राक् परस्याञ्च ते दृष्टाः सूर्यपुत्रा भयप्रदाः॥ ६॥

मुक्ता वर्ण, स्वर्ण जैसी कान्तिभा वाला सूर्यपुत्र केतु पच्चीस तारों वाला होता है, वह पूर्व अथवा पश्चिम में भी द्रष्टव्य हो तो भयकारक समझना चाहिए।

(वराहमिहिर का कथन है- हारमणिहेमरूपाः किरणाख्याः पञ्चविंशतिः सशिखाः। प्रागपरदिशोर्दृश्या नृपतिविरोधावहा रविजाः॥ तथैव १०; उत्पल ने गर्ग का मत दिया है- शुद्धस्फटिकसङ्काशमृणालरजतप्रभाः। मुक्ताहारसुवर्णाभाः सशिखाः पञ्चविंशतिः किरणाख्या रवेः पुत्रा दृश्यन्ते प्राग्दिशि स्थिताः। तथा चापरभागस्था नृपतेर्भयदाश्च ते॥ तथैव)

अथ वह्निपुत्रांस्तावताह

बहुवर्णाग्निसङ्काशाः पञ्चविंशति सङख्यकाः।

आग्नेय्यां दिशि संदृष्टा वह्निपुत्राभयप्रदाः॥ ७॥

अनेकानेक वर्ण वाला, अग्नि जैसी आभायुक्त और पच्चीस तारों वाला अग्निपुत्र केतु यदि आग्नेयकोण में अवलोकित हो तो भयकारी जानना चाहिए।

(वराह ने कहा है अग्निपुत्र केतु तोता, अग्नि, बन्धुजीवक, लाक्ष के वर्ण जैसे होते है और अग्निकोण में रहते हैं, ये अग्निभय को देते हैं- शुकदहनबन्धुजीवकलाक्षाक्ष तजोपमा हुताशसुताः। आग्नेय्यां दृश्यन्ते तावन्तस्तेऽपि शिखिभयदाः॥ तथैव ११; उत्पल ने यहाँ गर्ग का मत भी दिया है- नानावर्णाग्निसङ्काशा दीप्तिमन्तो विचूलिनः। सृजन्त्यग्निमि वाकाशात् सर्व ज्यौतिषनाशनाः॥ तेऽग्निपुत्रा ग्रहा ज्ञेया लोकेऽग्निभयवेदिनः। आग्नेय्यां दिशि दृश्यन्ते पञ्चविंशत्प्रकीर्तिताः॥ तथैव)

मृत्युसुतांस्तावत एवाऽऽह

याम्यांऽऽशा संस्थिताः कृष्णा ऋ(?रू)क्षा वक्रशिखाः।

तथा तावतो वै मृत्युसुताः प्रजाक्षयकराः स्मृताः॥ ८॥

जो पच्चीस तारे श्यामवर्ण वाले और टेढ़ी शिखाओं वाले हों, उन्हें यम के पुत्र

जानना चाहिए। यदि वे दक्षिण दिशा में दिखाई दें तो प्रजा क्षयकारी होते हैं।

(गर्ग का मत है- कृष्णा रूक्षा वक्रशिखा दृश्यन्ते याम्यदिक्स्थिताः। पञ्चविंशा मृत्युसुताः प्रजाक्षयकराः स्मृताः॥ तथैव १२; यही मत वराहमिहिर का है- वक्रशिखा मृत्युसुता रूक्षाः कृष्णाश्च तेऽपि तावन्तः। दृश्यन्ते याम्यायां जनमरकावेदिनस्ते च॥ तथैव)

धरापुत्राद्वाविंशतिस्तानाह

वृत्ताकाराश्च विशाखा जलतैल समप्रभाः।

द्वाविंशद्भूमितनया दुर्भिक्षायेशग्गिताः॥ ९॥

जल में मिले तेल जैसी आभा वाले गोलाकार बाईस तारे पृथ्वी के पुत्र कहे गए हैं, वे यदि ईशान कोण में दिखाई दें तो अकाल जन्य पीड़ा को देने वाले होते हैं।

(वराह का कथन है- दर्पणवृत्ताकारा विशिखाः किरणान्विता धरातनयाः। क्षुद्भयदा द्वाविंशतिरैशान्यामम्बुतैलनिभाः॥ तथैव १३; गर्ग का मत भी यही है- समस्तवृत्ता विशिखा रश्मिभिः परिवारिताः। अम्बुतैलप्रतीकाशा द्वाविंशद् भूसुताः स्मृताः॥ ऐशान्यां दिशि दृश्यन्ते दुर्भिक्षभयदास्तु ते॥ तथैव)

अथ शशिसुतास्त्रयस्तानाह

हिमरश्मि हिरण्याभास्त्रयश्चन्द्रसुता स्मृताः।

उत्तरस्याङ्गता दृष्टास्तदा शुभ फलप्रदाः॥ १०॥

हिमरश्मि या चन्द्रमा या स्वर्ण जैसी कान्ति वाले, तीन तारे चंद्रमा के पुत्र कहे गए हैं। वे यदि उत्तर दिशा में दिखाई देते हैं तो शुभफल को देने वाले होते हैं।

(यहाँ गर्ग का मत तुलनीय है- चंद्ररश्मिसवर्णाभा हिमकुन्देन्दुसप्रभाः। त्रयस्ते शशिनः पुत्राः सौम्याशास्थाः शुभावहाः॥ तथैव १४; वराह का भी यही मत है- शशिकिरण रजतहिमकुमुदकुन्दकुसुमोपमाः सुताः शशिनः। उत्तरतो दृश्यन्ते त्रयः सुभिक्षावहाः शिखिनः॥ तथैव)

अथ ब्रह्मदण्डाख्यः

क्रूरस्त्रिवर्णस्त्रिशिखः क्रूरो ब्रह्मसुत स्मृतः।

सर्वास्वाशासु संदृष्टो ब्रह्मदण्डः(डंडः ?) क्षयावहः ॥ ११ ॥

क्रूर, तीन वर्णवाला, तीन शिखाओं वाला तारा ब्रह्मा का पुत्र कहा गया है, वह किसी भी दिशा में दिखाई दे तो ब्रह्मदण्ड स्वरूप क्षय करने वाला होता है।

(गर्ग का मत तुलनीय है- एको ब्रह्मसुतः क्रूरस्त्रिवर्णस्त्रिशिखान्वितः। सर्वास्वाशासु दृश्यः स्याद् ब्रह्मदण्डः क्षयावहः ॥ तथैव १५; वराह का मत भी यही है- ब्रह्मसुत एक एव त्रिशिखो वर्णैस्त्रिभिर्युगान्तकरः। अनियदिक्प्रभवो विज्ञेयो ब्रह्मदण्डाख्यः ॥ तथैव)

चतुरशीतिशुक्रपुत्राश्च

विसर्पाख्याः शुक्रासुता सुस्निग्धा श्वेततारकाः।

चतुराशीति सङ्ख्याकाः पुरो दृष्टाः भयप्रदाः ॥ १२ ॥

विसर्प नाम से विख्यात और सुस्निग्ध एवं श्वेत तारे संख्या में चौरासी होते हैं। वे शुक्र के पुत्र हैं और पूर्व दिशा में दिखाई देने पर भय को देने वाले होते हैं।

(गर्ग के मत को उत्पल ने उद्धृत किया है- स्थूलैकतारकाः श्वेताः स्नेहवन्तश्च सप्रभाः। आर्चिष्मन्तः प्रसन्नाश्च तीव्रेण वपुषान्विताः ॥ एते विसर्पका नाम शुक्रपुत्राः पुरोदयाः। अशीतिश्चतुरश्चैव लोकाक्षयकराः स्मृताः ॥ तथैव १७)

षष्टिः मंदेपुत्रास्तानाह

सुस्निग्धा द्विशिखाश्चैव षष्टिश्च कनकाह्वयाः।

शनैश्चरसुता घोराः केतवः श्वेत तारकाः ॥ १३ ॥

सुस्निग्ध दिखाई देने वाले, द्विशिखा या दो चोटीवाले केतु के साठ तारे कनक नाम वाले हैं और शनि के पुत्र कहे जाते हैं और घोरा होते हैं। उनका वर्ण श्वेत हैं।

(गर्गोक्ति तुलनीय है- सुस्निग्धा रश्मिसंयुक्ताः द्विशिखाः ससतारकाः। षष्टिस्ते कनका घोराः शनैश्चरसुता ग्रहाः ॥ तथैव १८)

अथ पञ्चषष्टिः गुरुसुतास्तानाह

एकतारा मह(ा)स्वत्मा श्वेत तारा महाप्रभाः।

द्विशाखाश्च गुरोः पुत्रा प्रायशो दक्षिणाश्रयाः।

नामतोवि(ध ?)कचा घोराः षष्टीपञ्चाधिकाः स्मृता ॥ १४ ॥

ऐसे तारे जिनमें कि एक बहुत छोटा है, शेष सब वृहत् या बहुत प्रभा देने वाले हैं। इनकी संख्या पैंसठ होती है और इनका नामाभिधान अधिकच कहा गया है। इनको वृहस्पति के पुत्र माना गया है। इनका वर्ण श्वेत हैं, ये दक्षिण में दिखाई दें तो भय को देने वाले जानना चाहिए।

(गर्ग का मत है- शुक्लाः स्निग्धाः प्रसन्नाश्च महारूपाः प्रभान्विताः। एकताराः वपुष्मन्तो विशिखा रश्मिभिर्वृताः ॥ एते बृहस्पतेः पुत्राः प्रायशो दक्षिणाश्रयाः। नामतो विकचा घोराः पञ्चषष्टिर्भयावहाः ॥ तथैव १९)

पञ्चाशद बुधात्मजास्तानाह

सौमपुत्रास्तार(?-तस्करा)काख्याः सर्वदिक् प्रभवाश्च ते।

नाति व्यक्ताश्च रूक्षाश्च श्वेतरूपा भयावहाः।

एकाधिकाश्च पञ्चाशत्केतवः परिकीर्तिताः ॥ १५ ॥

सोमपुत्र या बुधपुत्र तारक संज्ञक तारों की संख्या ५० होती है। वे सभी दिशाओं में उदित व प्रभावकारी कहे गए हैं किंतु अधिक व्यक्त नहीं होते हैं। रुक्ष, श्वेतवर्ण वे तारे भय को देने वाले हैं।

(इस श्लोक प्रकाशित पाठ में अर्थ इस प्रकार दिया गया है- मेद प्रकाश, रूखे, श्वेतवर्ण तारक नाम इक्यावन तारे बुध के पुत्र हैं, ये दक्षिण दिशा में दिखें तो भयकारी जानिये। गर्ग के मत भी इनकी सङ्ख्या पचास कही गई है- अरुन्धतिसमा रूक्षाः केचिदव्यक्ततारकाः। सपाण्डुवर्णाः श्वेताभाः सूक्ष्मा रश्मिभिरावृत्ताः ॥ ऐते बुधात्मजा ज्ञेयास्तस्कराख्या भयावहाः। एकाधिकास्ते पञ्चाशदथोत्पथचरा ग्रहाः ॥ तथैव २०)

अथ षष्टिकुजात्मजास्तानाह

षष्टीः कुजात्मजा रक्ता कौङ्कुमाः सौम्यदिग्गजाः।

त्रिशिखाश्च त्रिताराश्च महापाप फलप्रदाः ॥ १६ ॥

कुज या मङ्गल के पुत्र कहे गए तारों की संख्या ६० हैं। वे तीन शिखाओं वाले, रक्त तथा कुमकुम या केसर वर्णवाले हैं। वे एक-एक तारे के तीन-तीन दिखाई देते हैं। ये तारे यदि सौम्य अथवा उत्तर दिशा में दिखाई दें तो महापाप को उत्पन्न करने वाले

सिद्ध होते हैं।

(गर्ग का मत है- त्रिशिखाश्च त्रिताराश्च रक्ता लोहितरश्मयः। प्रायशश्चोत्तरामाशां सेवन्ते नित्यमेव ते॥ लोहिताङ्गत्मजा ज्ञेया ग्रहाः षष्टिः समासतः॥ नामन्तः कौङ्कुमा ज्ञेया राज्ञां सङ्ग्रामकारकाः॥ तथैव २१)

त्रयस्त्रिंशद्राहुपुत्रास्तानाह

राहुपुत्रास्त्रयस्त्रिंश ख्यातास्तामस की(ि ?)लकाः।

चन्द्रार्कमण्डल स्थिते लोकानां कष्टदायकाः॥ १७॥

राहु के पुत्र ३३ तारे तामस कीलक नाम से प्रसिद्ध हैं। उनकी स्थिति चन्द्र और सूर्य मण्डल में कही गई है। यदि तामस कीलक दिखाई दें तो लोक समुदाय को कष्ट देने वाले होते हैं।

(उत्पल ने यहाँ गर्ग सहित पराशर की उक्तियों को भी उद्धृत किया है। पराशर के अनुसार- अर्पण्येव दृश्यन्ते ह्यङ्गिरः काककीलकाः। रवेरेवाङ्गिरा मध्ये ह्युभयोः काककीलकौ॥ अङ्गिराः सरथो धन्वी दृश्यते पुरुषाकृतिः काकः कालाकृतिर्घोरस्त्रिकोणो वापि लक्ष्यते। मण्डलं कीलके मध्ये मण्डलस्यासितो ग्रहः। महानृपविरोधाय यस्यर्क्षे तस्य मृत्यवे॥ तथैव २२; इसी प्रकार गर्ग का मत है- कृष्णाभाः कृष्णपर्यन्ताः सङ्कुलाः कृष्णरश्मयः राहुपुत्रास्त्रयत्रिंशत् कीलकाश्चातिदारुणाः॥ रविमण्डलगाश्चैते दृश्यन्ते चंद्रगास्तथा॥ तथैव; वराह ने स्पष्ट किया है- त्रिंशत्यधिका राहोस्ते तामसकीलका इति ख्याताः रविशशिगा दृश्यन्ते तेषां फलमर्कचारोक्तम्॥ तथैव)

विंशोत्तरशतमग्निपुत्राणां

नाना वर्णाग्निपुत्राश्च किरन्ताग्नि द्विचूडिनः(? विचूलिनः)।

विंशोत्तरशतं विश्वरूपा वह्निभयप्रदाः॥ १८॥

अग्निपुत्र तारों का नाम विश्वरूप कहा गया है, उनकी संख्या १२० हैं। उनके दो-दो शिखाएँ हैं और अनेक वर्ण होते हैं। उनको अग्निवर्षा करने वाला जानना चाहिए। वे दिखाई देने पर अग्निभय को उत्पन्न करने वाले होते हैं।

(गर्ग की उक्ति है- नानावर्णा हुताशाभा दीतिमन्तो विचूलिनः। सृजन्त्यग्निवाकाशे सर्वे ज्योतिर्विनाशनाः॥ तेऽग्निपुत्रा ग्रहा ज्ञेया लोकेऽग्निभयवेदिनः। विंश ग्रहशतं घोरं

विश्वरूपेति नामतः ॥ तथैव २३)

सप्त सप्ततिर्वायुसुतास्तानाह

अरुणाख्या वायुपुत्राः वर्णतः श्याम-लोहिताः।

वितराश्चामर प्रख्या भयदाः सप्त सप्ततिः ॥ १९ ॥

अरुण नामक ७७ तारों को वायु का पुत्र कहा गया है। चामर या चँवर के आकार वाले इन तारों का वर्ण लाल और काला होता है, इनके दिखाई देने पर प्रजाजन को भय होता है।

(वराह की उक्ति है- श्यामारुणा वितराश्चामररूपा विकीर्णदीधितयः। अरुणाख्या वायोः सप्तसप्ततिः पापदाः परुषाः ॥ तथैव २४; गर्ग की उक्ति है- अताररूपप्रतिमा धूमरक्तसवर्णिनः। वातरूपा इवाभान्ति शुष्कविस्तीर्णरश्मयः ॥ सप्तति सप्त चैवान्ये वायुपुत्रान् प्रचक्षते। लोकविध्वंसना रूक्षा नामतस्त्वरुणा ग्रहाः ॥ तथैव)

अथाष्टौ प्रजापतिपुत्रास्तानाह

प्रजापतिसुताश्चाष्टौ तारामण्डल वर्तितः।

तारापुञ्ज प्रतीकाशा गणका भयदायिनः ॥ २० ॥

तारामण्डल में विचरण करने वाले और तारापुञ्ज के सदृश्य ही दिखाई देने वाले गणक संज्ञक आठ तारे प्रजापति के पुत्र कहे गए हैं। ये भी भयदायक होते हैं।

(गर्ग का मत है- तारापुञ्जप्रतीकाशास्तारामण्डलसंस्थिताः। प्राजापत्या ग्रहास्त्वष्टौ गणका भयवेदिनः ॥ तथैव २५)

द्वेशतेचतुराधिके ब्रह्मणः सुतास्तानाह

द्वे शते चैव चत्वारः सशि(सि ?)खाः श्वेतरश(स्?)मयः।

चतुरस्त्रा ब्रह्मपुत्रा महाभय करा मताः ॥ २१ ॥

श्वेत किरणों वाले २०४ तारों को ब्रह्मा का पुत्र कहा गया है। वे चतुरस्त्र या चौकोर दिखाई देते हैं और सशिखा हैं। ये ब्रह्मसुत तारे भयोत्पादक कहे गए हैं।

(गर्ग का मत है कि ये तारे तीन या चार शिखाओं वाले हैं- त्र्यस्त्रा वा चतुरस्त्रा

वा सशिखाः श्वेतरश्मयः । द्वे शते चतुरश्चैव ब्रह्मजा भयदाश्च ते ॥ तथैव २५; वराह का मत है- द्वे च शते चतुरधिके चतुरस्त्रा ब्रह्मसन्तानाः ॥ तथैव)

तथा च द्वात्रिंशद्वरुणपुत्रानाह

वंशगुल्मसमा प्रोक्ताः द्वाविंशद्व(द ?)रुणात्मजाः ।

शशिप्रभाश्च काकाख्याः केतवः कष्टदा मताः ॥ २२ ॥

बाँसों के पुञ्ज के समान, संख्या में २२ तारे काक संज्ञक होते हैं। चंद्रमा की कांति के समान दिखाई देने वाले ये तारे वरुण के पुत्र हैं और कष्टकारी कहे गए हैं।

(वराह ने इनको कङ्कसंज्ञक कहा है और सभी दिशाओं में उदित होने वाला बताया है- कङ्का नाम वरुणजा द्वात्रिंशद्वंशगुल्मसंस्थानाः । शशिवत्प्रभासमेतास्तीव्रफलाः केतवः प्रोक्ताः ॥ तथैव २६; गर्ग की उक्ति है- वंशगुल्मप्रतीकाशा महान्तः पूर्णरश्मयः । काकतुण्डनिभैश्चापि रश्मिभिः केचिदावृताः ॥ मयूखानुत्सृजन्तीव सुस्निग्धाः सौम्यदर्शनाः । एते कष्टफलाः प्रोक्ता द्वात्रिंशद्वारुणा ग्रहाः ॥ तथैव)

कालपुत्राषण्णवतिनाह

कालपुत्राः कबंधाख्याः कबंध सदृशारुणाः ।

षण्णवतिश्च भयदा हिमरश्मि समप्रभाः ॥ २३ ॥

कबन्ध संज्ञा वाले और बिना ही सिर के दिखाई देने वाले ९६ तारों को कालपुत्र केतु कहा गया है। वे लाल, श्वेत या चंद्रमा के जैसे वर्ण वाले होते हैं और भयदायक कहे गए हैं।

(गर्ग की उक्ति है- तारापुञ्जविरूपाश्च कबन्धाकृतिसंस्थिताः । पीतारुणसवर्णाश्च भस्मकर्पूररश्मयः ॥ कालपुत्राः कबन्धाश्च नवतिः षट् च ते स्मृताः । लोके मृत्युकरा घोराः पुण्ड्राणामभयप्रदाः ॥ तथैव २७)

अथ नव विदिक्पुत्राः

विदिक् पुत्रास्त्वेक तारा विदिक्षु च समाश्रिताः ।

नवसङ्ख्याश्च विपुला महाभय निवेदनाः ॥ २४ ॥

वृहदाकार नौ तारे विदिशा के पुत्र कहे गए हैं, विदिशाओं में ही उनका विचरण

होता है। वे महाभय को करने वाले होते हैं।

(गर्ग का कथन है कि वे शुक्लतारा होते हैं- शुक्लैकतारा विपुला विदिक्पुत्रा नव ग्रहाः। विदिक्षु संस्थितास्ते च दृश्यन्ते भयदायकाः॥ तथैव २८)

उदगायतो महास्थूलकेतव

उत्तरस्यां महास्थूलो निर्म्मलश्चा परोदयी।

दृष्टः करोति मरणं पश्चादन्न समृद्धि कृत्॥ २५॥

इससे पूर्व सहस्रकेतु का वर्णन किया गया है, अब विशेष वर्णन किया जा रहा है। उत्तर दिशा में दिखाई देने वाला महास्थूलाकार, निर्मल कान्तिवाला तारा पहले तो मृत्युकारक सिद्ध होता है, बाद में धान्य की समृद्धि करता है।

(वराह ने इस केतु का नाम वसाकेतु कहा है, यह उत्तर की ओर विस्तृत, स्थूल व निर्मल तथा पश्चिम दिशा में उदित होता है, यह पहले तो मरण व बाद में सुभिक्ष करता है- उदगायतो महान् स्निग्धमूर्तिरपरोदयी वसाकेतुः। सद्यः करोति मरकं सुभिक्ष-मप्युत्तमम् कुरुते॥ तथैव २९)

अस्थिकेतोः शस्त्राख्यस्य

अस्थिकेतुः श्वेतचिह्नः कर्कशः क्षुद्रयावहः।

दृष्टः प्राच्यां शस्त्राख्यस्तादृका स्निग्धश्च पापदः॥ २६॥

पूर्व दिशा में अस्थिकेतु, कठोर दिखाई देने वाला श्वेतचिह्न तारा क्षुधाधारित भय या भुखमरी को बढ़ाता है। यदि वह सुस्निग्ध दिखाई दे तो पाप, अत्याचार का संवर्द्धन करता है। उसकी संज्ञा शस्त्र है।

(वराह का मत है- तल्लक्षणोऽस्थिकेतुः स तु रूक्षः क्षुद्भयावहः प्रोक्तः। स्निग्धस्ता-दृक् प्राच्यां शस्त्राख्यो डमरमरकाय॥ तथैव ३०)

कपालकेतोर्लक्षणमाह

कपालाख्यो धूम्रशिखो दृष्टः सर्वजलापहः।

प्राग्व्योमार्द्ध विहारीस्या तथा क्षुन्मृत्युकारकः॥ २७॥

कपाल नाम का केतु तारा धूएँ जैसी पूंछ वाला होता है। वह पूर्व दिशा में अर्द्ध आकाश तक विस्तारित दिखाई देता है। यह जल का विनाशकारक और अकाल जन्य मृत्यु का कारक होता है।

(प्रकाशित पाठ में इस श्लोक पर २८वाँ अंक लगा हुआ है। वराह की उक्ति है- दृश्योऽमावास्यायां कपालकेतुः सधूम्ररश्मिशिखः। प्राङ्नभसोऽर्द्धविचारी क्षुन्मरकावृष्टि रोगकरः॥ तथैव ३१; उत्पल ने पराशर का मत भी दिया है- अथादित्यजानां कपालकेतु- रुदयतेऽमावस्यायां पूर्वस्यां दिशि सधूम्रार्चिशिखो नभसोर्द्धचरो दृश्यते। पञ्चविंशवर्षशतं प्रोष्य त्रींश्च पक्षानमृतजस्य कुमुदकेतोश्चारान्ते स दृष्ट एव दुर्भिक्षानावृष्टिव्याधि-भयमरणोपद्रवान् सृजति। जगति यावतो दिवसान् दृश्यते तावन्मासान् मासैर्वत्सरान् पञ्चप्रस्थं च शारदधान्यार्ध कृत्वा प्रजानामपयुङ्क्ते॥ तथैव)

तथा च रौद्रकेतुमाह

प्रागग्निमार्गः स्थूलाग्रो दृष्टस्यादरुणप्रभः।

व्योम त्रिभागगामी च रौद्रः क्षुद्भयकारकः॥ २९॥

पूर्व से आग्नेय दिशा तक व्याप्त, आगे के भाग में स्थूल एक तारा आकाश के एक तिहाई भाग को रोक लेता है। यह रक्तवर्ण वाला और भयानक दिखाई देता है। इसके उदित होने का फल भय कहा गया है।

(वराह ने इसे रुक्ष व ताम्र के समान किरण वाला कहा है, यह तीन भाग तक गमन करता है व कपालकेतु की तरह ही फल देता है- प्राग्वैश्वानरमार्गे शूलाग्रः श्यावरुक्षताम्रार्चिः। नभसस्त्रिभागगामी रौद्र इति कपालतुल्यफलः॥ तथैव ३२)

अथ चलकेतोर्लक्षणमाह

पश्चिमाशा स्थितो यस्तच्छिखा याम्याग्र संस्थिता।

यथा यथोदयं गच्छो तथा दैर्घ्यं प्रयात्यसौ॥ ३०॥

एक ऐसा तारा जो पश्चिम दिशा में स्थित है और उसकी शिखा दक्षिण में स्थित दिखाई देती है। वह जैसे ही उदय होता है, उसकी शिखा का दैर्घ्य विस्तारित होता ही चला जाता है।

संस्पृशन्वैमुनीन्सप्त ध्रुवं चाभिजितत्तथा।

व्यौमार्द्ध मात्रभित्वा वै याम्येनास्तं प्रयाति च॥ ३१॥

उक्त तारा सप्तऋर्षियों, ध्रुव व अभिजित् तक को स्पर्श करने लगता है। इस प्रकार वह आधे आकाश तक व्याप्त हो जाता है। दक्षिण दिशा में उस तारे का अवसान होता है।

अथ चलकेतोफलं

आप्रयागादवन्ती च पुष्करारण्य मेव च।

मध्यदेशमुदग्भागं देवकाख्यं तथैव च॥ ३२॥

उक्त तारा प्रयाग, अवन्ति व पुष्कर आरण्यक तक के मध्यदेश की दिशाओं और देविका नामक नदी तट के (प्रदेशों का नाश करने वाला कहा गया है)।

धवलाख्यौ निहन्त्याशु केतुर्दुःख भयप्रदः।

देशेष्वेऽन्येषु दुर्भिक्षं दश मासावधि स्मृतम्॥ ३३॥

वह तारा धवल नाम से प्रसिद्ध है तथा दु:ख एवं भय को प्रदान करने वाला होता है। इस तारे के उदय या दिखाई देने पर उक्त सीमांतर्गत समस्त देशों में दस मास की अवधि तक दुर्भिक्ष होता है।

(वराह का भी यही मत है- अपरस्यां चलकेतुः शिखया याम्याग्रयाङ्गुलोच्छ्रितया। गच्छेद्यथा यथोदक् तथा तथा दैर्घ्यमायाति॥ सप्तमुनीन् संश्यपृश्य ध्रुवमजितमेव च प्रतिनिवृत्तः। नभसोऽर्द्धमात्रमित्वा याम्येनास्तं समुपयाति॥ हन्यात् प्रयागाकूलाद्यावन्तीं च पुष्करारण्यम्। उदगपि च देविकामपि भूयिष्ठं मध्यदेशाख्यम्॥ अन्यानपि च स देशान् क्वचिद्धन्ति रोगदुर्भिक्षैः। दश मासान् फलपाकोऽस्य कैश्चिदष्टादश प्रोक्तः॥ तथैव ३३-३६; महर्षि गर्ग ने कहा है- क्षुच्छस्त्रकरकव्याधिभयैः सम्पीडयेत् प्रजाः। मासान् दश तथाष्टौ च चलकेतुः सुदारुणः॥ तथैव)

तथा च रश्मिकेतुर्लक्षणं

धूम्राकारा शिखा यस्य कृतिकायां समाश्रिताः।

दृश्यते रश्मिकेतुः स्यात्सप्ताहानि शुभप्रदः॥ ३४॥

धूएँ जैसी शिखा वाला रश्मिकेतु संज्ञक तारा यदि सात दिवस पर्यंत कृतिका नक्षत्र से लगा हुआ दिखाई दे तो शुभ फल का देने वाला होता है।

(वराहाचार्य का कथन है कि यह केतु श्वेतकेतु के समान फल देता है- आधूम्रया तु शिखया दर्शनमायाति कृतिकासंस्थः। ज्ञेयः स रश्मिकेतुः श्वेतसमानं फलं धत्ते॥ तथैव ४०; श्वेतकेतु का लक्षण व फल इस प्रकार बताया गया है- श्वेत इति जटाकारो रूक्षः श्यावो वियत्त्रिभागगतः। विनिवर्त्ततेऽपसव्यं त्रिभागंशेषाः प्रजाः कुरुते॥ तथैव ३९)

त्रयोदशर्क्षे याम्यादौ दृष्टो धूम्राह्वयशश्शी।

महाभयकरः प्रोक्तो ज्येष्ठायां वासमाश्रितः॥ ३५॥

यदि रश्मिकेतु संज्ञक तारे की शिखा हस्त, भरणी अथवा ज्येष्ठा नक्षत्र से संयुक्त हो तो वह तारा महाभयकारी सिद्ध होता है।

सप्ताहाभ्याधिको दृष्टो दशवर्षाणि दुःखदः।॥ ३६॥

इसी प्रकार यदि उक्त रश्मिकेतु तारा सात दिन से अधिक अवधि तक दिखाई दे तो दस वर्ष तक कष्टकारी समझना चाहिए।

तथा च ध्रुवकेतोर्लक्षणमाह

ग्रह-पर्वत-वृक्षेषु सेना-गो-पुष्करेषु च।

दिव्यान्तरिक्षाभौमाख्योधूम्र(?-ध्रुव)केतुः प्रदृश्यते।

यदा तद्वा विनाशाय प्राणिनां भवति ध्रुवम्॥ ३७॥

दिव्य, अन्तरिक्ष, भौम भेदों से तीन प्रकार का ध्रुव केतु तारा यदि ग्रहों, आकाशस्थ, पृथ्वी, पर्वत, वृक्ष, गोशाला, पुष्करणियों में दिखाई दें तो उक्त स्थलों सहित प्राणियों का विनाश करता है अर्थात् वह किसी भी प्रकार की रचना में दिखाई देना जन हानिकारक कहा गया है।

(वराह ने इसके विपरीत फल कहा है कि अनिश्चित गमन, प्रमाण, वर्ण तथा आकृति वाला, सभी दिशाओं में दृष्टिगोचर होने वाला, दिव्य, अन्तरिक्ष व भौम भेद से तीन प्रकार का होने वाला निर्मल तथा शुभफल देने वाला है- ध्रुवकेतुरनियतगति प्रमाणवर्णाकृतिर्भवति विष्वक्। दिव्यान्तरिक्षभौमो भवत्ययं स्निग्ध इष्टफलः॥ सेनाङ्ग

नृपाणां गृहतरुशैलेषु चापि देशानाम्। गृहिणामुपस्करेषु च विनाशिनां दर्शनं याति॥ तथैव ४१-४२)

अथ मणिकेतुर्लक्षणं

सक्क(? सकृदेक)यामैक दृष्टश्च मण्याख्या: सूक्ष्मतारक:।

शिखास्य सूक्ष्मा ऋज्वी च पञ्च मासान्सुभिक्षकृत्॥ ३८॥

मणि संज्ञक एक लघु तारा सीधी एवं सूक्ष्म शिखा वाला होता है। यदि वह एक बार में एक प्रहर के लिए दिखाई देता है तो पाँच माह तक सुभिक्ष का कर्ता होता है।

(वराह ने मणिकेतु का फल साढ़े चार माह तक सुभिक्ष तथा नेवला आदि जीवों की उत्पत्ति बताया है- सकृदेकयामदृश्य: सुसूक्ष्मतारोऽपरेण मणिकेतु:। ऋज्वी शिखास्य शुक्ला स्तनोद्गता क्षीरधारेव॥ उदयन्नैव सुभिक्षं चतुरो मासान् करोत्यसौ सार्द्धान्। प्रादुर्भावं प्राय: करोति च क्षुद्रजन्तूनाम्॥ तथैव ४४-४५)

अथ जलकेतुर्लक्षणं

जलकेतुर्महास्निग्धा शिखा यस्या परोन्नता।

दृष्ट: करोति शान्ति च नव मासान्सुभिक्षकृत्॥ ३९॥

जलकेतु संज्ञक तारा बड़ा ही स्निग्ध दिखाई देता है। इसकी शिखा पश्चिम दिशा में ऊँची दिखाई देती है। जहाँ यह दिखाई देता है, वहाँ पर नौ मास तक सुभिक्ष का वातावरण होता है।

(भट्टोत्पल ने यहाँ पराशर का मत उद्धृत किया है- अथ जलकेतु: पैतामहजस्य चलकेतोर्नवमासावशिष्टे कर्मणि कृतं प्रवर्तयति। पश्चिमेनोदित: स्निग्ध: सुजातोऽनुपश्चिमा भिनतशिख:। स च नव मासान् क्षेमसुभिक्षारोग्याणि प्रजाभ्यो धत्ते। अन्यग्रहकृतानां चाशुभानां व्याघातायेति॥ तथैव ४६; वराहाचार्य का मत है- जलकेतुरपि च पश्चात् स्निग्ध: शिखयारेण चोन्नतया। नव मासान् स सुभिक्षं करोति शान्तिं च लोकस्य॥ तथैव)

अथ भवकेतोर्लक्षमाह

भवेत्केतोश्च सुस्निग्धा हरिपुच्छोपमा शिखा।

सूक्ष्मेकतारा प्राग् दृष्टा लोकानां शुभदा मता:॥ ४०॥

सिंह की पूंछ जैसी शिखा वाला लघु, सुस्निग्ध दिखाई देने वाला भवकेतु तारा लोक समुदाय के लिए शुभदायक होता है।

(वराह ने कहा है कि भवकेतु पूर्व दिशा में केवल एक रात्रि तक दिखाई देता है, यह सूक्ष्मतारा से युत व दक्षिणावर्त शिखा वाला होता है। यह निर्मलमूर्ति का होकर जितने क्षण दिखाई देता है, उतने मास तक सुभिक्ष करता है और रूक्षमूर्ति का होकर जितने समय दिखाई देता है, उतने ही महीनों तक प्राणन्तिक रोग उत्पन्न करता है- भवकेतुरेकरात्रं दृश्यः प्राक् सूक्ष्मतारकः स्निग्धः। हरिलाङ्गूलोपमया प्रदक्षिणावर्तया शिखया॥ यावत एव मुहूर्तान् दर्शनमायाति निर्दिशेन्मासान्। तावदतुलं सुभिक्षं रूक्षे प्राणान्तिकान् रोगान्॥ तथैव ४७-४८)

अथ पद्मकेतव

पद्मकेतुर्मृणालाभः पश्चिमायां प्रदृश्यते।
निश(ा)मेकां तदा सप्तवर्षाणि च सुभिक्षकृत्॥ ४१॥

पद्मकेतु संज्ञक तारे की शिखा सूक्ष्म व श्वेत होती है। वह कमलदण्डिका जैसा प्रतिभासित होता है। यदि वह पश्चिम दिशा में एक रात्रि भर भी दिखाई देता है तो अगले सात वर्षों तक सुभिक्ष को करता है।

(इस सम्बन्ध में पराशर का स्पष्टीकरण है- अथ पद्मकेतुः श्वेतकेतुफलसमासौ पश्चिमनाह्लादयन्निव मृणालकुमुदाभया शिखयैकरात्रचर। सप्त वर्षाण्यभ्युच्छ्रितं हर्षमावहति जगतः॥ तथैव ४९; वराह का श्लोक इससे मिलता-जुलता है- अपरेण पद्मकेतुर्मृणाल गौरो भवेन्निशामेकाम्। सप्त करोति सुभिक्षं वर्षाण्यतिहर्षयुक्तानि॥ तथैव)

अथावर्तक केतुर्लक्षणं

आवर्तकः सव्यशिखो निशार्द्धे स प्रदृश्यते।
यावन्मुहूर्तान् रक्ताभस्तावन्मासान्सुभिक्षकृत्॥ ४२॥

आवर्तक नामक केतु तारे के बाँयी ओर शिखा होती है। वह आकाश में अर्द्ध रात्रि में जितने मुहूर्त दिखाई देता है, उतने ही मास पर्यंत सुभिक्ष को करने वाला होता है। एक मुहूर्त की कालावधि दो घड़ी कही गई है।

(वराह ने आवर्त नाम ही दिया है- आवर्त इति निशार्द्धे सव्यशिखोऽरुणनिभोपरे

स्निग्धः। यावत्क्षणान् स दृश्यस्तावन्मासान् सुभिक्षकरः॥ तथैव ५०; पराशर का मत उत्पल ने विवृत्ति में उद्धृत किया है- अथावर्तकेतुः श्वेतकेतोः कर्मण्यतीतेऽपरस्यामर्द्धरात्रे शङ्खावदातोऽरुणाभया प्रदक्षिणनताग्रया शिखयोदितः। स यावन्मुहूर्तान् दृश्यते तावन्मासान् भवत्यतीव सुभिक्षं नित्ययज्ञोत्सवं जगत्॥ तथैव)

शूलाकारतारकसंवर्तकेतो

संध्याकाले पश्चिमायां शूलाकारोरुणप्रभः।

वियत्त्र्यंशं (वियत्र्यंसं ?) समाक्रम्य स्थितोयः संप्रदृश्यते॥

यावन्मुहूर्तास्तार्वंतवर्षाण्य(?-तावद्वर्षाणि) शुभदः स्मृतः॥४३॥

सन्ध्याकाल में जो तारा पश्चिम में शूलाकार तथा अरुणोदय की आभा के समान दिखाई देता है और आकाश के तीसरे भाग में परिव्याप्त हो जाता है, वह जितने मुहूर्त तक दिखाई देता है, उतने ही वर्ष अशुभ होते हैं, यह जानना चाहिए।

(इस केतु का नाम वराह ने संवर्त दिया है। कहा है- पश्चात् सन्ध्याकाले संवर्तो नाम धूम्रताम्रशिखः। आक्रम्य वियत्त्र्यंशं शूलाग्रावस्थितो रौद्रः॥ यावत एव मुहूर्तान् दृश्यो वर्षाणि हन्ति तावन्ति। भूपान् शस्त्रनिपातैरुदयर्क्षं चापि पीडयति॥ तथैव ५१-५२; उत्पल ने पराशर का मत उद्धृत किया है- अथ संवर्तो वर्षसहस्रमष्टोत्तरं प्रोष्य पश्चिमेनास्तं गते सवितरि सन्ध्यायां दृश्यते तन्वीं ताम्ररूक्षां शूलाभां धूम्रं विमुञ्चन्तीं दारुणां शिखां कृत्वा नभसस्त्रिभागमाक्रम्य। स यावन्मुहूर्तान् निशि तिष्ठति तावद्वर्षाणि परस्परं शस्त्रैर्घ्नन्ति पार्थिवाः। यानि नक्षत्राणि धूपयति यत्र चोदेति तानि दारुणतरं पीडयति। तदाश्रितांश्च देशानिति॥ तथैव)

अत्रैव शुभान केतून् वर्जयित्वाऽशुभानां नक्षत्रस्पर्शधूपनादुष्टफलं वक्ष्यामि

यस्मिन् ऋक्षेस्थितः केतु एकाशे संप्रदृश्यते।

तद्दिस्यूहान् समाहन्ति यात्रशे(?ये)षो वदामि तत्॥ ४४॥

केतु आकाश में जिन नक्षत्रों में दिखाई देता है, उन्हीं देशों को हानि से प्रभावित करता है। आगे जो देश जिस नक्षत्र मण्डल के अन्तर्गत आते हैं, उनका विवरण दिया जा रहा है।

तांश्चाधुनाऽऽह

अश्वि(?अश्मक)न्यमश्वकं हन्ति याम्ये केतुः किरातकान्।

वह्नौ कलिङ्गनृपतीमरोहिण्यासू(? शू)रसेनकान्॥ ४५॥

यदि आकाश में अश्विनी नक्षत्र पर केतु का उदय हो तो वह अश्व (? अश्मक देश) का नाश करता है। याम्य या भरणी नक्षत्र का केतु किरात देश, कृतिका का केतु कलिङ्ग तथा रोहिणी नक्षत्र का केतु सूरसेन देश के राजा का विनाश करता है।

(वराहोक्ति- अश्विन्यामश्मकपं भरणीषु किरातपार्थिवं हन्यात्। बहुलासु कलिङ्गेशं रोहिण्यां शूरसेनपतिम्॥ तत्रैव ५४)

अन्येष्वाह

औशीनरं मृगेरौद्रे जलजीवाधिपे तथा।

आदित्येश्मकनाथं च पुष्ये च मगधाधिपम्॥ ४६॥

मृगशिरा, आर्द्रा व शतभिषा पर उदित केतु औशीनर देश के राजा, पुनर्वसु का अश्मक देश और पुष्य का केतु मगधाधिपति का विनाश करत। है।

(वराह का भी यही मत है- औशीनरमपि सौम्ये जलजाजीवाधिपं तथार्द्रासु। आदित्येऽश्मकनाथान् पुष्ये मगधाधिपं हन्ति॥ तत्रैव ५५)

अन्येष्वाह

अशि(?-स)केशं च भौजङ्गे मघायां चाङ्गनायकम्।

भगमेपौण्ड्र(?भाग्येपांड्य)नाथं च आर्यम्णे चोज्जयिन्यकम्॥ ४७॥

अश्लेषा नक्षत्र का केतु अशिकेश के राजा, मघा का अङ्गराज, पूर्वाफाल्गुनी का पाण्ड्यदेश तथा उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र पर उदित केतु उज्जयिनी के राजा का विनाशकारी होता है।

(वराह का कथन है- असिकेशं भौजङ्गे पित्र्येऽङ्गं पाण्ड्यनाथमपि भाग्ये। औज्जयिनिकमार्यम्णे सावित्रे दण्डकाधिपतिम्॥ तथैव ५६)

अन्येष्वाह

कुरुक्षेत्राधिपं स(? त)वाष्ट्रे हस्तेदण्डकनायकम्।

वाते कांबोज-काश्मीरौद्विदैवकोशलाधिपम्॥ ४८॥

चित्रा नक्षत्र पर उदित केतु कुरुक्षेत्र व हस्तनक्षत्र का केतु दण्डक देश के राजा का विनाश करता है। स्वाती का केतु काम्बोज व कश्मीर तथा विशाखा का केतु कौशलाधीश का विनाशकारी होता है।

(वराहाचार्य का कथन है- चित्रासु कुरुक्षेत्राधिपस्य मरणं समादिशेत्तज्ज्ञ। काश्मीरककाम्बोजौ नृपती प्राभञ्जने न स्त:॥ इक्ष्वाकुरलकनाथ हन्यते यदि भवेद्विशाखासु। तथैव ५७-५८)

अन्येष्वाह

मैत्रेपौण्ड्राधिनाथं च सार्वभौमं पुरन्दरे।

मूलेभ(?-म)द्राधिनाथं च जलदैवे च कोशिकम्॥ ४९॥

इसी प्रकार अनुराधा का केतु पौण्ड्र के नृपति और ज्येष्ठा का केतु सभी देशों के राजाओं के विनाश का हेतु जानना चाहिए। मूल का केतु मद्राधिनाथ एवं पूर्वाषाढ़ा का नक्षत्र काशी के राजा का विनाश करता है।

(वराहमिहिर की उक्ति है- मैत्रे पुण्ड्राधिपतिर्ज्येष्ठासु च सार्वभौमवध:॥ मूलेऽन्ध्र-मद्रपती जलदेवे काशिपो मरणमेति। तथैव ५८-५९)

अन्येष्वाह

यो(?यौ)धेयार्जुन चैद्यांश्च वैश्वदेवे शिवे तथा।

वासवेपञ्चनदकं श्रवणे कै(के ?)कयाधिपम्॥ ५०॥

उत्तराषाढ़ तथा अभिजित् का केतु यौधेय, अर्जुन व चेदी-चंदेली के राजा, धनिष्ठा पर पञ्जाब तथा श्रवण पर कैकयाधिपति का विनाशकारी होता है।

(वराह का कथन है- यौधयकार्जुनायनशिविचैद्यान् वैश्वदेवे च॥ हन्यात् कैकयनाथं पाञ्चनदं सिंहलाधिपं वाङ्गम्। तथैव ५९-६०)

अथान्वेष्वाह

वारुणेसिंहलपति पूर्वाभाद्रे च बङ्गपम्।

अहिर्बुध्न्येनैमिषकं रेवत्यां केरलाधिपम्॥ ५१॥

इसी तरह वरुण या शतभिषा नक्षत्र का केतु सिंहलपति, पूर्वाभाद्रपद का बङ्गदेश, अहिर्बुध्न्य या उत्तराभाद्रपद का नैमिषारण्य तथा रेवती नक्षत्र का केतु केरलाधिपति का नाश करता है।

(वराहमिहिर का कथन है- नैमिषनृपं किरातं श्रवणादिषु षट्स्विमान् क्रमश: ॥ तथैव ६०; वराह ने यह भी कहा है कि जो केतु उल्का से ताड़ित हो, वह शुभकारी होता है, जो वृष्टियुक्त हो वह बहुत शुभ तथा वही केतु चोल, अवगाण, सितहूण और चीन देश के लिए अशुभकारी होता है- उल्काभिताडितशिख: शिखी शिव: शिवतरोऽति दृष्टो य: । अशुभ: स एव चोलावगाणसितहूणचीनानाम् ॥ तथैव ६१)

अथान्यद्विशेषवक्तव्यम्

यस(श ?)यां दिश्युदयं याति केतुस्तामभियोजयेत्।

यतोयत: शिखा याति राजा गच्छेत्ततस्तत: ॥ ५२ ॥

इस प्रकार यह जानना चाहिए कि जिस दिशा में केतु का उदय होता है, वह उसी दिशा में नाशकारी गतिविधियों को बढ़ाता है। जिस दिशा में केतु की शिखा का विस्तार दिखाई देता है, उस ओर के राजा के विनाश का हेतु सिद्ध होता है।

(यहाँ पराशर की उक्तियाँ स्पष्ट जान पड़ती है- यस्यां दिशि समुत्तिष्ठेतां दिशं नाभियोजयेत्। यत: शिखा यतो धूमस्ततो यायान्नराधिप: ॥ प्रतिलोमे यत: केतोर्जयार्थी याति पार्थिव: सामात्यवाहनबल: स नाशमधिगच्छति। दृष्ट्वा षोडश वासरान्न शुभद: कैश्चित् प्रदिष्ट: शिखि सर्वारम्भफलप्रदो हि नियतं चैत्रेऽथवा माधवे। ऋक्षं यत्परिभुक्त पीडितहतं यच्चाऽऽशिखाभेदितं तत्सर्वं परिवर्ज्य शुद्धमपरं पाणिग्रहे वास्तुषु ॥ तथैव ६२)

अथान्य पञ्चशतोत्तर भेदाकथनञ्च

पञ्चोत्तरशतंत्वेके केतूनां प्रवदन्ति च ॥ ५३ ॥

पूर्वाचार्यों का मत है कि केतु १०५ हैं, यहाँ उनके प्रकारों को आगे बताया जा रहा है।

चतुर्दश रवेपुत्रा वरुणस्य दशैव तु।

अग्निपुत्रुश्चतुस्त्रिंशद्यमस्य नवकीर्तिता: ॥ ५४ ॥

चौदह केतु सूर्य के पुत्र माने गए हैं, १० वरुण के पुत्र, ३४ अग्निपुत्र, ९ यमराज के पुत्र हैं।

(भट्टोत्पलीय विवृत्ति के संपादन के दौरान महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी को केतूदय के सम्बन्ध में कुछ अतिरिक्त श्लोक पराशर के पूर्वोद्धृत 'सामात्यवाहनबलः स नाशमधिगच्छति' बल के बाद मिले थे। वे यहाँ प्रासङ्गिक है- केतूदयं शुक्रफलं सङ्क्रान्त्या वृष्टिलक्षणम्। कथयामि समासेन लोकानां हितकाम्यया॥ वरुणस्य दशपुत्राश्चतुर्विंशा रवे स्मृताः। पृष्ठ २४४)

अष्टादशकुबेरस्य वायोर्विंशतिरीरिता॥ ५५॥

इसी प्रकार १८ कुबेर के पुत्र और बीस वायु के पुत्र कहे गए हैं। इस प्रकार १०५ केतुओं के पितृादि के विषय में कहा गया है।

(पराशरोक्ति पूर्वानुसार तुलनीय- अष्टादश कुवेरस्य यमस्य नवकीर्तिताः। अग्निपुत्राश्चचतुर्विंशद्वायोर्विंशतिरेव राट्। एवं संख्या च केतूनां शतं पञ्चोत्तरं स्मृतम्॥ तथैव)

मासानुसारेण फलाफलं

आद्य सूर्यपुत्रोदयफलं

आश्विने कार्तिके सूर्यपुत्राणामुदयं यदि।
मेघाजलन्मुमुचन्ति दुर्भिक्षं च तदादिशेत्॥ ५६॥
चतुष्पदा विनश्यन्ति राजानः कलहप्रियाः॥ ५७॥

आश्विन मास और कार्तिकमास में १४ केतु जो सूर्य के पुत्र हैं, यदि उदित दिखाई दें तो वर्षा नहीं होती है और अकाल पड़ता है। इसी प्रकार पशुधन की हानि होती है। राजाओं में कलह होता है।

(पराशरोक्ति- आश्विने कार्तिके चैव सूर्यपुत्रं विनिर्दिशेत्। नदीकूपतडागानि सर्वाणि परिशोषयेत्॥ म्रियन्ते च तदा गावस्तथान्ये च चतुष्पदाः। देवो न वर्षते तत्र दुर्भिक्षं च महाभयम्॥ तथैव)

अथ वरुणपुत्रोदयफलं

वारुणां उदयं यान्ति श्रावणे च नभस्यके।

स्यात्पृथ्वीजलसस्याढ्या लोकाश्चानन्द संयुताः ॥ ५८ ॥

श्रावण और भाद्रपद मास में १० वरुण के पुत्र केतुओं का उदय हो तो खूब वर्षा होती है, पर्याप्त सस्य, तृण होता है और लोक समुदाय विशेष आनंद से सराबोर हो जाता है।

(पराशरोक्ति- श्रावणे भाद्रपदे च वरुणस्य सुतोदयः। आवाहयेन्महामेघांस्तोय पूर्णा वसुन्धरा॥ उन्मार्गे सरितो यान्ति जलवेगसमाहताः। समर्घाण्यपि धान्यानि वरुणस्य सुतोदये॥ तथैव)

अथाग्निपुत्रोदयफलं

मार्गेमासि तथा पौषे दृश्यन्ते वह्निपुत्रकाः।

अग्निचोरभयं तत्र प्रजानाशं प्रयान्ति च॥ ५९ ॥

मार्गशीर्ष और पौष मास में ३४ अग्निपुत्र केतुओं का उदय हो तो आगजनी और चोरों-तस्करों से भय होता है तथा प्रजा विनाश को प्राप्त होती है।

पृ(प्र ?)थिवी भय संयुक्ता प्राणीनां व्याधिमादिशेत्।

उक्त केतु से पृथ्वी पर चतुर्दिक भय की व्याप्ति होती है तथा प्राणी मात्र को विविध व्याधियाँ आ घेरती हैं।

(पराशरोक्ति- मार्गशीर्षे च पौषे च अग्निपुत्रान् विनिर्दिशेत्। अग्निदग्धानि राष्ट्राणि हारितानि धनानि च॥ विद्रवन्ति तथा देशाः समस्ता भयपीडिताः। अग्निचौरभयं तत्र प्रजानां व्याधयस्तथा॥ तथैव)

अथ यमात्मजोदयफलं

यमजाश्चोदयं यान्ति माघफाल्गुन(ण ?)योः किलं।

पृथ्वीभय संयुक्ता दुर्भिक्षं च समादिशेत्॥ ६० ॥

माघ और फाल्गुन मास में ९ यम के पुत्र केतु का उदय और दर्शन हो तो पृथ्वी पर भय का वातावरण होता है तथा सभी दिशाओं में दुर्भिक्ष फैलता है।

(पराशरोक्ति- माघफाल्गुनयोर्मध्ये यमपुत्रं विनिर्दिशेत्। दुर्भिक्षं जायते घोरं सर्वधान्यानि संक्षयेत्॥ तथैव)

अथ कुबेरात्मजोदयफलं

चैत्र-माधवमासेतु कुबेरस्यात्मजः किलः।
यात्युङ्गमं तदा मेघा बहुवारि प्रदामताः।
धनधान्ययुतापृथ्वी प्रजाश्चानंद संयुताः॥ ६२॥

चैत्र और वैशाख मास में अठारह कुबेर के पुत्र केतुओं का उदय होता दीखे तो अतिवृष्टि होती है, अन्नोपज व धन की भारी वृद्धि होती है। इसी से प्रजा अति आनंद को प्राप्त होती है।

(पराशरोक्ति- चैत्रवैशाखयोर्मासे कुबेरसुतमादिशेत्। यादृशा उदिता मेघा जलं पतति तादृशम्॥ हविर्धुमाकुलं सर्वं नंदते च मुहूर्मुहः। वसुन्धरा शुभाशुभ्राढ्या धनधान्य समाकुला॥ तथैव)

अथ वायुपुत्रोदयं

वायुपुत्राः प्रदृश्यन्ते ज्येष्ठमासे(शे ?) शुचौ तथा।
उद्धतावान्ति वातावैदिशश्च रजसावृताः॥ ६३॥

ज्येष्ठ और आषाढ़ महीनों में वायुपुत्र २० केतुओं का उदय होता है तो प्रचण्ड वायु या प्रभञ्जन चलती है। दिशाओं को धूल के कण आच्छादित कर देते हैं।

पतन्ति गिरिश्रृङ्गाणि निपतन्ति महीरुहाः।
चौराग्नि जनिता पीडा राजानः कलहप्रियाः॥ ६४॥

इस झंझावात से पर्वतों के शिखर तक पतित हो सकते हैं और वृक्ष उखड़कर धराशायी हो जाते हैं। वायुपुत्र केतु चोर, अग्निभय को उत्पन्न करने वाले और राजाओं में वैमनस्य का वर्द्धन करने वाले कहे गए हैं।

(पराशरोक्ति- ज्येष्ठाषाढयोर्मध्ये वायुपुत्रोदयो भवेत्। उच्चा मेघाः प्रदृश्यन्ते वायुना सह प्रेरिताः॥ तरुप्रासादशिखिराः पतन्ति पवनाहताः। विरोधे च महीपाला भवन्ति च समन्ततः॥ तथैव)

इति नारदमुनिप्रोक्तेमयूरचित्रे केतुचारो नाम प्रथमोध्यायः॥ १॥

अथ ग्रहाणां योगफलकथनम् द्वितीयोऽध्यायः

अथार्द्रार्कमङ्गलयुतिफलं

रौद्रनक्षत्रगावेतौ यदि सूर्यमहीसुतौ।

मासं महर्घतां यान्ति धान्यानि स्वच्छता * पुनः॥ १॥

इस अध्याय में ग्रहों के योगफल कहे जा रहे हैं। यदि आर्द्रा नक्षत्र पर सूर्य और मङ्गल ग्रह विचरण करें तो एक माह तक धान्य महंगा होता है, बाद में भाव उचित हो जाता है।

*(*पाठान्तर 'ग' मातृका पृष्ठ ५- स्वस्थतां।)*

भानौकेतवयुतिफलं

भानुकेतू * च भरणीं मृगं वा यदि चास्थितौ।

लवणं महर्घतां याति सिंधुदेशोद्भ(वं) विडम्॥ २॥

भरणी और मृगशिरा नक्षत्रों पर यदि सूर्य और केतु दोनों की युति हों, तो सिंधुदेश में होने वाला सामुद्रिक लवण 'विडम्' महंगा होता है।

*(*पाठान्तर तथैव- स्वर्भानुके।)*

बुधशुक्रभौमयुतिफलं

बुध-शुक्र-महीपुत्रा भुजङ्गर्क्षे समाश्रिताः।

नदन्ति लोकाः सुखिनः सुभिक्षं जनयन्ति च॥ ३॥

अश्लेषा नक्षत्र पर बुध, शुक्र और मङ्गल का गमन हो तो लोक समुदाय में आनंद का संचार होता है और सर्वत्र सुभिक्ष वाला सुसंवत्सर होता है।

स्वात्याभौमरेवत्यार्कयुतिफलं

स्वातिं * याति यदा भौमो रेवतीं यदि भास्करः।

चलचित्ता महीपालाः प्रजानाशं प्रयांति च॥ ४॥

यदि मङ्गल स्वाती नक्षत्र पर हो और रेवती पर सूर्य का संचार हो तो भूपालों की प्रवृत्ति चञ्चल या अस्थिर हो जाती है। इसमें प्रजा का ह्रास होता है।

*(*पाठान्तर तथैव- स्वातीं।)*

मैत्रासौरिज्येष्ठागुरौफलं

अनुराधां गतः शौ(?सौ)रिर्ज्येष्ठायां च वृहस्पतिः।

पश्चिमायां तदा युद्धं प्रजानाशं प्रयाति च॥ ५॥

अनुराधा का शनि हो और ज्येष्ठा का वृहस्पति हो तब पश्चिम में युद्ध होता है और देशवासियों का क्षय होता है।

मूलसौरिस्वात्यबुधमघाचंद्रश्च

मूले मन्दो बुधः स्वात्यां मघायां चंद्रमा यदि।

सङ्ग्रहे सर्वधान्यानां लाभो भवति नान्यथा॥ ६॥

मूलनक्षत्र का शनि हो और स्वाती पर बुध हो तथा मघा पर चंद्र का विचरण हो तो सभी प्रकार के अन्न का संग्रह करने में ही लाभ होता है, अन्यथा हानि की संभावना रहती है।

विश्वेसौरि च सप्तार्क फलं

विश्वेशभेभगे * मन्दाः सप्तमर्क्षे यदा रविः।

तदा जलविनाशः स्यात्प्रजानां कदनं महत् **॥ ७॥

उत्तराषाढ़ किंवा पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र पर शनि हो और सूर्य पुनर्वसु का हो तो जल का विनाश जानना चाहिए। इस योग में प्रजा को महत् कष्ट होता है।

*(*पाठान्तर तथैव- विश्वभे च गतो। ** पाठान्तर तथैव- तथा)*

श्रवणेखलुग्रहफलं

श्रवणर्क्षे यदा क्रूरो ग्रहः कश्चित्समाश्रितः।

अन्नं महर्घतां याति गोधूमाश्च विशेषतः॥ ८॥

जब कोई क्रूर ग्रह श्रवण नक्षत्र पर हो तब अन्न महंगा हो जाता है। इसमें भी गेहूँ विशेष रूप से महंगा होता है।

वासवेसौरिभौमयुतिफलं

वासवर्क्ष्ये * यदा सौ(शौ ?)रीर्भूमिपुत्रेण संयुतः।

न वर्षंति जलं मेघाः श(? स)स्यहानि(श्च) जायते॥ ९॥

धनिष्ठा नक्षत्र का शनि और मङ्गल हो तब वर्षा नहीं होती है। इस मास में तृण चारादि की हानि होती है, फलतः पशुधन को कष्ट होता है।

*(*पाठान्तर तथैव- वासवक्ष।)*

वारुणेजीवोश्चित्राभौमफलं

वारुणे च यदा जीवाश्चित्रायां धरणीसुतः।

तदा नश्यन्ति गोधूमाः सस्यहानिमहर्घता॥ १०॥

शतभिषा नक्षत्र पर वृहस्पति तथा चित्रा का मङ्गल हो तो गेहूँ की फसल या भण्डार का विनाश होता है। तृण की हानि तथा महंगाई भी बढ़ जाती है।

मकरो वा घटार्केभौभृग्वादीनां

भानुर्भौमो भृगुश्चैव शनि क्षेत्रे समाश्रिताः।

यदा निशापतिस्तत्र तदा दुर्भिक्षतो भयम्॥ ११॥

मकर किंवा कुम्भ के सूर्य, मङ्गल अथवा शुक्र हों और चंद्रमा भी इनके साथ ही हो तब दुर्भिक्ष की आशंका जाननी चाहिए।

वृषेराहवोभौमफलं

वृषे राहुर्यदा भौमः षष्ठे मासि महाभयम्*।

भवत्यत्र न संदेहोस्तदा दुर्भिक्षपीडनम्॥ १२॥

वृष राशि के राहु और मङ्गल हो तो छठे महीने में भय होता है। दुर्भिक्ष भी पड़ता है, इसमें कोई संदेह नहीं है।

*(*पाठान्तर तथैव- महद्भयम् ।)*

युग्मसौरो वा राहुफलं

मिथुनर्क्षे * सूर्य्यपुत्रो राहुर्वा यदि संस्थितः ।

दुर्भिक्षं जायते तत्र पश्चिमायां नृपक्षयः ॥ १३ ॥

मिथुन राशि का शनि या राहु ग्रह हो तो दुर्भिक्ष होता है। यह योग पश्चिम के राजाओं के लिए विनाशकारी जानना चाहिए।

*(*पाठान्तर तथैव- मिथुनक्ष ।)*

रवौराहवोभौमश्च शशिभृग्वोमंदयुतिफलं

रवि-राहु-महीपुत्राः शशि-शुक्र-शनैश्चराः ।

एकराशिं गतात्ह्येते तथा पृथ्वी भयाकुलाः ॥ १४ ॥

सूर्य, राहु, मङ्गल, चंद्रमा, शुक्र और शनि ये ग्रह यदि एक ही राशि में आते हों तो पृथ्वी पर भय की सृष्टि करते हैं।

पूर्वदेशे महापीडा नृपाणां संक्षयो भवेत् ॥

प्रजानाशो व्याधिभयं तस्मिन् काले न संशयः ॥ १५ ॥

उक्त योग से पूर्ववर्ती देशों में महापीड़ा होती है। राजा का मरण भी संभावित है। इस योग से प्रजा का नाश होता है, महामारी भी होती है। इसमें संदेह नहीं जानना चाहिए।

एकेराश्योसूर्यादीनां फलं

सूर्य(च)न्द्रार-मन्दाश्च राहु-चन्द्रसुतो यदि ।

एकराशिं गतात्ह्येते दक्षिणस्यां भयप्रदाः ॥ १६ ॥

सूर्य, चंद्र, मङ्गल, शनि, राहु तथा बुध ये छह ग्रह यदि एक ही राशि पर हो तब दक्षिणी दिशा में भयकारक होते हैं।

एकेराश्योकुजार्कादीनां फलं

एकराशिं गतात्ह्येत कुजा-र्क-शनि-राहवः ।

शुक्रो गुरुश्च तत्रैव तदा भयविवर्द्धनः ॥ १७ ॥

उतरेच्छत्रभङ्ग स्यान्नात्र कार्या विचारणा।

मङ्गल, सूर्य, शनि, राहु, शुक्र और वृहस्पति ये छहों ग्रह यदि एक ही राशि में स्थित हों तब लोक में भयव्याप्त होता है। इससे उत्तर दिशा में छत्रभङ्ग होता है, इसमें कोई संदेह नहीं है, ऐसे में योग्यकार्य पर विचार कर लिया जाना चाहिए।

रविभौमगुरौमंदबुधश्च युतिफलं

रवि-चंद्र-कुजा-जीव-मन्द-चंद्रसुता यदि ॥ १८

समाश्रिता ह्येकराशिं तदा पृ(प्र ?)थ्वी भयाकुला ॥

राज्ञां नाशो व्याधिभयं प्रजानां संक्षयो भवेत् ॥ १९ ॥

सूर्य, चंद्र, मङ्गल, वृहस्पति, शनि और बुध- ये छहों ग्रह यदि एक राशि में हो तो राजाओं का नाश जानना चाहिए। इस योग में व्याधिजन्य भय तथा प्रजा का क्षय होता है।

कुजार्कजीवोशुक्रश्च युतिफलं

कुजा-र्क-जीव-शुक्राश्च यदैकत्र समाश्रिताः।

भयव्याधिं प्रकुर्वंति सर्वधान्यमहर्घता ॥ २० ॥

मङ्गल, सूर्य, वृहस्पति और शुक्र- ये चार ग्रह यदि एक ही राशि पर संचरण करते हैं तब भय व्याधि होती है। सभी प्रकार का अन्न भी महंगा हो जाता है।

सिंहस्थेकुजार्केंद्वुज्ञजीवश्च फलं

कुजा-र्के-न्दु-ज्ञ-जीवाश्च सिंहराशिं समाश्रिताः।

छत्रभङ्ग(:) प्रजानाशो भयभीता च मेदिनी ॥ २१ ॥

पाँच ग्रह- मङ्गल, सूर्य, चंद्र, बुध और वृहस्पति यदि सिंह राशि पर हो तो छत्रभङ्ग, प्रजा का नाश और पृथ्वी पर महाभय जानना चाहिए।

बुधशुक्रार्केयुति फलं

एकराशिं स्थिता ह्येते सौम्य-शु(सु ?)क्र-दिनाधिपः *।

सर्वधान्य महर्घत्वं मेघाः स्वल्पजलप्रदाः ॥ २२ ॥

एक नक्षत्रगाह्येते तदा भय विवर्द्धनाः ।

बुध, शुक्र और सूर्य एक ही राशि पर हो तब अन्न महंगा होता है, वर्षा अल्प होती है और यदि उक्त तीनों ही ग्रह एक ही नक्षत्र पर हो तब भय का अतिरे होता है।

एकेराशौसौरोगुरवादीनां युतिफलं

यदा जीवसु(?-यु)तो मन्दो जीवाद्वा सप्तमो स्थिताः ।

तदा प्रजा विनश्यन्ति भूपश्चान्नपरिक्षयः ॥ २३ ॥

यदि वृहस्पति, शनि एक ही राशि पर आए हुए हों या वृहस्पति से सातवाँ शनि हो तब प्रजा का नाश और अक्ष का क्षय जानना चाहिए।

*(*पाठान्तर 'ग' मातृका पृष्ठ ६- यदा जीवयुतो मन्दो जीवाद्वा सप्तमे स्थितः ।)*

एकराशिस्थसौरोभौमो युतिफलं

कर्कमीनमृगस्त्रीषु शनिभौमो यदा स्थितौ ।

तदा युद्धाकुला पृथ्वी धन-धान्य विवर्जिता ॥ २४ ॥

कर्क, मीन, मकर और कन्या राशियों पर यदि शनि और मङ्गल हो तो पृथ्वी अन्न रहित अर्थात् फसलों का विनाश जानना चाहिए और युद्ध की त्रासदी रहती है।

मिथुनौकन्याधन्वझषेमन्दफलं

मिथुन-स्त्री-धनु-मीनराशौ मन्दा(दो ?) यदा भवेत् ।

तदा भूपा विनश्यन्ति पृथ्वी शोणितपूरितः * ॥ २५ ॥

मिथुन, कन्या, धन और मीन- इन राशियों पर जब शनि ग्रह होता है तब राजाओं का विनाश होता है, पृथ्वी पर बहुत रक्तपात होता है।

*(*पाठान्तर तथैव- शोणितपूरिता ।)*

एकराशिस्थरविशुक्रमुशना युतिफलं

रवि-शुक्र-सुराचार्यौ * यदैकत्र समाश्रिता ।

राज्यभ्रंशः प्रजानाशः सर्वस(?श)स्यमहर्घता ॥ २६ ॥

रवि, शुक्र, वृहस्पति- ये ग्रह जब एक ही राशि पर आते हों तब राज्यभ्रंश होता है, प्रजा का विनाश होता है और सस्य या तृण बहुत महंगा हो जाता है।

*(*पाठान्तर तथैव- सुराचार्या।)*

एकराशिस्थरविभृग्वभौम युतिफलं

रवि-भार्गव-भौमाश्च राशिमेकं समाश्रिताः।

घृततैलमसूरान्नं महर्घंति महाभयम् ॥ २७ ॥

सूर्य, शुक्र, मङ्गल- ये तीनों ही ग्रह यदि एक राशि पर समाश्रित हो तब तेल, मसूर की दाल आदि के भाव बहुत बढ़ जाते हैं और महाभय होता है।

एकस्थेगुरौभृग्वमंदश्च युतिफलं

सुरेज्य कवि मन्दाश्च राहुरेकत्र संस्थिताः।

मेघाजल प्रचंति सर्वधान्य महर्घता ॥ २८ ॥

वृहस्पति, शुक्र, शनि और राहु ये चार ग्रह यदि एक राशि पर हों तब वर्षा बहुत होती है और समस्त अन्न पर्याप्त महंगा हो जाता है।

एकराशिगतेरविज्ञगुरौसौरिराहु युतिफलं

रवि-ज्ञ-गुरु-मन्दाश्च राहुयुक्ता यदा स्थिताः।

सुभिक्षं क्षेममारोग्यं तस्मिन्काले न संशयः ॥ २९ ॥

रवि, बुध, बृहस्पति और शनि- ये चार ग्रह यदि एक ही राशि पर हों तब सुभिक्ष और कुशलता होती है। उस काल में प्रजा आरोग्य रहती है, इसमें कोई संशय नहीं है।

एकराशेभौमशुक्रोसौरि युतिफलं

एकराशिगता ह्येते भौम-भार्गव-सूर्यजाः।

तदा भूपा विनश्यन्ति प्रजानां संक्षयो भवेत् ॥ ३० ॥

एक ही राशि पर यदि मङ्गल, शुक्र व शनि हो तो राजाओं का विनाश जानना चाहिए। प्रजा का भी क्षय होता है।

एकराशेभृगुमंदजीवश्च युतिफलं

शुक्र-मन्दार-जीवाश्च यदैकत्र समाश्रिताः।

मेघा जलं न मुञ्चति दुर्भिक्षं जायते तदा॥ ३१॥

शुक्र, शनि, मङ्गल तथा वृहस्पति- य चार ग्रह यदि एक ही राशि में हो तब वर्षा का अभाव जानना चाहिए। यह दुर्भिक्ष का कारण बनता है।

एकराशेगुरुमंदभृगबुधश्च युतिफलं

गुरु-मन्दार-शुक्राश्च यदा सौम्यसमन्विताः।

देशभ्रंशः प्रजानाशो वस्त्रधात्वो(-तु ?) महर्घता॥ ३२॥

वृहस्पति, शनि, राहु, शुक्र और बुध- ये पाँच ग्रह यदि एक राशि पर हों तब देश और प्रजा का नाश जानना चाहिए। इस काल में वस्त्राभरण और धातु द्रव्य महंगे हो जाते हैं।

एकराशिस्थ रविशशिगुरु युतिफलं

दिनानाथे-न्दु-गुरुवो यदैकत्र समाश्रिताः।

उत्तरस्यां दिशि भयं प्रजा(:) क्रन्दन्ति नित्यशः॥ ३३॥

रवि, चंद्र, वृहस्पति- ये तीन ग्रह जब एक ही राशि पर होते हैं, तब उत्तर दिशा के देशों में भय की व्याप्ति होती है। प्रजा नित्य क्रन्दन करने लगती है।

यवान्नमुद्गवास्त्राणां सङ्ग्रहे च कृति सति।

मासे सप्तमके चैव लाभो भवति पुष्कलः॥ ३४॥

उक्त योग में जौ, अन्न, मूंग, वस्त्रादि द्रव्य खरीद कर जमा कर लें तो अगले सातवें मास में पर्याप्त लाभ की प्राप्ति हो सकती है।

एकराशिस्थ रविचंद्रशुक्रगुरुबुधश्च युतिफलं

रवि-न्दु-शुक्रे-ज्य-शशाङ्कपुत्रा

यदैकराशौ सहिता भवन्ति।

मेघाः प्रवर्षंति महर्घतास्यात्प्रजा-

विनाशो दिशि निर्ऋते स्यात्॥ ३५॥

सूर्य, चंद्र, शुक्र, वृहस्पति और बुध- ये पाँच ग्रह यदि एक ही राशि पर आएँ तब नैर्ऋत्य कोण में अतिवृष्टि जानें और वहाँ प्रजा के विनाश के साथ-साथ अन्न बहुत महंगा हो जाता है।

एकराशिस्थ जीवार्कभृग्वसौरिभौम युतिफलं

जीवार्क-शुक्रा-र्कसुता यदैकराशिं

गता भूमिसुतेन युक्ताः।

भूपालपीडान्नमहर्घता स्यात् क्रन्दन्ति

लोकास्त्रभयाभितप्ताः॥ ३६॥

गुरु, सूर्य, शुक्र, शनि और मङ्गल- ये पाँचों ग्रह यदि एक ही राशि में संचरण करते हों तब राजाओं को पीड़ा होती है। शस्त्रास्त्र का भय बढ़ता है। अन्न भी महंगा होता है और भुखमरी का ताण्डव होने लगता है।

एकराशिस्थ सौरिराहव युतिफलं

शनि-राहु यदैकत्र भवेतां सहितौ यदा।

सर्वधान्यमहर्घत्वं राजानो भयविह्वलाः॥ ३७॥

शनि व राहु यदि एक ही राशि पर होते हैं तब अन्न महंगा होता है। इस योग में राजाओं को भय होता है।

एकराशिस्थ भौमगुरौ युतिफलं

एकराशिगतावेतौ धरापुत्राङ्गिरःसुतौ।

तदा मेघा न वर्षंति वर्षा काले न संशयः॥ ३८॥

मङ्गल और गुरु यदि एक ही राशि पर हों तब पावस काल में भी वर्षा नहीं

होती है, इस विचार में संशय नहीं करना चाहिए।

अथ भौमशुक्रगुरौ युतिफलं

महीसुतो दैत्यपुरोहितो गुरुर्यदैक-

नक्षत्रसमाश्रिताः ग्रहाः ।

तदा सुभिक्षञ्च यवान्नसङ्ग्रहे

मासे चतुर्थे विपुलो हि लाभः ॥ ३९ ॥

जब एक ही नक्षत्र पर मङ्गल, शुक्र, वृहस्पति- ये तीनों ग्रह हो तब सुभिक्ष होता है। इस अवधि में यदि अन्नादि का संग्रह कर लिया जाए, तब चौथे मास में विपुल लाभ की प्राप्ति हो सकती है।

एकराशिस्थ सप्तग्रहो युतिफलं

सप्त ग्रहा यदैकस्था गोलयोगस्तदा भवेत्।

दुर्भिक्षं राष्ट्रपीडा च तस्मिन् योगे न संशयः ॥ ४० ॥

यदि कभी ऐसा भी योग हो कि सात ग्रह एक ही राशि पर आ जाएँ तब गोल संज्ञक योग बनता है। इस योग में देश में दुर्भिक्ष, पीड़ा होती है, इसमें कोई संशय नहीं करना चाहिए।

भचक्रेरविशुक्रसोमसुतश्च युतिवशात् फलं

अग्रे यान्ति दिवनाथः पृष्ठे (च) भृगुनन्दनः ।

मध्ये सोमसुतो यान्ति भवत्यन्नमर्घता ॥ ४१ ॥

राशिचक्र में जब आगे की राशि पर रवि और पीछे की राशि पर शुक्र हो और मध्य में बुध हो, तब अन्न बहुत महंगा हो जाता है।

भृगुसौरिबुधश्च फलं

गच्छतोऽग्रे शुक्र-शनि-बुध षष्ठं समाश्रितः ।

धनधा(ध्या ?)न्याकुला पृथ्वी प्रजा नंदति सर्वश(स ?): ॥ ४२ ॥

बुध यदि शुक्र, शनि के पृष्ठभाग में हों तब पृथ्वी पर धन धान्य की वृद्धि होती है और सर्वत्र प्रजा में सुख की व्याप्ति होती है।

रविभौमवशफलं

भौमस्य पृष्ठतो यान्ति * भानुश्चेज्जलशोषकः।

भवत्यत्र न सन्देहो विपरीतो जलप्रदः॥ ४३॥

मङ्गल के पृष्ठ में सूर्य हो तब जल सूखाने का कारण बनता है। इस योग में वर्षा नहीं होती, यदि सूर्य जब मङ्गल से आगे होता है तो इसके विपरीत होता है अर्थात् वर्षा होती है।

*(*पाठान्तर 'ग' मातृका पृष्ठ ७- याति।)*

अधनैतत्परमतम्

मेषे समाश्रितो भानुर्वृषे च धरणीसुतः।

भयव्याधियुता लोका नृपाणां विग्रहो महान्॥ ४४॥

यदि मेष राशि का सूर्य और वृष का मङ्गल होता है, तब लोक में भय और रोग बढ़ता है। ऐसे में राजाओं में विग्रह या तनाव होता है।

वृषस्थशनिभार्गवभौम युतिफलं

वृषराशिं यदा प्राप्ताः शनि-भार्गव-भूमिजाः।

दुर्भिक्षं राष्ट्रभङ्गं च लोकानां भयगादिशेत्॥ ४५॥*

शुक्र, शनि और मङ्गल- ये तीनों ग्रह जब वृषस्थ हो तब दुर्भिक्ष पड़ता है। देश में हिंसक, तोड़फोड़ जैसी आतंककारी गतिविधियाँ बढ़ती है और लोक में भय व्याप्त होता है।

*(* प्रकाशित पाठ में ४६वाँ श्लोक नहीं है किंतु 'ग' मातृका में सातवें पृष्ठ पर अधोलिखित ४७वाँ श्लोक 'मेषे शनैश्चरो भानु' दिया गया है और क्रमशः यह ४५वें क्रम पर निरंतर है।)*

प्रथमेसौरार्कभृगोभौमश्च युतिफलं

मेषे शनैश्चरोभानुर्भार्गवे भूमिजस्तथा।

दुर्भिक्षं लोकपीडा च भवेत्पृथ्वी भयाकुला ॥ ४७ ॥

शनि, सूर्य, शुक्र और मङ्गल- ये ग्रह यदि मेष राशि पर होते हैं तो दुर्भिक्ष होता है और लोकजन पीड़ा पाते हैं। पृथ्वी पर भय व आकुलता बढ़ती है।

वृषस्थसूर्यभौममन्दश्च फलं

वृषे भानुः कुजः शौरिस्तदा युद्धं समादिशेत्।
न वर्षंति जलं मेघा दुर्भिक्षं लोकपीडनम् ॥ ४८ ॥

जिस काल में रवि, मङ्गल और शनि यदि वृषस्थ हो तब युद्ध होता है। वर्षा नहीं होती है और दुर्भिक्ष के कारण लोकजन पीड़ा पाते हैं।

मन्दगुरोभौमश्च स्थित्यानुसारे फलं

मीनराशिगते मन्दे-कर्कटस्थे वृहस्पतौ।
तुलाराशिगते भौमे तदा दुर्भिक्षमादिशेत् ॥ ४९ ॥

जब मीन राशि पर शनि, कर्क पर वृहस्पति और तुला पर मङ्गल होता है तब दुर्भिक्ष होता है।

तुलाराशिस्थशुक्रार्किभूपुत्रश्च युतिफलं

शुक्रा-र्कि-भूमिपुत्रा हि* तुलाराशिसमाश्रिताः।
तदा युद्धं महाघोरं राज्ञां चैव परस्परम् ॥ ५० ॥

यदि शुक्र, शनि और मङ्गल- ये तीनों ग्रह तुला राशि पर आते हैं तब राजाओं में परस्पर घोर सङ्ग्राम होता है।

*(*पाठान्तर 'ग' मातृका- शुक्राकिभूमि पुत्राहि।)*

मीनगतेचंद्रभृगुशुक्रभौमश्च युतिफलं

चंद्र-भार्गव-धरासुता यदा मीनराशिमुपयान्ति वै तदा।
दुर्लभं भवति सर्वधान्यक वारिदश्च न जलं प्रमुञ्चति ॥ ५१ ॥

चंद्र, मङ्गल, शुक्र- ये तीनों ही ग्रह जब मीन राशि पर होते हैं, तब सभी प्रकार का अन्न दुर्लभ होकर महंगा हो जाता है, वर्षा भी नहीं होती है।

गुरौमन्दश्च युतिफलं

गुरुयुक्तः शनिर्वक्रं करोति च यदा तदा।

नवमे मासि गोधूम-तिल-तैलमहर्घता॥ ५२॥

यदि वृहस्पति के साथ शनि वक्री हो तो नौ मास पर्यंत (अथवा नवें महीने में) गेहूँ, तिल और तेल द्रव्य महंगे होंगे।

गुरुशुक्रश्च शनिभौमश्च युतिफलं

गुरु-शुक्रावेकराशिं गतौ दुर्भिक्षदुःखदौ।

युद्धदौ शनिमाहेयौ तथा * दुर्भिक्षकारकौ॥ ५३॥

गुरु और शुक्र दोनों जब एक ही राशि पर आएँ तब दुर्भिक्ष का कारण बनाते हैं। इस योग में बहुत दुःख होता है। इसी प्रकार शनि और मङ्गल यदि एक राशि पर हों तब युद्ध और अकाल का कारण बनते हैं।

*(*पाठान्तर तथैव- तदा।)*

अथाशुभग्रहस्यातिचारफलम्

यदा शुभग्रहः कश्चिदतिचारं करोति च।

तदा नृपाः क्षयं यान्ति दुर्भिक्ष तत्र दारुणम्॥ ५४॥

जब कोई शुभ ग्रह अतिचार करें तब राजाओं का क्षय होता है। इस योग में बहुत भयंकर अकाल पड़ता है व दारुण कष्ट होता है।

अत्रैव पापग्रहातिचारफलं

अतिचारं यदा क्रूरो ग्रहः कश्चित्करोति च।

तदा नन्दन्ति राजानो धनधा(ध्या ?)न्याकुला धरा॥ ५५॥

इसके विपरीत जब कोई क्रूर ग्रह अतिचार पर होता है, उस काल में राजा आदि सुखी होते हैं और पृथ्वी पर धन-धान्य की वृद्धि होती है।

अथ मन्दशुक्रस्थित्यानुसारे फलं

यदातिचारगो मन्दो वक्रीभूतोङ्गिरःसुतः।

तदा नन्दन्ति राजानो धन-धान्याकुला धरा ॥ ५६ ॥

जिस काल में शनि अतिचार को प्राप्त होता है और गुरु वक्रदृष्ट होता है, तब राजाओं को सुख मिलता है, धरती पर धन-धान्य की समृद्धि होती है।

शुभाशुभग्रहा स्थित्यानुसारे फलं

यदा क्रूरग्रहो वक्री * शुभश्चैवातिचारगः।

तदा भवति दुर्भिक्षं राज्ञां युद्धं परस्परम् ॥ ५७ ॥

जब क्रूर ग्रह वक्री होता है और शुभग्रह अतिचार करते हों, तब अकाल तो पड़ता है ही, राजाओं में परस्पर युद्ध भी ठन जाता है।

*(*पाठान्तर 'ग' मातृका पृष्ठ ८- वक्रो।)*

अन्यदपि वर्षाफलाफलम्

यस्मिन्मासे पूर्णिमायां यदा वर्षति वारिदः।

गोधूम-घृत-धान्यानां तस्मिन्मासे महर्घता ॥ ५८ ॥

जब किसी पूर्णिमा पर मेघ वर्षा करते हैं, उस माह में गेहूँ, घी और अन्यान्य अनाज महंगे हो जाते हैं, ऐसा जानना चाहिए।

मलिम्लुचे ग्रहाचारफलं

यदा मलिम्लुचे भौमोऽङ्गिरा राश्यंतरे व्रजेत्।

गुरुर्वा महती वृष्टिरथवा लोकसंक्षयः ॥ ५९ ॥

मल मास में जबकि मङ्गल अथवा वृहस्पति यदि दूसरी राशि पर गमन करते हों तब अति वृष्टि होती है अथवा जलप्लावन से लोक का क्षय होता है।

अन्यदप्याह

कार्तिके मार्गशीर्षे च सङ्क्रान्तौ वारिवर्षणम्।

तदा महर्घता पौषे सस्यवृद्धि(द्धी ?)श्च मध्यमाः ॥ ६० ॥

कार्तिक अथवा मार्गशीर्ष महीने में सङ्क्रान्ति पर यदि वर्षा होती है, तो पौष मास में अनाज महंगा हो जाता है जबकि चारे भाव मध्यम रहते हैं।

गुरुभृग्वार्किशशिजा युतिफलं

गुरु-शुक्रा-(f)र्क-शशिजा यदैकत्र समाश्रिताः।

घातयोगं विजानीयात्पांसु(शु ?)वृष्टिस्तदा भवेत्॥ ६१॥

गुरु, शुक्र, शनि, बुध- ये चार ग्रह यदि एक राशि में होते हैं तब घातयोग बनाते हैं, इनमें धूलभरी वर्षा होती है अर्थात् केवल बवण्डर उठते हैं।

रविचंद्रभौमश्च स्थित्यानुसारे फलं

सूर्य्याद्विधुः पञ्चमसप्तमः स्यात्क्षोणीसुतो

याति तथारिगेहे।

दिग्दाहयोगो मुनिना प्रदिष्टः सजाति *

उल्कापतनादिकारी॥ ६२॥

चंद्रमा यदि सूर्य से पाँचवें या सातवें गृह में हो तथा सूर्य से छठे स्थान पर मङ्गल हो तो इस योग को दिग्दाहयोग-जानना चाहिए। इसमें उल्कापात होता है, ऐसा मुनियों ने कहा है।

*(*पाठान्तर तथैव- प्रदिष्टो सञ्जात।)*

अत्रैव भूकम्पयोगाः

उपप्लवात्सप्तमगो महीजो

महीसुतात् पञ्चमगो यदा बुधः।

बुधाद्विधुः स्याच्च चतुष्टयस्थितः

स चेह भूकम्पनयोग ईरितः॥ ६३॥

यदि उपप्लव या उत्पात की राशि में सातवें स्थान में मङ्गल हो और मङ्गल से पाँचवें स्थान में बुध हो, बुध के केंद्र (१, ४, ७, १०वें स्थान) में चंद्रमा हो तब भूकम्प संज्ञक योग बनता है।

याम्यादिक् दुर्भिक्षज्ञानं

मेषे-वृषे-कुलीरार्द्धे यदोत्पाता भवन्ति हि।

दक्षिणस्यां तदा युद्धं प्रजाः क्षुद्दुःखपीडिताः ॥ ६४ ॥

अब कालानुसार उत्पातों के फल कहे जा रहे हैं। मेष या वृष में सूर्य तथा कर्क के अर्द्ध में सूर्य हो तब यदि उत्पात होता है तो दक्षिण दिशा में युद्ध होता है और प्रजा को भूखजन्य कष्ट उठाना पड़ता है।

अन्यदप्याह

मिथुनेऽर्केऽन्ननाशः स्याद्विन्ध्ये सिंहलके भयम्।

कान्यकुब्जे महापीडा कन्यकायां स्थिते * रवौ ॥ ६५ ॥

मिथुन के रवि में यदि कोई उत्पात होता है तब अन्न या फसलों का विनाश होता है और विंध्याचल के मध्य तथा सिंहल द्वीप में भयोत्पादन होता है। कन्या के सूर्य में उत्पात होने पर कान्यकुब्ज देश में बड़ी पीड़ा होती है।

*(*पाठान्तर 'ग' मातृका पृष्ठ ८- कन्यायां संस्थिते।)*

तुलावृश्चिकमकरोत्पातफलं

तौलिन्यर्क च दुर्भिक्षं देशभङ्गोऽथ पिङ्गले।

वृश्चिके च मृगे सूर्य्ये दुर्भिक्षं नर्मदातटे ॥ ६६ ॥

तुला के सूर्य में उत्पात पर दुर्भिक्ष पड़ता है एवं देशभङ्ग होता है। वृश्चिक के सूर्य में पिङ्गलदेश में और मकर के सूर्य में उत्पात होने पर नर्मदा के तटवर्ती देशों में दुर्भिक्ष पड़ता है।

धन्वघटस्योत्पातफलं

धनुष्यर्के विनश्यति देशाः कालिञ्जरादयः।

म(भ ?)द्रदेशस्य नाशः स्यात्कुंभेऽर्के स(श ?)स्यपीडनं ॥ ६७ ॥

इसी प्रकार यदि धनु राशि पर सूर्य के सङ्क्रमण काल में उत्पात होता है तब कालिञ्जर आदि देश का विनाश होता है। कुम्भ राशि के सूर्य में उत्पात पर मद्रदेश का विनाश जानना चाहिए। इसी प्रकार तृण का संकट खड़ा हो जाता है।

भृग्वास्तगुरोदयवृष्ट्यादीनां फलं

शुक्रस्यास्तमये वृष्टिरिज्ये चोदयमागते।

सञ्चरत्यवनीसूनौ वृष्टी मन्दे त्रिधा मता ॥ ६८ ॥*

शुक्रास्त के काल में वर्षा हो, वृहस्पति के उदय में मध्य वर्षा हो, मङ्गल व शनि के संचरण में उत्तम वर्षा हो, इस प्रकार तीन तरह से वर्षा का सङ्केत जानना चाहिए।

(पाठांतर- 'ग' मातृका, पृष्ठ ८, श्लोक ६७- शुक्रस्यास्तमयेदेवपूज्ये तूदयमागते। सञ्चरत्यवनीसूनौ वृष्टिर्भेदे त्रिधामता ॥)

रव्यादीनां सङ्क्रान्तिफलं

यदाकर्कस्य सङ्क्रान्तिरथवा मकरस्यसा।

भवत्यर्काकभौमानां वारेदुःख प्रदामता ॥ ६९ ॥

रवि, मङ्गल और शनिवार को यदि कर्क अथवा मकर की सङ्क्रान्ति हो तब दुखकारी जानना चाहिए।

दिवसकालेमुनीनोदयफलं

दिवोदितो यदा गस्त्यस्तदा भयकरः स्मृतः।

दुर्भिक्ष-व्याधिजनको लोकानां नात्र संशयः ॥ ७० ॥

यदि दिवस में अगस्त्य तारे का उदय होता है तो लोक के लिए भयकारी जानना चाहिए। यह दुर्भिक्ष करता है, इसमें कोई संशय नहीं है।

(वराहोक्ति है कि यदि अगस्त्य रूक्ष हो तो रोगकारी, कपिल वर्ण हो तो अवृष्टि, धूम्रवर्ण हो तो धेन्वादि के लिए अनिष्टकर, कम्पायमान हो तो भयकारी, रक्तवर्ण हो तो दुर्भिक्षकारी व युद्धोत्पादक तथा सूक्ष्म हो तो नगरावरोध करने वाले होते हैं। इसी प्रकार रजत या स्फटिक के समान दिखाई देने पर पृथ्वी को तृप्त करते है, अधिक धन-धान्य के साथ ही लोक को निरोग करते हैं- रोगान करोति परुषः कपिलस्त्ववृष्टिं धूम्रो गवामशुभकृस्फुरणो भयाय। माञ्जिष्ठरागासदृशः क्षुधमाहवांश्च कुर्यादणुश्च पुररोधमगस्त्यनामा॥ शातकुम्भसदृशः स्फटिकाभस्तर्पयन्निव महीं किरणाग्रैः। दृश्यते

यदि तदा प्रचुरान्ना भूर्भवत्यभयरोगजनाढ्या॥ बृहत्संहिता १२, २०-२१)

तिथिवृद्ध्यादीनां फलं

यदा याति वृद्धिं सिताख्यश्च पक्षस्तदा

यान्ति वृद्धिं नृपालोकसंघाः।

समा सौख्यदा हानिकारी तु हीना तथा

कृष्णपक्षे फलं व्यत्ययेना॥॥ ७१॥

शुक्लपक्ष में यदि तिथि बढ़ती हैं तब राजा और प्रजा की वृद्धि की दृष्टि से उत्तम होती है और यदि न घटती न ही बढ़ती है तो सुखकारी है। यदि तिथि का क्षय होता है तब दुखद जाने। इसी प्रकार यदि कृष्णपक्ष में तिथि बढ़ती है तब हानि होती है, घटती है तब सुख मिलता है। समान रहने पर समभाव जाने।

त्रयोदशदिवसपक्षस्यफलं

यदा च जायते पक्षस्त्रयोदश दिनात्मक।

भवे ह्लोकक्षयतोघोरा(डा ?)मुण्डमालायुता मही॥ ७२॥

यदि पक्ष तेरह दिन का ही हो तब लोक का क्षय जानना चाहिए, ऐसे में दुर्दान्त गतिविधियाँ उपजती हैं और मही मुण्डमाला धारण करती है अर्थात् हिंसक प्रवृत्तियों को बढ़ावा मिलता है।

इति नारदीय मयूरचित्रे द्वितीयोध्यायः॥ २॥

अथ चैत्रादिमासफलकथनम् तृतीयोऽध्यायः

अत्रैव मधुमासेफलवर्णनम्

अथान्यत्संप्रक्ष्यामि फलं योग समुद्भवम्।

मास-वार-तिथीनां च समं ज्ञानप्रकाशनम्॥ १॥

अब यहाँ चैत्रादि मास फल कहा जाता है। इसमें मासवार फल तिथियों के आधार पर कहा जाएगा।

प्रतिपद्यैसितेर्के

प्रतिपदि रविवारश्चैत्रमासे यदि स्यान्नभवति

बहुवृष्टिर्दुखिता लोकसङ्घाः।

अमृतकिरणवारेज्ञास्फुजिद्वाक्यती ना

भवति न न (? ननु) धरित्री सस्यतोयाभिपूर्णो॥ २॥

चैत्र मास में शुक्लपक्ष की प्रतिपदा को यदि रविवार हो तो पावसकाल में वर्षा अधिक नहीं होती, लोक में पर्याप्त दुःख होता है। यदि प्रतिपदा को सोम, बुध, वृहस्पति, शुकवार हो तो वर्षा खूब होती है, तृण पर्याप्त निपजता है।

(पाठान्तर- 'ग' मातृका, पृष्ठ ७- प्रतिपदि रविवारश्चैत्रमासे यदि स्यात्। न भवति बहुवृष्टिर्दुःखिता लोकसङ्घा॥ अमृतकिरणो जास्युजिद्दाक्षितानाम्। भवति ननु धरित्री सस्यतोयातिपूर्णा॥)

प्रतिपद्यैमन्दकुजौफलं

वारः स्यान्मन्दकुजयोस्तदा वृष्टिर्नजायते।

सस्यानि न प्ररोहन्ति विग्रहं यान्ति भूमिपाः॥ ३॥

इसी प्रकार यदि प्रतिपदा को शनिवार और मङ्गलवार हो तब तृण की पैदावार नहीं होती, राजाओं में विग्रह या क्लेश बढ़ता है।

चैत्रस्य कृष्णपक्षे वा पञ्चस्यां बुधवासरे।

भौमो वक्रगतिर्यांति घृततैल महर्घता॥ ४॥*

शाल्य(शाप्लभ ?)चैव गोधूमस्तदा यान्ति महर्घतां॥ ५॥

इसके अतिरिक्त चैत्र मास में कृष्णपक्ष में पञ्चमी व बुधवार को मङ्गल यदि वक्री होता है तब घी, तैल महंगे होते हैं। इसी प्रकार शालीधान्य या चावल तथा गेहूँ भी महंगा होता है।

सितस्यपञ्चम्यां वृष्टिफलं

चैत्रमासस्य शुक्लायां पञ्चम्या यदि वर्षणम्।*

वर्षाकाले तदा मेघा न वर्षन्ति जलं बहु॥ ६॥

चैत्र मास के शुक्लपक्ष की पञ्चमी को यदि वर्षा होती है तो यह जानना चाहिए कि वर्षाकाल में मेघ पर्याप्त नहीं, कम ही जल बरसाएँगे।

*(*प्रागुक्त मातृका में उक्त पङ्क्ति नहीं है।)*

एकराश्येगुरौशुक्रौ

गुरु-शुक्रौ यदैकत्र चैत्रमासे* व्यवस्थितौ।

तैलाज्यतिलसूत्राणां सङ्ग्रहे च कृते सति॥ ७॥

मास द्वये व्यतीते तु विक्रये लाभमादिशेत्॥ ८॥

चैत्र मास में यदि एक ही राशि पर वृहस्पति और शुक्र हों तब यह जानना चाहिए कि तेल, घी और कपास-सूत का संग्रह कर लें। यदि छह माह बाद इस संगृहीत सामग्री का बेचान किया जाएगा तो पर्याप्त लाभ होगा।

*(*पाठान्तर- तत्रैव- यदैकस्मिन् मासे चैत्रे)*

तिथिवृद्धिर्यदाकृष्णे

मधुमासे कृष्णपक्षे तिथिवृद्धिर्यदा भवेत्।

शुक्लपक्षस्यहानिः स्यादन्नहीना तदा मही॥ ९॥

चैत्र मास में कृष्णपक्ष में यदि तिथि की वृद्धि होती हैं और शुक्लपक्ष में घटती है, उस संवत्सर में पृथ्वी अन्न से रहित होती है।

सङ्क्रांत्यावृष्टिफलं

चैत्रे च रविसङ्क्रान्तौ यदि वर्षति वासवः।

वैशाखेमासि वा ज्येष्ठे तदा सस्य महर्घता॥ १०॥

चैत्र मास की सङ्क्रान्ति के दिन यदि वर्षा होती है, तो वैशाख अथवा ज्येष्ठ मास में घास-पूस महंगा हो जाता है।

सितेसप्तम्याघनफलकर्तव्यश्च

चैत्रमासस्य शुक्लायां सप्तम्यां दृश्यते घनः।

उद्धतावन्तिवातावै अथवा निर्मलादिशः॥ ११॥

चैत्र शुक्ला सप्तमी को दिन में यदि मेघ दिखाई देते हैं तो वर्षा काल में प्रचण्ड हवाएँ चलती हैं अथवा आकाश निर्मल दिखाई देता है।

तदा सङ्ग्रहणं कार्य्यं गोधूमस्य विपश्चितां।

विक्रीते श्रावणे मासे लाभश्च त्रिगुणोभवेत्॥ १२॥

इस प्रकार इस अवधि में गेहूँ आदि अनाज का संग्रह कर लिया जाना चाहिए। इसका श्रावण में बेचान से तीन गुना लाभ मिलता है।

पञ्चम्यामऽपियोगम्

पञ्चम्यामऽपि योगोयं चिन्तनीयो विचक्षणैः।

वर्षणं च त्रयोदश्यां तदादुर्भिक्षतो भयम्॥ १३॥

शेष जिस प्रकार यह सप्तमी का योग कहा गया है, वैसे ही पञ्चमी तिथि का योग भी जानना चाहिए। यदि तेरस के दिन वर्षा होती है तब दुर्भिक्ष का भय होता है।

पञ्चम्यारोहिण्यादीनां युतिफलं

पञ्चमी रोहिणीयुक्ता सप्तमीरौद्रसंयुता।

नवमीपुष्यसंयुक्ता स्वातियुक्ता च पूर्णिमा ॥ १४ ॥

भवत्यत्र यदा वृष्टिस्तदा प्रावृष्य वर्षणम् ॥ १५ ॥

इसी प्रकार चैत्र मास की पञ्चमी पर रोहिणी नक्षत्र हो और सप्तमी तिथि को आर्द्रा तथा नवमी को पुष्य हो और यदि इन्हीं दिनों में वर्षा होती है तब वर्षा काल रीता ही जाता है, ऐसा जानना चाहिए।

चैत्रे वा श्रावणेपञ्चवाराफलं

चैत्रे वा श्रावणेमासि यदा पञ्चारवासराः ।

राजानश्च क्षयं यान्ति मन्दादुर्भिक्षकारकः ॥ १६ ॥

नाशयन्ति प्रजा शुक्र-रवि सौम्या विनाशका ।

चंद्रा कल्याणजनका गुरवो जलघातकाः ॥ १७ ॥

जिस वर्ष चैत्र महीने या श्रावण में यदि पाँच मङ्गलवार पड़ते हों तब राजाओं का क्षय होता है। इसी प्रकार पाँच शनिवार हो तो दुर्भिक्ष का कारण बनता है। पाँच शुक्रवार हो तो प्रजा का नाश, पाँच रविवार अथवा पाँच बुधवार हो तो भी विनाशक जानना चाहिए। पाँच सोमवार हो तो कुशलकारी कहे जाते हैं और पाँच गुरुवार हो तो जल का क्षय करते हैं।

चैत्रस्यतृतीयाफाल्गुनस्यपञ्चम्यादीनां फलं

चैत्रमासि तृती(त्रिति ?)यायां पञ्चम्या फाल्गुने(णे ?) तथा ।

सप्तम्यां माघमासे च माधवे प्रथमेऽहनि ॥ १८ ॥*

चैत्र मास की तृतीया, फाल्गुन मास में पञ्चमी, माघ में सप्तमी और वैशाख मास में प्रतिपदा तिथि को यदि हवाएँ चलती हैं तो शुभकारक कही जाती है। इससे वर्षा ऋतु में वृष्टि होती है।

*(*प्रागुक्त मातृका में अन्त में निम्न पङ्क्ति से फल बताया गया है- वान्ति वाताश्च शुभदास्तदा प्रावृषि वर्णणम् ॥ पृष्ठ ८)*

इति नारदीय श्रीमयूरचित्रे चैत्रमासफलवर्णनोनाम तृतीयोऽध्यायः ॥

अथ वैशाखमासफलकथनम् चतुर्थोऽध्यायः

अत्रैव माधवस्यसितेपञ्चम्यमन्दवारफलं

माधवस्यसिते पक्षे पञ्चम्यां शनिवासरे।

भरण्यादि चतुष्केषु हस्ते भौमस्य वासरे॥ १॥

पिप्पलीनारिकेरञ्च ताम्रकांस्यं च पूगकम्।

रक्तवस्त्रं च सर्वाणि महर्घांति न संशयः॥ २॥

वैशाख मास के शुक्लपक्ष की पञ्चमी तिथि को शनिवार अथवा मङ्गलवार हो, भरणी, कृतिका, रोहिणी, मार्गशीर्ष या हस्त नक्षत्र हो तब पिप्पल, नारियल, ताम्बा व कांसा धातु, पूग या सुपारी रक्तवस्त्र- इन सभी द्रव्यवस्तुओं का भाव बढ़ता है, इसमें कोई संदेह नहीं जानना चाहिए।

त्रयोदशेभौमार्कवारफलं

वैशाखे च त्रयोदश्यां यदा भौमार्कवासरौ।

कृष्णा च शर्करानागवल्लीदुर्लभतां व्रजेत्॥

तथा महर्घतां याति सैधवं रक्तचंदनम्॥ ३॥

इसी प्रकार वैशाख मास की तेरस को यदि मङ्गलवार अथवा रविवार हो, तब पिप्पल, शक्कर, पान-ताम्बूल दुर्लभ हो जाते हैं अर्थात् महंगे हो जाते हैं। इसी प्रकार सैंधव नमक तथा लाल चंदन के भाव भी बढ़ जाते हैं।

अत्रैव वृष्टिगर्भलक्षणानि

वैशाखे शुक्लपञ्चम्या घनैराच्छादितं नभः।

गर्जनं *वारिवृष्टिर्वा तदा सस्य सङ्ग्रहः॥

कर्तव्यो भाद्रमासे तु विक्रीते लाभ सादिशेत्॥ ४॥

वैशाख शुक्ला पञ्चमी के दिवस को यदि आकाश मेघाच्छादित हों, मेघ गजरते हों या बरसते भी हों तब तृण का संग्रहकर यदि श्रावण में बेचान किया जाएगा तो उससे लाभ की प्राप्ति होगी।

*(*पाठान्तर- वारिवृष्टिश्च कर्तव्यो सस्यसङ्ग्रहः ॥)*

सितेप्रतिपदस्यघनफलं

वैशाखे शुक्ल प्रतिपद्दशमीवास्त्र(?-वृष्टि) संयुताः ।

भवत्यत्र न संदेहो प्रावृट्काले ह्यवर्षणम् ॥ ५ ॥

वैशाख शुक्ला प्रतिपदा के दिन अथवा दशमी तिथि को यदि बादल छाये हुए हों तब पावसकाल में वर्षा नहीं होगी, इसमें संदेह नहीं जानें।

इति नारदीये मयूरचित्रे वैशाखमासेफलवर्णन नाम चतुर्थोऽध्याय ॥ ४ ॥

अथ ज्येष्ठमासफलकथनम् पञ्चमोऽध्यायः

ज्येष्ठकृष्णाप्रतिपदस्यभौमार्कबुधफलं

ज्ये(जे ?)ष्ठ कृष्णप्रतिपदि भौमा-र्क-बुधवासराः।

यदा भवन्ति लोकानां तदा व्याधिभयं भवेत्॥ १॥

अब ज्येष्ठमास का फल कहा जा रहा है। यदि ज्येष्ठमास में कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा को मङ्गलवार, रविवार या बुधवार हो तो उस संवत्सर में लोक समुदाय में व्याधि और भय का संचरण जानना चाहिए।

प्रतिपदेमन्दवारफलं

ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदि यदि स्यान्मन्दवासरः।

छत्रभङ्ग प्रजापीडा दुर्भिक्षं च तदादिशेत्॥ २॥

ज्येष्ठमास के शुक्लपक्ष की प्रतिपदा को यदि शनिवार पड़ता हो तो उस वर्ष छत्रभङ्ग होता है और प्रजा में पीड़ा के साथ ही अकाल की आशंका रहती है।

बुधदीनां वारफलं

ज्येष्ठाद्ये बुधवासरश्चैवद्वर्षेत्वागामिके भयम्।

तत्र चेन्मन्दवारः स्यात्तदा युद्धाकुला धरा॥ ३॥

ज्येष्ठमास की प्रतिपदा को यदि बुधवार हो तब आगामी संवत्सर में भय की वृद्धि होती है और यदि शनिवार पड़ता है तब पृथ्वी पर युद्ध की आशंका जाननी चाहिए।

अत्रैव वृष्टिगर्भलक्षणानि

ज्येष्ठमासे दर्शतिथौ रात्रौ मेघः प्रदृश्यते।

दिवसे वाय्यना * वृष्टिर्जायते नात्र संशयः॥ ४॥

ज्येष्ठ की अमावस को यदि दिवस या रात्रि में आकाश में बादल दिखाई दें तो वर्षा काल में बरसात नहीं होगी, इसमें संशय नहीं करना चाहिए।

*(*पाठान्तर- तत्रैव पृष्ठ ८- वात्वना)*

अन्यदप्याह

ज्येष्ठस्य कृष्णप्रतिद्युतास्याद्भानुना यदि।

वाति वातास्तदोग्रा वै *भौमेन व्याधिमादिशेत्॥ ५॥

ज्येष्ठ कृष्णा प्रतिपदा को यदि सूर्यवार हो तो प्रचण्ड हवाएँ चलती हैं और यदि मङ्गलवार हो तब अगले संवत्सर में व्याधि, पीड़ा जाननी चाहिए।

*(*पाठान्तर- तत्रैव- भौमेनाधिः प्रजायते॥)*

प्रतिपदस्यबुधफलं

चन्द्रपुत्रेण दुर्भिक्षं गुरुणा सस्यसम्पदः।

भार्गवेण सुवृष्टिः स्याच्छशिनान्ना(स्त्रा ?)कुला धरा॥ ६॥

ज्येष्ठ कृष्णा प्रतिपदा को यदि बुधवार हो तो दुर्भिक्ष का कारण बनता है, वृहस्पतिवार हो तब तृण खूब होता है, शुक्रवार हो तो सुवृष्टि, सोमवार हो तो पर्याप्त अन्न उपजता है।

प्रतिपदमन्दवासरफलं

शनिना च प्रजानाशश्छत्रभङ्गो ह्यवर्षणम्।

जायते नात्र संदेहः कर्तव्यो देवचिन्तकैः॥ ७॥

इसी प्रकार यदि ज्येष्ठ कृष्णा प्रतिपदा को शनिवार हो तो प्रजा का नाश एवं छत्रभङ्ग होता है। वर्षा भी नहीं होती, इसमें संदेह नहीं करते हुए दैवज्ञों को कथन करना चाहिए।

ज्येष्ठार्द्रादितिपुष्यफलं

ज्येष्ठमासे नवर्क्षाणि रौद्रादीति(?-नि) विलोकयेत्।

निरभ्रैर्जलसम्पतिः साभ्रैर्ज्ञेयमवर्षणम्॥ ८॥

ज्येष्ठ मास में यदि आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य इत्यादि नौ नक्षत्रों में मेघाच्छादित आसमान दिखाई दे तो वर्षा नहीं होती है और यदि आसमान साफ हों तब अच्छी वर्षा होती है।

सितस्य सप्तम्याघनफलं

ज्येष्ठस्यशुक्ल(सुप्तु ?) सप्तम्यां श्रूयते घन गर्जितम्।

मेघच्छन्नन्नभो वापि वायुर्वहति दक्षिणः।

तिलस्य सङ्ग्रहः कार्य्योविक्रीते कार्तिकेधनम्॥ ९॥

ज्येष्ठ शुक्ला सप्तमी को यदि मेघों की गर्जना हो या गगन मेघाच्छन्न रहे तथा दक्षिण की हवाएँ चलें तो तिल धान्य का संग्रह कर लेना चाहिए। कार्तिक मास में इसकी बिक्री स धनलाभ होता है।

श्रावणेधनिष्ठामेघफलं

श्रावणेर्क्षे धनिष्ठायां यदा मेघः *प्रतिष्ठितः।

प्रावृट्काले तदाऽवृष्टि(र्घर्मो वृष्टि) निरोधकः॥ १०॥

ज्येष्ठमास में श्रवण नक्षत्र या धनिष्ठा नक्षत्र में बना बनाया मेघ चला जाए तो वर्षा काल में अवश्य वर्षा होती है और यदि उक्त दोनों नक्षत्रों में ज्येष्ठ में वर्षा होती है तो पावसकाल रीता ही जाएगा।

(पाठान्तर- तत्रैव- प्रवर्षति)

पूर्णमास्यामावयाघनफलोक्तिं

पूर्णिमायाममायां वा(?ञ्च) ज्येष्ठे *व्योमान्वितं घनैः।

दिवा वा यदि वा रात्रौ तदा ज्ञेयमवर्षणम्॥ ११॥

ज्येष्ठ की पूर्णिमा या अमावस को यदि दिन अथवा रात्रि में बादल दिखाई देते हों तो पावसकाल में वर्षा नहीं होगी।

*(*पाठान्तर- तत्रैव, पृष्ठ ९- व्योमाधितं)*

इति मयूरचित्रेज्येष्ठमासफलकथने नाम पञ्चमोऽध्यायः॥ ५॥

अथाषाढमासफलकथनम् षष्ठोऽध्यायः

अत्रैवाषाढे वृष्टिगर्भलक्षणानि

आषाढमासे सितपक्षपञ्चमी रव्यादिवारेषु यथाक्रमेण।

अत्यल्पवृष्टिर्विपुला च *वृष्टियुद्धं शुभं क्षेमसुखे च नाशः ॥ १ ॥

आषाढ़ शुक्ला पञ्चमी तिथि को रविवार के क्रम से निम्नानुसार संवत्सर फल जानना चाहिए-

वार	रवि	सोम	मङ्गल	बु	गु	शु	श
फल	अल्पवृष्टि	अतिवृष्टि	युद्ध	शुभ	कुशल	सुख	विनाश

*(*पाठान्तर- तत्रैव, पृष्ठ ९- वृष्टिः युश्शुभंक्षेत्रमसुखेचिनाशनम् ॥)*

सितेपञ्चम्यासुवारफलं

आषाढे शुक्लपञ्चम्यां शुभवारे शुभेक्षिते।

संपूर्णा निखिला धात्री धन-धान्याकुला धरा ॥ २ ॥

आषाढ़ शुक्ला पञ्चमी को यदि शुभवार हो और उस पर शुभग्रह की दृष्टि हो तो पृथ्वी पर सर्वत्र धन-धान्य की वृद्धि होती है।

क्रूरवार वा क्रूरग्रहफलं

क्रूरग्रह युतेवारे लग्नेक्रूरेक्षिते तथा।

दुर्भिक्षं-मरणं व्याधिश्चौरवाधासतां सदा ॥ ३ ॥

आषाढ़ शुक्ला पञ्चमी को क्रूर वार हो तथा क्रूर ग्रह निकट हो, उस पर भी क्रूर ग्रह की दृष्टि पड़ती हों तो दुर्भिक्ष पड़ता है। मृत्यु, रोग, चोरादि उत्पातियों से सज्जनों को कष्ट पहुँचता है।

कृष्णपक्षस्य पञ्चम्याघनं

आषाढे कृष्णपक्षे च ह्यष्टम्यां रजनीपतिः।

***मेघः मध्ये च संयाति तदा पृथ्वीजलाकुला ॥ ४ ॥**

इसी प्रकार आषाढ़ में कृष्णपक्ष की पञ्चमी को यदि बादलों की ओट में चंद्रमा दिखाई दें तब प्रचुर वर्षा का योग बनता है।

*(*पाठान्तर- तत्रैव- दृश्यते मेघमध्ये तु तदा पृथ्वी जलाप्लुता।)*

अन्येषां शशिलाञ्छनछिद्रफलञ्च

तस्यामेव * यदा रात्रौ निर्म्मलः शशिलाञ्छनः।

दृश्यते छिद्रसंयुक्तास्तदा वाच्यमवर्षणम् ॥ ५ ॥

आषाढ़ की कृष्ण पक्ष की पञ्चमी को ही यदि रात्रि में चंद्रमा निर्मल हो और उसमें छिद्र दिखाई देता हो तब यह कहना चाहिए कि वर्षा नहीं होगी।

पूर्णमास्यावृष्टिफलं

आषाढ्यां पूर्णिमायां च यदा वृष्टिस्त जायते।

मासमेकं महर्घस्या ततः पश्चात्सुर्भिक्षकृत् ॥ ६ ॥

आषाढ़ की पूर्णिमा को यदि वर्षा का योग बने तो एक मास तक अन्न महंगा होगा, बाद में सस्ता व सुभिक्ष होगा।

*(* उक्त मातृका में यह श्लोक यहाँ नहीं है।)*

निर्मलरविमण्डलफलं

आषाढेकृष्णपक्षे तु निरभ्रे रविमण्डलैः।

***न च वारि प्रवर्षन्ति प्रावृट्काले तदा घनाः ॥ ७ ॥**

आषाढ़ में कृष्णपक्ष में यदि सूर्यमण्डल निर्मल दिखाई दें अर्थात् बादल नहीं हो तो यह जानना चाहिए कि पावसकाल में वर्षा का योग नहीं बनेगा।

*(*पाठान्तर- तत्रैव, पृष्ठ १०- न वारिदाः प्रवर्षन्ति तदा प्रावष्यवर्षणम् ॥)*

सितस्यपञ्चम्यां परतवातफलं

आषाढेशुक्ल पञ्चम्यां पश्चिमो यदि मारुतः।

यदि वा दृश्यते चापमैन्द्रस्याद्वारिवर्षणम् ॥ ८ ॥

आषाढ़ शुक्ला पञ्चमी को यदि पश्चिम की हवाएँ चलें अथवा आकाश में इन्द्रधनुष दिखाई देतो वर्षा होती है।

तदासङ्ग्रहणं कार्य्यं सस्यानां लाभमिच्छता:।

विक्रीते कार्तिकेमासि निश्चितं लाभमादिशेत्॥ ९॥

उक्त काल में लाभ की अभिलाषा से तृण संग्रह का कार्य कर लिया जाना चाहिए। इस घास की मांग कार्तिकमास में रहती है, यह उचित लाभ दिलाती है।

स्वाति विद्युतवृष्टिश्च फलं

***आषाढे स्वातिनक्षत्रे सविद्युदपवर्षणम्।**

तदा स्यादन्ननिष्पत्तिस्तोय पूर्णा वसुन्धरा॥ १०॥

आषाढ़ महीने में यदि स्वाती नक्षत्र में बिजली चमके और वर्षा होती है, तो अन्नादि फसलों की अच्छी बढ़त होती है और धरती जल से परिपूर्ण हो जाती है।

*(*पाठान्तर- तत्रैव- आषाढे स्वातिनक्षत्रे सविद्युत्तोयवर्षणम्। तदा स्यादन्ननिष्पत्ति: पृथ्वी स्याद्वारिसङ्कुला॥)*

त्रिकालस्यरविमण्डलेघनेफलं

उदये वाऽथ मध्याह्ने संध्यायां सूर्यमण्डले।

मेघच्छन्नन्न शुभदन्नवम्यां च शुचौ सिते॥ ११॥*

आषाढ़ शुक्ला नवमी के दिन सुबह, मध्याह्न काल में अथवा संध्या के समय सूर्य के आसपास बादल मण्डराते हुए दिखाई देते हैं, तो शुभ नहीं माने जाते।

*(*उक्त मातृका में इसके बाद निम्न श्लोक है- आषाढे मासि सङ्क्रान्तौ यदि वर्षति वारिद:। तदा व्याधिभयं विद्याच्छ्रावणे शोभनं भवेत्॥)*

तृतीयादीनां आर्द्राफलं

वह्नि$_{३}$वेदा$_{४}$ष्टा$_{८}$त$_{९}$मेन्द्र$_{१४}$विंश$_{२०}$त्सङ्ख्यासु भास्करः।

तिथिष्वार्द्रोय यदादि(?-याति) कष्टदः शेषके शुभः॥ १२॥

आषाढ़ में तृतीया, चतुर्थी, अष्टमी, नवमी और चतुर्दशी तिथियों पर यदि आर्द्रा

नक्षत्र हो तो कष्टकारी होता है, शेष तिथियाँ शुभ मानी गई है।

सूर्यभौमशनिसंयुतफलं

रवौ-भौमे तथा मन्देते(?-रौ)द्र संयाति भास्करः।

तदा न(?त्व) शुभदाः प्रोक्तः शुभदः शेषवासरे॥ १३॥

आषाढ़ में रविवार, मङ्गलवार और शनिवार को यदि आर्द्रा पर सूर्य हो तो शुभ नहीं होता, शेष वारों में शुभ होता है।

भरण्यादीनां फलं

यमा-ग्नि-शा-हि-मूलें-द्र-पितृवारिभवे रविः।

यात्यांद्रीमशुभः प्रोक्तः शेषर्क्षेशुभदः स्मृतः॥ १४॥

आषाढ़ में भरणी, आर्द्रा, कृतिका, मूल, ज्येष्ठा, अश्लेषा और मघा नक्षत्रों में यदि आर्द्रा पर सूर्य हो तब शुभ नहीं जानें, अन्य नक्षत्रस्थ सूर्य शुभ होता है।

मूलादीनार्द्रार्के युतिफलं

मूले-गण्डे-व्यतीपाते-व्याघाते-परिघे शिवे।

वैधृतो चातिगण्डे च आर्द्रांयात्यशुभोरविः॥ १५॥

मूल, मण्ड, व्यतीपात, व्याघात, परिघ, शिव, वैधृति और अतिगण्ड- इन योगों पर यदि आर्द्रा पर सूर्य हो तो अशुभ जानना चाहिए, अन्य पर हो तो शुभ जानें।

आर्द्रार्केविलम्बेवृष्टिज्ञानं

आर्द्राप्रवेशेवृष्टिश्चेत्सार्द्धमासम वर्षणम्॥ १६॥

आर्द्रा नक्षत्र पर सूर्य के आते ही यदि वर्षा हो जाए तो डेढ़ मास तक वर्षा में विलम्ब होता है।

दिवार्द्राफलं

दिवार्द्रां यतिचोद्भानुर्जलभक्षणकारकः।

जगत्क्षेम करो रात्रौ बहुसस्य जलप्रदः॥ १७॥

दिन में आर्द्रा पर सूर्य का आगमन हो तो जल का शोषक जाने और यदि रात्रि में आगमन हो तो तृणोत्पादक जानना चाहिए।

कृष्णपक्षेशशिरोहिण्याफलं

आषाढमासे खलु कृष्णपक्षे प्रवेशनक्षत्रमुपागते विधौः।
शुभाशुभं सर्व्वफलम्विचिंत्यम्मुनि प्रणीतं ग्रहे चिंतकेन॥ १८॥

आषाढ़ के कृष्णपक्ष में जब चंद्रमा रोहिणी पर आता है, तब ज्योतिषियों को चाहिए कि वे वर्षा के शुभाशुभ पर विचार कर कथन करें।

पशवचेष्टायां फलकथनं

संध्यायां स्युरतोविशेच्चनगरे कृष्णः पशुर्वा वृषः
पूर्णवृद्धिकरोसिता च सुरभिः सौख्यप्रदा प्राणिना।
श्वेतावृष्टि विघातिनी च कपिलावातप्रदा पाटला
सस्य ध्वंसकरी तथैव शवली मध्याफले कीर्तिताः॥ १९॥

उक्त योग में संध्या काल में चरगाह या वन से लौटे पशुओं को देखें और विचारें कि उनमें से यदि श्याम वर्ण वृषभ सबसे आगे होकर नगर प्रवेश करता है तो अन्नादि की वृद्धि होती है। इसी प्रकार काली गाय सबसे पहले प्रवेश करे तो सुख होगा, श्वेत गाय का प्रवेश हो तो वृष्टिकारक जानें, कपिला गाय प्रवेश करे तो पवन चलेगा, रक्त व श्वेत दोनों ही वर्ण की हो तब तृण का नाश और शबली या चितकबरी गाय का सर्वप्रथम प्रवेश होता देखें तो मध्यम फल जानना चाहिए।

रोहिणीविद्युतवृष्टिफलं

रोहिण्यर्क्षे यदाऽऽषाढे विधुद्वारि प्रवर्षणम्।
रोधितञ्च घनैर्व्योम तदा सर्व्वं शुभं भवेत्॥ २०॥

आषाढ़ मास में यदि रोहिणी नक्षत्र को बिजली चमके और पानी बरसे अथवा आसमान मेघों से रहित हो तो सब ऋतुओं से शुभ जानना चाहिए।

न वृष्ट्या न पूर्वोत्तरानिलफलं

न तत्र वारिपतन्न च पूर्वोत्तरानिलौ तदा।

कालोतिघोरः स्यात्प्राणिनान्नात्र संशयः ॥ २१ ॥

आषाढ़ में यदि रोहिणी नक्षत्र के योग में वर्षा नहीं हो और पूर्व व उत्तर की हवाएँ चलें तो ऋतु को शुभ नहीं जानना चाहिए। यह योग प्राणियों के लिए भयकारक होता है, इसमें कोई संदेह नहीं।

चंद्रेरोहिणीवात फलं

प्राजापत्यर्क्षगे चंद्रे पूर्वाह्ले वाति मारुतः।

शुभदाः शुभमादेश्यं वृष्टिः श्रावण-भाद्रयोः ॥ २२ ॥

आषाढ़ में सोमवार युक्त रोहिणी नक्षत्र में दस घड़ी का दिन चढ़े तब यदि हवाएँ चलें तो शुभ फल देने वाली होती है और वे सावन-भादौं में वर्षा का योग बनाती हैं।

अन्यदप्याह

अह्नस्तु पश्चिमे भागे पश्चिमौ द्वौ प्रवर्षतः।

मध्याह्ने वाति वायुश्चेन्मध्यौ मासौ जलप्रदौ ॥ २३ ॥

इसी प्रकार यदि रोहिणी नक्षत्र के दिन दोनों पिछले प्रहरों में वर्षा हो तथा दोपहर काल में पवन चलती हों तब भी श्रावण-भादौं में अवश्य वर्षा होगी, यह जानना चाहिए।

निखिलदिवसस्यवायुफलं

समस्तं दिवसं वाति यदा वायु शुभप्रदः।

श्रवणादिषु मासेषु तदा सम्पतिरुत्तमा ॥ २४ ॥

उक्त दिन ही यदि समस्त ओर से भी पवन बहता रहे तब भी शुभ जानना चाहिए। इससे श्रावणादि मास में उत्तम संपति, समृद्धि का योग बनता है।

अन्यदप्याह

वाति चेदशुभो वायुर्व्यत्मासेन फलम्वदेत्।

तत्र *यो बलवान्वायुस्तस्माद्द्रेभं शुभाशुभम्॥ २५ ॥

उक्त दिवस ही यदि अशुभकारी पवन भी बहे तो पूर्व कथित शुभ फलों को विपरीत जानना चाहिए। यदि अनेक प्रकार की पवन भी चलें तो उसके बलादि को देखकर फल कथन करना चाहिए।

*(* उक्त मातृका में यह पङ्क्ति खण्डित है।)*

रोहिण्याचंद्रवारे सुमारुतफलं

प्र(ा)जेश नक्षत्रगते *कलाविधौ

शुभास्तु वाता गगनश्च निर्मलम्।

मृगाः खगाः शान्तिदिगानना यदा

नन्दन्ति लोका सुखिनस्तदा च (स्युः)॥ २६ ॥

रोहिणी नक्षत्र और सोमवार को यदि शुभ पवन का प्रवाह होता दीखे और आसमान निर्मल हो, पशु-पक्षी शांत दिशा की ओर उन्मुख हो तब लोक में आनंद की व्याप्ति तथा अन्नादि की समृद्धि होती है।

*(*पाठान्तर- तत्रैव- सुधानिधौ)*

वारिदरूपफलम्

ओतुप्रेतश्वादिकाकानुरूपाश्छिन्ना

भिन्ना वाग्विहीनातिरुक्षाः।

उष्ट्राकारा वानराकारदेहा मेघाः

प्रोक्ताः दुःखदा वै प्रजानाम्॥ २७॥*

बादलों के रूपानुसार फल कहा ज़ा रहा है कि बिलाव, प्रेत, श्वान, काक के आकार, छिन्न-भिन्न विद्युत रहित, पर्याप्त रुक्ष तथा ऊंट या वानर की देह के समान दिखाई देने वाले मेघ प्रजा को दुःख देने वाले होते हैं।

*(*पाठान्तर- तत्रैव- ओतप्रोतमेषकानुरूपा छिन्ना भिन्ना वाग्विहीनातिरुक्षाः। उष्ट्राकारा वानरप्रख्यदेहा मेघाः प्रोक्ता दुःखदा वै प्रजानाम्॥)*

माञ्जिष्ठा-शुक-कौशेय स्वर्णक्रौञ्च समप्रभाः।

आच्छिन्नमूलाः सुस्निग्धाः शुभदाः *सजलाघनाः॥ २८॥

इसी प्रकार मंजीठा, रेशमी वस्त्र, स्वर्ण या क्रौञ्च पक्षी के समान दिखाई देने वाले बादल जो कि कटे-फटे न हो, सुस्निग्ध हों वे सजल होते हैं और शुभफल देने वाले होते हैं।

*(*पाठान्तर- तत्रैव- गर्जन्तो घनाः॥)*

अत्रैव कोणानुसारमरुतफलम्

शाक्राद्भूतैर्मारुतैर्वारिवृष्टिः

पृथ्वी सस्यव्यावृताऽऽनन्दयुक्ताः।

वह्न्युद्भूतौर्वह्निकोपोऽऽन्न नाशो

याम्यैरन्नं क्षीयतेर्राक्षसौत्थैः॥ २९॥*

आषाढ़ में पूर्व दिशा की पवन चलती हो और वर्षा होती है तब घास की पैदावार अच्छी जानना चाहिए। यदि आग्नेय कोण की पवन बहे तो अग्निकोप, दक्षिण की पवन हो तो अन्न का विनाश, पश्चिम की हवा चले तो सुवृष्टि, वायव्य की पवन हो तो हवाओं के साथ वृष्टि, उत्तर की पवन हो तो वृष्टि के साथ तृणोत्पादन और ईशान कोण की पवन चले तो लोगों का शोक दूर करने वाली होती है।

*(* यह श्लोक इस रूप में भी उपलब्ध होता है- शाक्रोद्भूतैर्मारुतैमेघसङ्घैः पृथ्वी सस्यव्यापृताऽऽनंदयुक्ता। वह्न्युद्भूतैर्मारुतैर्वह्निकोपोऽन्ननाशो याम्यैरन्नं क्षीयते राक्षसोत्थैः॥ तथैव पृष्ठ १२; इसके साथ ही ये पङ्क्तियाँ भी मिलती हैं- पश्चाज्जातैर्वारिवृष्टिः समग्रा वाय्युद्भूतैर्वातभूकम्पदिग्दाहवातयुक्ता च वृष्टिः। वृष्टिः सस्यं सौम्यकाष्ठासमुत्थे ऐशे लोका वीतशोका भवन्ति॥ तथैव)*

उल्कानिर्घातकंपादीनां

उल्का-निर्घात-भूकम्प-दिग्दाहाशनि-विद्युतः।

नादामृगाणां सङ्ग्राह्यास्तथैवांबु धरास्तदा॥ ३०॥

आषाढ़ मास में उल्कापात, निर्घात, भूकम्प, दिग्दाह, गर्जना और विद्युत पर

विचार करना चाहिए। इसी प्रकार पशुओं के स्वरों पर भी विचार कर धरा पर जलवर्षणादि जानना चाहिए।

अत्रैव रोहिणीयोगाद् भाविवार्षिकवृष्टेः पूर्वानुमानम्

दक्षिणेन यदा याति रोहिण्यां रोहिणीपतिः * ।

दूरस्थो निकटस्थो वा जगत्कष्टप्रदायकः ॥ ३१ ॥

यदि आषाढ़ मास में चंद्रमा रोहिणी नक्षत्र के दक्षिण या दाहिनी ओर से होकर पास या दूर विचरण करता है, तो जगत के लिए कष्टकारी सिद्ध होता है।

(पाठांतर- 'ग' मातृका संख्या ३४३३२ पर पृष्ठ ११, श्लोक ६७- रजनीकरः)

अन्यदप्याह

उतरस्यां यदा * याति रोहिण्यां रोहिणीपतिः ।

सोपसर्गा तदावृष्टिरस्पृशन् सुखिनो जनाः ॥ ३२ ॥

इसी प्रकार यदि चंद्रमा रोहिणी से उत्तर या वाम ओर से होकर जाता है तब उत्पात होता है तथा दूर होकर गमन करने पर लोक का सुख जानना चाहिए।

(पाठांतर- 'ग' मातृका, श्लोक ६८- स्पृशन्)

अन्यदप्याह

रोहिणीश(स ?)कटमध्यगः शशी

शोकरोगभय दुःखदः स्मृतम्।

शीतरश्मिमनुयाति रोहिणी

कामिनो हि वशगास्तदाङ्गनाः ॥ ३३ ॥

शकट के आकार वाले रोहिणी नक्षत्र के मध्य में यदि चंद्रमा गमन करता है तब शोक, रोग, भय और दुःख को देने वाला होता है। यदि रोहिणी के पीछे हो अथवा अथवा आगे हो तो स्त्रियाँ कामियों के वशीभूत होती हैं।

अन्यदप्याह

रोहिण्याः पृष्ठतो याति यदा कुमुदिनीपतिः ।

कामिनीनां वशं यान्ति नराः कामप्रपीडिताः ॥ ३४ ॥

इसी प्रकार यदि चंद्रमा पीछे और रोहिणी आगे हो तब कामी पुरुष स्त्रियों के वशीभूत हो जाते हैं।

अन्यदप्याह

वह्नेर्दिशि भयमतुलं नैर्ऋत्यां दुःखसंयुताः लोकाः।

ईशानस्थे चंद्रे सुखबाहुल्य च मध्यमं वाते॥ ३५ ॥

आषाढ़ में रोहिणी नक्षत्र के दिन यदि रोहिणी से चंद्रमा अग्निकोण में हो तो अतिभय बहुत व्याप्त होता है, नैर्ऋत्यकोण में हो लोक में दुःख, ईशान में हो तब सुखवृद्धि तथा वायव्य में हो तब मध्यम फल जानना चाहिए।

स्पष्टार्थचक्र

दिशा/कोण	**फलाफल**	**दिशा/कोण**	**फल**
आग्नेय	अतिभय	नैर्ऋत्य	दुखप्राप्ति
वायव्य	मध्यमफल	ईशान	सुखवृद्धि

अन्यदप्याह

धरणीसुतोमन्दरहितः कान्तियुतश्चन्द्रमाविनोत्पातः।

शुभदश्च सर्वजगतो यदि सूर्य्यस्तीक्ष्णरश्मिः स्यात्॥ ३६ ॥

उसी काल में यदि शनि और मङ्गलवार से रहित चंद्रमा उत्पात बिना ही दिखाई देता हो, दिन में सूर्य यदि प्रचण्ड तपता हो तो सर्वजगत के लिए हितकारी जानना चाहिए।

अत्रैव स्वातियोगाद्वृष्ट्यादेः पूर्वानुमानम्

यत्फलं योगिनीयोगे तत्स्वात्यामपि चिन्तयेत्॥ ३७ ॥

आषाढ़ महीने में जो फल पूर्वानुसार रोहिणी नक्षत्र से देखा गया है, वही स्वाती नक्षत्र के सन्दर्भ में भी जानना चाहिए।

स्वातियोगोऽपि

विचार करना चाहिए। इसी प्रकार पशुओं के स्वरों पर भी विचार कर धरा पर जलवर्षणादि जानना चाहिए।

अत्रैव रोहिणीयोगाद् भाविवार्षिकवृष्टेः पूर्वानुमानम्

दक्षिणेन यदा याति रोहिण्यां रोहिणीपतिः *।

दूरस्थो निकटस्थो वा जगत्कष्टप्रदायकः ॥ ३१ ॥

यदि आषाढ़ मास में चंद्रमा रोहिणी नक्षत्र के दक्षिण या दाहिनी ओर से होकर पास या दूर विचरण करता है, तो जगत के लिए कष्टकारी सिद्ध होता है।

(पाठांतर- 'ग' मातृका संख्या ३४३३२ पर पृष्ठ ११, श्लोक ६७- रजनीकरः)

अन्यदप्याह

उतरस्यां यदा * याति रोहिण्यां रोहिणीपतिः।

सोपसर्गा तदावृष्टिरस्पृशन् सुखिनो जनाः ॥ ३२ ॥

इसी प्रकार यदि चंद्रमा रोहिणी से उत्तर या वाम ओर से होकर जाता है तब उत्पात होता है तथा दूर होकर गमन करने पर लोक का सुख जानना चाहिए।

(पाठांतर- 'ग' मातृका, श्लोक ६८- स्पृशन्)

अन्यदप्याह

रोहिणीश(स ?)कटमध्यगः शशी

शोकरोगभय दुःखदः स्मृतम्।

शीतरश्मिमनुयाति रोहिणी

कामिनो हि वशगास्तदाङ्गनाः ॥ ३३ ॥

शकट के आकार वाले रोहिणी नक्षत्र के मध्म में यदि चंद्रमा गमन करता है तब शोक, रोग, भय और दुःख को देने वाला होता है। यदि रोहिणी के पीछे हो अथवा अथवा आगे हो तो स्त्रियाँ कामियों के वशीभूत होती हैं।

अन्यदप्याह

रोहिण्याः पृष्ठतो याति यदा कुमुदिनीपतिः।

कामिनीनां वशं यान्ति नराः कामप्रपीडिताः ॥ ३४ ॥

इसी प्रकार यदि चंद्रमा पीछे और रोहिणी आगे हो तब कामी पुरुष स्त्रियों के वशीभूत हो जाते हैं।

अन्यदप्याह

वह्नेर्दिशि भयमतुलं नैर्ऋत्यां दुःखसंयुताः लोकाः ।
ईशानस्थे चंद्रे सुखबाहुल्य च मध्यमं वाते ॥ ३५ ॥

आषाढ़ में रोहिणी नक्षत्र के दिन यदि रोहिणी से चंद्रमा अग्निकोण में हो तो अतिभय बहुत व्याप्त होता है, नैर्ऋत्यकोण में हो लोक में दुःख, ईशान में हो तब सुखवृद्धि तथा वायव्य में हो तब मध्यम फल जानना चाहिए।

स्पष्टार्थचक्र

दिशा/कोण	फलाफल	दिशा/कोण	फल
आग्नेय	अतिभय	नैर्ऋत्य	दुखप्राप्ति
वायव्य	मध्यमफल	ईशान	सुखवृद्धि

अन्यदप्याह

धरणीसुतोमन्दरहितः कान्तियुतश्चन्द्रमाविनोत्पातः ।
शुभदश्च सर्वजगतो यदि सूर्य्यस्तीक्ष्णरश्मिः स्यात् ॥ ३६ ॥

उसी काल में यदि शनि और मङ्गलवार से रहित चंद्रमा उत्पात बिना ही दिखाई देता हो, दिन में सूर्य यदि प्रचण्ड तपता हो तो सर्वजगत के लिए हितकारी जानना चाहिए।

अत्रैव स्वातियोगाद्वृष्ट्यादेः पूर्वानुमानम्

यत्फलं योगिनीयोगे तत्स्वात्यामपि चिन्तयेत् ॥ ३७ ॥

आषाढ़ महीने में जो फल पूर्वानुसार रोहिणी नक्षत्र से देखा गया है, वही स्वाती नक्षत्र के सन्दर्भ में भी जानना चाहिए।

स्वातियोगोऽपि

सप्तम्यां माघमासे यदि पतति हिमं स्वातिनक्षत्रयोगे

चंद्रार्कौरश्मिहीनौ जलधरसहितौ वाति वातः प्रचण्डः।

विद्युद्युक्तन्नभो वा यदि भवति तदा सर्वसस्यैरुपेता

पृथ्वी स्याद्वारिपूर्णा मुदितजनपदा हृष्टलौकेश्च युक्ता * ॥ ३८ ॥

आषाढ़ में यदि स्वाती नक्षत्र व सप्तमी को हिम-कुहिर पड़े, आकाश मेघाच्छन्न हो तथा कुहिर से सूर्य-चंद्रमा आच्छादितकर किरणों से हीन हो जाए एवं भवनादि भी ढके हुए दिखाई देने लगे तब यह जानना चाहिए कि वर्षाकाल में प्रचण्ड हवाएँ चलेंगीं। यदि उक्त योग में कुहिर नहीं हो तो अच्छे बादल होंगे, बिजलियाँ चमकती हों तो पृथ्वी जल से पूर्ण होंगी तथा जनता मुदित, लोक समुदाय पुष्ट हो सकेगा।

(पाठांतर- 'ग' मातृका- सर्वलोकश्च युक्ता॥)

श्रावणे फाल्गुने(णे ?) मासे चैत्र-वैशाखयोरपि।

आषाढे स्वातियोगोऽयं विचार्य्यो दैवचिन्तकैः ॥ ३९ ॥

यहाँ यह ज्ञातव्य है कि यह विचार आषाढ़ सहित श्रावण, फाल्गुन, चैत्र और वैशाख मास में किया जाना चाहिए।

पूर्णमास्यां सूर्यास्तकालिकवायुगतिपर्यवेक्षणानि

आषाढमासस्य च पूर्णिमायां(? पौर्णमास्यां)

सूर्या(ि?)स्तकाले यदि वाति वातः।

पूर्वस्तदा सस्ययुता धरित्री

नन्दतिलोकाः सजला घना स्युः ॥ ४० ॥

आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा को संध्याकाल में यदि पूर्व की पवन चले तो वर्षा होती है, तृणादि की अच्छी पैदावार होती है। धरती पर आनंद का सृजन होता है व धरती जल से परिपूर्ण दिखाई देने लगती है।

*(*पाठान्तर 'ग' मातृका में श्लोक ७७- आषाढमासस्य च पौर्णमास्यां सूर्यास्तकाले यदि वाति वायुः। पूर्वस्तदा सस्ययुता च मेदिनी नन्दन्ति लोका जलदायिनी घना॥)*

वह्निकोणयाम्यादिशिवातफलं

कृशानुवाते मरणं प्रजानांमन्नस्य-

नाशः खलु वृष्टिनाशः।

***याम्ये मही सस्यविवर्जिता स्यात्**

परस्परं यान्ति नृपा विनाशनम्॥ ४१॥

इसी प्रकार यदि आग्नेयकोण की पवन बहती है तब प्रजा का विनाश होता है और वृष्टि एवं अन्न का नाश होता है, राजाओं में परस्पर विवाद होता है जो विनाश का हेतु बनता है।

*(*पाठान्तर तथैव श्लोक ७८- याम्ये मही सस्यविवर्जिता कष्टं परं यान्ति नृपा विनाशनम्। यहाँ गर्गाचार का मत तुलनीय है- आषाढ्यामग्निवातेन अस्थिशेषा मही भवेत्। आषाढी पौर्णमास्यान्तु दक्षिणो यदि मारुतः। तथा सुभटकोटीनां मही पिबति शोणितम्॥ बृहद्दैवज्ञरञ्जनम्, पृष्ठ ५५ पर उद्धृत)*

अत्रैव नैर्ऋत्यपरश्च वातफलं

***नैशाचरो वाति यदात्र वातो**

न वारिदो वर्षति भूरि वारि।

प्रत्यक्समीरे सुखिनो मनुष्या

जलान्नपूर्णा च वसुंधरा स्यात्॥ ४२॥

इसी प्रकार यदि नैर्ऋत्य दिशा की पवन बहती है तब वर्षा नहीं होती जबकि जब पश्चिम की पवन चलती है तब सुख का वातावरण होता है, पृथ्वी जल से पूर्ण होती है तथा बहुत अन्न होता है।

*(*पाठान्तर 'ग' मातृका तथैव- नैशाचरो वाति यदाऽत्र वातो न वारिदो यच्छति वारि भूरि। तदा मही सस्यविर्जिता स्यात् क्रन्दन्ति लोकाः क्षुधयाः प्रपीडिताः। आषाढमासे यदि पौर्णमास्यां सूर्यास्तकाले यदि वारुणोऽनिलः। प्रवाति नित्यं सुखिनः प्रजाः स्युर्जनान्नयुक्ता वसुधा तदा स्यात्॥)*

वायव्यकोणसौम्यदिशवायुफलं

वायव्यवाते जलदागमे स्यादभ्र(व्द ?)स्य-

नाशः पवनैः प्रचण्डैः। *

सौम्येऽनिले धान्यजलाकुला धरा नन्दन्ति

लोका भयदुःखवर्जिताः॥ ४३॥

वायव्यकोण से पवन संचरण का फल यह होता है कि वर्षा काल में मेघों को हवाएँ उड़ा ले जाती हैं। ओर यदि उत्तर दिशा की पवन हो तो वह धरती पर वर्षा करती है, धान्य की खूब उपज होती है। दुःख दूर होता है तथा आनंद होता है।

*(*पाठान्तर तथैव- वायव्यवाते जलदागमः स्यादन्नस्य नाशः पवनोद्धता च।)*

ईशानकोणस्यवायुफलं

ऐशे(से ?)ऽन्न वृद्धिर्बहुवारिपूरिता धरा

च गावो बहुदुग्धसंयुताः।

भवन्ति वृक्षाः फल पुष्पदायिनो

***नन्दति भूपाश्च परस्परं तदा॥ ४४॥**

यदि आषाढ़ी पूर्णिमा के सूर्यास्त काल में ईशान कोण की पवन चलती है तो भूमि अधिक जल से परिपूर्ण होकर अन्न की वृद्धि करती है और गायें खूब दूध देती है। वृक्षों में फल-फूलों की पैदावार पर्याप्त होती है। यह राज्यों में परस्पर प्रीति का भी वर्धन करती है।

*(*पाठान्तर तथैव- वातेऽभिनंदन्ति नृपाः परस्परम्। मातृका ३४३३२ के पृष्ठ १२ पर समापन में यह श्लोक भी मिलता है- आषाढीयोगोऽयं सम्यक्प्रोक्तो मुनिमतं समालोक्य। यज्ज्ञात्वा दैवविदो लोके ख्यातिं समायान्ति॥ ८३)*

इति मयूरचित्रे आषाढमासफलकथने नामषष्ठोऽध्यायः॥ ६॥

अथ श्रावणमासफलकथनम् सप्तमोध्यायः

तत्रैव श्रावणमासीयवृष्टिगर्भलक्षणानि

श्रावणे शुक्लसप्तम्यां यदि मेघः प्रवर्षति।

तदा प्रजाभि(-श्च ?) नंदति धनधान्याकुला धराः ॥ १ ॥

अब श्रावण मास फल कहा जा रहा है। यदि श्रावण शुक्ला सप्तमी के दिन वर्षा होती है तो लोक में आनंद होता है। इस योग को धन-धान्यादि की वृद्धि करने वाली कहा गया है।

कृतिकावृष्टिफलं

श्रावणे कृतिकायाञ्च यदि मेघः प्रवर्षति।

तदात्वेकार्णवा * पृथ्वी धनधान्यकुला प्रजाः(मता ?) ॥ २ ॥

श्रावण में यदि कृतिका नक्षत्र के दिन वर्षा होती है तो भरपूर वृष्टि होती है और अन्न-धन से प्रजा परिपूर्ण रहती है।

*(*पाठान्तर- तत्रैव, पृष्ठ ४५- तदा जलार्णवा)*

चित्रास्वात्याविशाखश्चावृष्टि फलं

चित्रा-स्वाति-विशाखासु यदि मेघो न वर्षति।

श्रावणे च तदा पृथ्वी वारिसस्यविसर्जिता ॥ ३ ॥*

श्रावण में चित्रा स्वाती, विशाखा- इन नक्षत्रों में यदि वर्षा न होती है, तब तृणाभाव रहता है और वृष्टि नहीं होती है।

*(* उक्त मातृका में इसके बाद निम्न श्लोक भी हैं- सप्तम्यां श्रावणे मासि स्वातियोगे च वर्षति। निष्पत्तिः सर्वसस्यानां भवन्ति सुखिनः प्रजाः ॥ नभस्यस्तङ्गते भानौ सप्तम्यां शुक्लपक्षके। दृश्यते न च पर्जन्यस्तदा मेघो न वर्षति ॥ प्राच्य भारतीय ऋतुविज्ञानम्, पृष्ठ १९७)*

सप्तम्याविचार:

श्रावणेस्तङ्गते भानौ सप्तम्यां शुक्लपक्षके।

दृश्यते न च पर्जन्यस्तदा मेघो न वर्षति॥ ५॥

श्रावण शुक्ला सप्तमी के दिन सूर्य को ढकने वाले बादल आसमान में दिखाई नहीं दें तो उस मास में वर्षाभाव ही जानना चाहिए।

सितस्यचतुर्थ्यापूर्वाभाद्रपदफलं

श्रावण(णे)स्य सितेपक्षे पूर्वाभाद्रपदासु च।

***चतुर्थ्यां जलपातश्चेत्पृथ्वीस्यादन्न सङ्कुला॥ ६॥**

श्रावण शुक्ला चतुर्थी और पूर्वाभाद्रपद के योग में यदि वर्षा हो तब अन्नादि की भरपूर उपज होती है, पृथ्वी अन्न संकुला हो जाती है।

*(*पाठान्तर- तत्रैव- चतुर्थ्यां जलपातः स्यात् तदाऽप्येकार्णवा मही॥)*

पौर्णमास्यां वृष्टिफलं

श्रावणेर्क्षे पूर्णिमायां यदि मेघः *प्रवर्तितः।

तस्मिन्काले सुभिक्षं स्याद्धरित्रीचान्न सङ्कुला॥ ७॥

श्रवण नक्षत्र युक्त श्रावण शुक्ला पूर्णिमा को यदि वर्षा होती है से सुभिक्ष जानना चाहिए, इस अवधि में पृथ्वी भरपूर अन्न निपजाती है।

*(*पाठान्तर- तत्रैव, पृष्ठ ४६- प्रवर्षति)*

इति मयूरचित्रेश्रावणमासकथनोनाम सप्तमोऽध्याय:॥७॥

अथ भाद्रपदमासफलकथनम् अष्टमोऽध्यायः

अत्रैव सप्तमीरोहिण्यामन्द युतिफलं

नभस्य सप्तमी कृष्णा रोहिणीमन्दसंयुताः।

गुरु-शुक्रा-र्कयुक्ता वा यव-गोधूम-शालयः॥ १॥

हरिद्रा-जीरकं-सीसं-पारदं हिंगु-रैक्षवम्।

तिलं-कस्तूरिका चैव महर्घति न संशयः॥

गते मासे तृतीये तु विक्रये लाभभादिशेत्॥ २॥

भाद्रपद मास के कृष्णपक्ष की सप्तमी को यदि रोहिणी नक्षत्र हो और शनि, गुरु, शुक्र एवं रविवार हों तो जौ, तिल, हल्दी, जीरा, हींग, कस्तूरी, खाण्ड, सीसा, पारा आदि वस्तुएँ महंगी हो जाती है। यदि इनका संग्रह कर तीसरे माह में विक्रय किया जाए तो अच्छा लाभ मिल सकता है।

अन्यदप्याह

नभस्यस्यतृतीयां प्रहरे च तृतीयके

उत्तरस्यां घना दृष्टास्तदा स्युः।

सुखिनो जनाः अन्नसंग्रहणं

कार्य्यं षष्ठे मासि महर्घता॥ ३॥*

भाद्रपद कृष्णा तृतीया को तीसरे प्रहर में यदि उत्तर दिशा में बादल हो तो जन समुदाय प्रसन्न होता है। इस योग में अन्न का संग्रह कर लिया जाना चाहिए क्योंकि इसके छठे मास में अन्न महंगा होने वाला होता है।

*(*पाठान्तर- तत्रैव, पृष्ठ १२, श्लोक ९६- नभस्ये च द्वितीयायां प्रहरे तृतीयके। सौम्याशायां घना दृष्टास्तदा स्यु सुखिनः प्रजाः॥)*

नभस्याष्टमीमूलचंद्रार्क युतिफलं

नभस्यस्याष्टमी शुक्ला मूलचंद्रार्क संयुता।

तदा च पञ्चमे मासि शणसूत्र महर्घता॥ ४॥

भाद्रपद शुक्ला अष्टमी को यदि मूल नक्षत्र और सोमवार या रविवार हो तब पाँचवें महीने में सण और सूत महंगा हो जाता है।

सङ्क्रान्तिवृष्टिफलं

यदा भाद्रपदेमासि सङ्क्रान्तौ जलवर्षणम्।

तदा भवंति रोगाश्च प्रा(f ?)णनाञ्चाश्विने भयम्॥ ५॥

भाद्रपद मास में सङ्क्रान्ति के यदि वर्षा होती है, तो रोग होता है तथा आश्विन मास में जीवों का भय व्याप्त होता है।

अमायार्केतृणमहर्घतां

अमावास्या भाद्रपदे युक्तास्याद्भानुना यदि।

तदा महर्घता ज्ञेया सस्यानां दैवचिन्तकैः॥ ६॥

भाद्रपद मास की अमावस्या यदि रविवार वाली हो तो दैवचिंतकों को कहना चाहिए कि उक्त योग में तृणादि महंगा हो जाएगा।

इति मयूरचित्रेभाद्रपदफलकथनं नामोष्टमोऽध्यायः॥ ८॥

अथाश्विनमासफलकथनम् नवमोऽध्यायः

अथाश्विनेवृष्टिगर्भलक्षणानि

आश्विनस्यां त्रयोदश्यां शनिवारो यदा भवेत्।

यदि सङ्क्रमण तत्र रवेस्सस्याकुला मही॥ १॥

यदि आश्विन मास की त्रयोदशी को शनिवार हो और सङ्क्रान्ति भी हो, तो पृथ्वी सस्यमयी होती है और उस पर भरपूर आनंद होता है।

सौरिवक्रबुधराश्यान्तरफलं

आश्विने शनिवक्रं स्याद्बुधोराश्यन्तरं व्रजेत।*

शुक्रश्चास्तमयं याति तदाऽन्नप्लाविता धरा॥ २॥

आश्विन के उक्त दिवस पर ही यदि शनि वक्री हो और बुध दूसरी राशि में जाए तथा शुक्रास्त हो, तब अन्नादिक भरपूर होता है।

*(*पाठान्तर- तत्रैव, पृष्ठ १२, श्लोक ९८- आश्विने स्याच्छनिर्वक्रो बुधो राश्यान्तरं व्रजेत्।)*

सौरिराहवसञ्चारफलं

शनिराह्वोश्च तत्रैव सञ्चारो जायते यदि (?यदा)।

तैल-सूत्र-शणादीनां तदा वाच्या महर्घता॥ ३॥

उसी दिन यदि शनि और राहु भी राशि छोड़ते हों तब तेल, सूत-कपास और शण आदि वस्तुएँ महंगी होती है।

सप्तम्यामष्टम्यावृष्टिफलं

अश्विने शुक्लसप्तम्यामष्टम्यां वारिवर्षणम्।

तदा सुभिक्षमादेश्यं राजानः शान्तिविग्रहाः॥ ४॥

आश्विन शुक्ला सप्तमी अथवा अष्टमी को यदि वर्षा हो तब सुभिक्ष कहना चाहिए। इस योग से राजाओं का विग्रह भी दूर होकर शान्ति स्थापना होती है।

प्रतिपद्दशम्याष्टमीघनफलं

यदा चा(र?)श्वयुजे मासि दशम्यां प्रतिपत्तिथौ।

***अष्टम्यामम्बरे मेघः सत्वरं वृष्टिकारकः ॥ ५ ॥**

आश्विन की प्रतिपदा, अष्टमी और दशमी को गगन बादलों से आच्छादित दिखाई दें तो शीघ्र ही वर्षा होती है।

*(*पाठान्तर- तत्रैव- अष्टम्यामम्बरे मेघा वृष्टाः क्षिप्रं जलप्रदाः ॥)*

सूर्यास्तकालेश्रृङ्गाकारघनफलं

आदित्यास्तमये * मेघाः पर्वताकारसन्निभाः।

दृश्यन्ते जलपातः स्यात्तस्मिन्नेव दिने तदा ॥ ६ ॥

आश्विन में संध्याकाल में यदि पर्वताकार मेघ दिखाई दें तो उसी दिन वर्षा की संभावना कहनी चाहिए।

*(*पाठान्तर- तत्रैव, पृष्ठ १३ श्लोक १०२- आदित्यास्तमिते)*

इति मयूरचित्रे आश्विनमासफलकथननाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

अथ कार्तिकमासफलकथनम् दशमोऽध्यायः

अत्रैव कार्तिकीयवृष्टिगर्भलक्षणानि

कार्तिके-मार्गशीर्षे वा सङ्क्रान्तौ वारिवर्षणम्।

तदा समर्घता पौषे सस्यवृद्धी(?-द्धि)स्तु मध्यमा ॥ १ ॥

कार्तिक और मार्गशीर्ष में यदि सङ्क्रान्ति के दिन वर्षा हो तो पौष मास में अन्नादि के भाव सस्ते होते हैं।

दर्शतिथौर्केर्किभौमवारश्च फलं

कार्तिकस्यत्वमावास्या रविवारेण संयुता।

शनिभौमयुता वापि सर्वलोक भयावहा ॥ २ ॥

कार्तिक की अमावस्या को यदि रविवार, शनि और मङ्गलवार हो तो सब लोक में भय की व्याप्ति होती है।

सङ्क्रान्तिफलं

तत्र चंद्रविसङ्क्रान्तस्तत्समीपेऽथवा भवेत्।

तदा सुखयुतालोकाः सर्वसस्य महर्घता ॥ ३ ॥

कार्तिकी अमावस्या अथवा उस दिन के आसपास सूर्य की सङ्क्रान्ति हो तो लोग सुखी रहेंगे किंतु सभी प्रकार का तृण महंगा होगा।

कार्तिकेघनस्यफलं

यदा कार्तिकमासे(शे ?)तु वारिदस्य च गर्जनम्।

भवत्यन्न(-त्र ?) समहर्घत्वं स(श ?)स्यसम्पतिरुत्तमा ॥ ४ ॥

कार्तिक में मेघ आएँ तथा गर्जना हो तब अन्न महंगा होगा और घास सस्ती होगा, ऐसा जानना चाहिए।

सितेद्वादश्यानिर्मलारात्रिफलं

ऊर्ज्जस्य शुक्ल द्वादश्यां * रजनी निर्मला यदि।

पूर्णिमा कृतिकायुक्ता तदा लोकाः सुखान्विताः ॥ ५ ॥

कार्तिक शुक्ला द्वादशी को रात्रि यदि निर्मल हो और पूर्णिमा के दिवस यदि कृतिका हो तो सुखवृद्धि होती है।

*(*पाठांतर- 'ग' मातृका संख्या ३४३३२ पर पृष्ठ १३- ऊर्ज्जस्य द्वादशी शुक्ला)*

पूर्णिमा-भरणी फलं

अथवा भरणी सर्वा कार्तिक्यां भवति ध्रुवम्।

दुर्भिक्षं जायते घोरं तथा रोगा भवन्ति हि ॥ ६ ॥

कार्तिक पूर्णिमा को पूरे ही दिन भरणी नक्षत्र हो तो यह जाने कि घोर दुर्भिक्ष पड़ने वाला है। इस योग से महामारी फैलती है।

अश्विनीयोगफलं

तस्यामेवाश्विनीयोगे सस्यसपच्च मध्यमा।

यदि चेद्रोहिणीयोगो * जन्तवः क्लेशभागिनः ॥ ७ ॥

कार्तिक पूर्णिमा को अश्विनी नक्षत्र का संयोग हो तो तृण मध्यम होता है और रोहिणी नक्षत्र हो तब जीव-जन्तुओं को क्लेश की प्राप्ति होती है।

*(*पाठांतर- तथैव- यदाऽयं रोहिणीयोगो)*

अत्रैव कार्तिकोत्पातफलं

यदा कार्तिकमासे तु ग्रहणं चंद्र-सूर्य्ययोः।

निर्घातोभूमिकम्पश्च तारकापतनं तथा ॥ ८ ॥

उल्कापातेरजःपातोह्यनश्चे जलवर्षणम्।

एते चान्ये तथोत्पाताः प्रभवन्ति पुरोदिताः ॥ ९ ॥

सङ्ग्रह सर्वधान्यानां कर्तव्यो धनकाङ्क्षिभिः ।
विक्रीते पञ्चमेमासे लाभश्च द्विगुणो भवेत् ॥ १० ॥

यदि कार्तिक मास में सूर्य अथवा चंद्रमा का ग्रहण हो, निर्घात हो, भूकम्प आए या तारा टूटे, उल्कापात हो, बिजली गिरे या बिना ही मेघ के वर्षा हो अथवा कोई और उत्पात हो जैसे कि पूर्व काल में मुनियों ने बताए हैं तब धनाकांक्षियों को सभी प्रकार के अनाजों को संगृहीत कर लेना चाहिए। यह अनाज व्यापारी को पाँच माह बाद बिक्री से दोगुना लाभ दिलाता है।

इति मयूरचित्रेकार्तिकफलकथनं नामदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

अथ मार्गशीर्षफलकथनम् एकादशोऽध्यायः

अथ मार्गेचतुदश्याद्दर्शघनफलं

मार्गशीर्षे चतुर्दश्यां दर्शे वा दृश्यते यदा।

घनैराच्छादितो भानुस्तदा सस्य महर्घता॥ १॥

मार्गशीर्ष या अगहन मास की चतुर्दशी या अमावस को सूर्य बादलों से ढका हुआ हो तब तृण महंगा होगा।

सितपक्षौद्वितीयायां तिथौ

मार्गशुक्लद्वितीयायां शनिवारोथ दक्षिणः।

वातोवहति लोकानां तदा कष्ट प्रदायकः॥ २॥

मार्गशीर्ष शुक्ला द्वितीया को यदि शनिवार हो और दक्षिण दिशा की पवन चले तो लोक के लिए कष्ट प्रदायक होता है।

तिथौक्षयफलं

मार्गशीर्षादिमासे(शे ?)षु शुक्लपक्षे तिथिक्षयः।

छत्रभङ्ग प्रजापीडा दुर्भिक्षं च समादिशेत्॥ ३॥

मार्गशीर्ष और पौष आदि मासों के शुक्लपक्ष में यदि तिथिक्षय हो तो छत्रभङ्ग, प्रजा को पीड़ा और दुर्भिक्ष होता है।

अन्यदप्याह

मार्गमासे कृष्णपक्षे तिथि वृद्धिश्च जायते।

तदा युद्धाकुलावृद्धि प्रजाः क्रन्दति नित्यशः॥ ४॥

मार्गशीर्ष के कृष्णपक्ष में यदि कोई तिथि बढ़ती है तो पृथ्वी पर युद्ध, आतंक बढ़ता है और प्रजा नित्य क्रन्दन करती है।

मार्गशीर्षे वृष्टिगर्भलक्षणानि

मार्गशीर्षस्य सप्तम्यां नवम्यामीशदिग्यदि(?-दा)।

दृश्यते मेघसंछन्ना स्तोकं व(वा ?)र्षिति वारिदः ॥ ५ ॥

मार्गशीर्ष की सप्तमी तिथि या नवमी को यदि ईशान कोण में बादल दिखाई दें तो बहुत न्यून वर्षा जानना चाहिए।

अन्यदप्याह

मार्गकृष्णाचतुर्थ्यां च चि(पि ?)त्रर्क्षे मेघदर्शनम्।

अथवा जलपातः स्यातदाऽऽषाढ्ये च वर्षणम्।

समर्घता च सस्यानामादेश्या गणकोत्तमैः ॥ ६ ॥

मार्गशीर्ष कृष्णा चतुर्दशी को मघा नक्षत्र के दिन यदि बादल दिखाई दें अथवा वर्षा हो तो आगामी आषाढ़ में वर्षा होती और तृण सस्ता होता है, ऐसा दक्ष गणकों का मत है।

अष्टम्यास्वात्योश्चित्राफलं

मार्गकृष्णाष्टमी स्वाति-चित्रायुक्ता भवेद्यदि।

मेघाक्रांत नभस्तस्यां दृश्यते सर्वदा यदि(?सर्वस्तदा)॥ ७॥

मार्गशीर्ष कृष्णा अष्टमी के दिन यदि स्वाती व चित्रा नक्षत्र हो और दिन भर आसमान में बादल छाये रहें तो निम्न फल जाने-

तस्मिन्नृक्षे(?-र्क्षे) तदाऽऽषाढे जायते वृष्टिरुत्तमा।

सर्वसस्ययुता पृथ्वी प्रजा नन्दति नित्यशः ॥ ८ ॥

कि आषाढ़ में उन्हीं नक्षत्रों में वर्षा होती है, पृथ्वी सभी सस्यों से युक्त होती है और प्रजाजन आनंद का अनुभव करते हैं।

अन्यदप्याह

चतुर्थी सार्पसंयुक्ता पञ्चमी पितृसंयुता।

षष्ठी च भगसंयुक्ता मार्गेमासि यदा भवेत्।*
त्रिरात्रं महती वृष्टिराषाढे शुक्लपक्षके ॥ ९ ॥

मार्गशीर्ष कृष्णा चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी को यदि क्रमशः अश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र हों तो आषाढ़ के शुक्लपक्ष में तीन रात्रियों तक मूसलधार वर्षा होती है।

*(*पाठांतर- प्रागुक्त मातृका, पृष्ठ १४, श्लोक १२३- चतुर्थी सार्पसंयुक्ता पञ्चमी पितृसंयुता। षष्ठी च मृगसंयुक्ता पञ्चमी पितृसंयुता॥)*

अष्टमी चापि * नवमी चित्रायुक्ता यदा भवेत्।
वातरर्क्षे च तदाऽऽषाढे मेघा वर्षंति नित्यशः ॥ १० ॥

मार्गशीर्ष में अष्टमी, नवमी को यदि चित्रा नक्षत्र हो तो आषाढ़ में स्वाती नक्षत्र पर वर्षा योग होता है।

*(*पाठांतर- तथैव- वाऽथ)*

इति मयूरचित्रेमार्गशीर्षफलकथनो एकादशोध्यायः ॥ ११ ॥

अथ पौषमासफलकथनम् द्वादशोऽध्याय:

पौषे वृष्टिगर्भलक्षणानि

पौषस्य च तथा कृष्णा पञ्चमी भौमसंयुता।*

तस्यां मेघाः प्रवर्षन्ति तदा धान्याकुला मही।

अतसाधृतमञ्जिष्ठावपे यान्ति महर्घताम्॥ १॥

पौष मास के कृष्णपक्ष में मङ्गलवार की पञ्चमी को यदि वर्षा होती है तो पृथ्वी अन्न से भर जाती है और अलसी, घृत और मञ्जीठा जैसे द्रव्य महंगे हो जाते हैं।

*(*पाठांतर- पूर्वनिर्दिष्ट मातृका, श्लोक ३०- पौषस्य पञ्चमी कृष्णा भौमवारेण संयुता।)*

एकादश्यानवम्यां विचार:

एकादश्यां नवम्यां च पौष मासे घना यदि।

पूर्वस्यां दिशि गर्जंति तदा सस्य विनाशकः॥ २॥

पौष की नवमी, एकादशी को यदि पूर्व दिशा में मेघ हो तथा गर्जना करें तब यह जाने कि तृणादि का विनाश निश्चित है।

रात्रौवृष्टिफलं

पौष कृष्णस्य सप्तम्यां वारिवाहा महानिशि।

यदा वर्षंति गर्जंति तदा प्रावृषि तोयदाः॥ ३॥*

पौष कृष्णा सप्तमी पर यदि आधी रात ढले वर्षा हो अथवा बादलों की गर्जना हो तब पावसकाल में वर्षा नहीं होती है।

(पाठांतर- पूर्वनिर्दिष्ट मातृका, श्लोक ३१- पौषे कृष्णे च सप्तम्यां पौषमासे महानिशि। यदा मेघाश्च वर्षन्ति तदा प्रावृषि तोयदाः॥)

ज्येष्ठार्क्षेमावस्याफलं

पौषस्य यद्यमावस्या ज्येष्ठानक्षत्र संयुता।

तदा सस्य महर्घत्वं मूलयुक्तात्म मूल्यता॥ ४॥

पौष की अमावस को यदि ज्येष्ठा नक्षत्र हो तो तृण महंगा होता है और यदि मूल नक्षत्र हो तब सस्ता होता है।

अन्यदप्याह

शुक्ला त्रयोदशी पौषे मन्द-शुक्र-कुजैर्युता।

यदि वर्षंति जीमूतः कार्यो * गोधूमसङ्ग्रहः॥ ५॥

पौष शुक्ला त्रयोदशी पर यदि शनि, शुक्र एवं मङ्गलवार हो और मेघ बरसें तो गेहूँ का संग्रह कर लिए जाने से लाभ होता है।

(पाठांतर- पूर्वनिर्दिष्ट मातृका- यदा भवत्यवृष्टिः स्यात्कार्यो)

अन्यदप्याह

पौष शुक्लचतुर्थ्यां तु विद्युद्दर्शनमुत्तमम्।

तथा विद्युद्घनाच्छन्नं दृष्टमिन्द्रधनुस्तथा॥ ६॥

पौष शुक्ला चतुर्थी के दिन बिजली चमकती दिखाई दे तो उत्तम फल जानना चाहिए। यदि घने बादल और इन्द्रधनुष भी दिखाई दें तो भी शुभदायक होता है।

अन्यदप्याह

पौषमासे पूर्वभाद्रां विशेषेण निरीक्षिये(क्षे ?)त्।

परिवेषो गर्जनं वा *विद्युद्वारिप्रदर्शनम्॥

यदि तत्र प्रजायन्ते तदा वृष्टिरयुत्तमा॥ ७॥

पौष में पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र के दिन सावधानी के साथ आसमान का निरीक्षण करना चाहिए। यदि इस दिन बादल गरजते हों, बरसते हों या बिजलियाँ चमकती हों तो वहाँ उत्तम वर्षा होती है।

*(*पाठांतर- पूर्वनिर्दिष्ट मातृका- विद्युद् वारिदवर्षणम् ॥)*

अन्यदप्याह

धनुर्विद्युद्घनो वापि* यद्यैकमपि नो भवेत्।

पौषे मासे तदा वाच्यं वर्षाकालेष्ववर्षणम्॥ ८॥

पौष में इन्द्रधनुष या बिजली अथवा मेघ यदि पूर्वाभाद्रपद के दिन नहीं हो तो वर्षाकाल में जल नहीं बरसता है।

*(*पाठांतर- पूर्वनिर्दिष्ट मातृका- मत्स्यो)*

अन्यदप्याह

पौषस्य सप्तमी शुक्लपक्षे पञ्चम्यां हिमवर्षणम्।*

तदास्यान् महतीवृष्टिः प्रावृटकाले न संशयः॥ ९॥

पौष शुक्ला पञ्चमी को यदि हिम वर्षा या तुषारापात हो तो वर्षाकाल में बहुत वर्षा होती है, इसमें संदेह नहीं जानना चाहिए।

*(*पाठांतर- पूर्वनिर्दिष्ट मातृका- पौषमासे वारुणर्क्षे पूर्वभाद्रे शुक्लपक्षे पञ्चम्यां हिमवर्षणम्।)*

अन्यदप्याह

पौषस्य सप्तमी शुक्ला रेवतीसंयुता यदा(? तथा)।

अष्टम्यामश्विनीयोगो नवम्यां भरणी यदा॥ १०॥

पौष शुक्ला सप्तमी को यदि रेवती नक्षत्र हो, अष्टमी को अश्विनी तथा नवमी को भरणी नक्षत्र हो और

एवंविधेषु योगेषु *सविद्युद्घनदर्शनम्।

तदा स्यान्महती वृष्टिर्वर्षाकाले न संशयः॥ ११॥

यदि उक्त योग में विद्युत चमकती दिखाई दे तो पावसकाल में पर्याप्त वर्षा होती है, इसमें संशय नहीं जाने।

(पाठांतर- पूर्वनिर्दिष्ट मातृका- सविद्युद्घनवर्षणम्।)

अन्यदप्याह

एकादश्यां यदा विद्युद्रोहिण्यां *जलदर्शनम्।

पौषे यदा तदा वृष्टिः प्रावृषि **स्यात्समर्थिता॥ १२॥

पौष की एकादशी को यदि रोहिणी नक्षत्र हो और वर्षा हो तो यह जानना चाहिए कि वर्षाकाल में भरपूर वर्षा होती है।

*(*पाठांतर- पूर्वनिर्दिष्ट मातृका- जलवर्षणम्। ** पाठान्तर- स्यान्महर्घता॥)*

अन्यदप्याह

पूर्णिमायां द्वितीयायां पौषे विद्युत्प्रदर्शनम्।

तदा स्यादन्न संपति मेंघच्छन्ने तथाम्बरे॥ १३॥*

पौष की पूर्णिमा या द्वितीया तिथि को यदि आकाश में बिजली चमके और घने बादल हो तो अन्न की अच्छी निष्पत्ति होती है।

*(*पाठांतर- पौर्णमास्यां द्वितीयायां पौषे विद्युत्प्रदृश्यते। तदा स्यादन्ननिष्पत्तिः मेघच्छन्न तथाम्बरे॥)*

सङ्क्रान्त्यार्कवारफलं

पौषमासेर्कसङ्क्रान्तौ रविवारो यदा भवेत्।

धान्यमूल्यं द्विगुणितं तदा भवति नान्यथा॥ १४॥

पौष में सङ्क्रान्ति के अवसर पर यदि रविवार हो अन्न का भाव वर्तमान भाव से दुगुना होगा, इसमें संदेह नहीं है।

अन्यदप्याह

शनिवारेत्रिगुणितं भूमिपुत्रेचतुर्गुणम्।

बुधभृग्वोः समत्व च मूल्यार्द्धं शशिजीवयो॥ १५॥

पौष में सङ्क्रान्ति को यदि शनिवार हो तो अन्न का भाव तीनगुना, भौमवार हो तो चौगुना मूल्य हो जाता है। इसी प्रकार बुध व शुक्रवार हो वर्तमान मूल्य ही रहेगा किंतु सोम व वृहस्पत्रिवार हो तो आधा मूल्य हो जाएगा।

स्पष्टार्थचक्रम्

क्रम	वार	मूल्य	क्रम	वार	मूल्य
१.	रविवार	दुगुना	२.	सोमवार	आधा
३.	मङ्गल	चौगुना	४.	बुध	वर्तमान
५.	गुरुवार	आधा	६.	शुक्रवार	वर्तमान
७.	शनिवार	तीनगुना			

अन्येषां सङ्क्रातिफलं

अन्यमासेर्के सङ्क्रान्तिः शनिभानुकुजेहनिः।

तदा भवति दुर्भिक्षं तथा स्यादाजविग्रहः॥ १६॥

पौष मास और अन्य दूसरे महीनों में यदि शनिवार, मङ्गलवार, रविवार- इन दिनों में सङ्क्रान्ति हो तो दुर्भिक्ष पड़ता है ओर राज्य में विग्रह बढ़ता है।

तत्रैव ऋर्क्षफलं

मूलमारभ्यं याम्यांत नभो भवति साभ्रकं।

रौद्रमारभ्य वातान्तं तदा वर्षति वासवः॥ १७॥

पौष में मूल नक्षत्र से लेकर भरणी तक यदि आकाश मेघाच्छन्न हो तो आर्द्रा नक्षत्र से लेकर स्वाती नक्षत्र तक वर्षा योग होता है।

धनराशिगतेभानु मूलमारभ्य चिन्तयेत्।

गर्भाधानं ततो वृष्टिः षष्ठे(विंष्टि ?)मासे हि सार्द्धके॥ १८॥

धनु की सङ्क्रान्ति में मूल नक्षत्र से लेकर साढ़े छह मास तक मेघों के गर्भाधान का विचार करना चाहिए। इस सम्बन्ध में आगे विचार किया जा रहा है-

मूलर्क्षे हि यदा गर्भो भवत्यार्द्रा च वर्षति।

पूर्वाषाढे तथाऽऽदित्यमुतरायां तथा गुरुः॥ १९॥

श्रवणे सार्पभं चैव *वासवे पितृभन्तथा।

वारुणे भाग्यभश्चैव **पूर्वाभाद्रार्यमाधिपे ॥ २० ॥

हर्षो(?स्तो) वर्षत्युत्तरायां रेवत्यां वार्द्धकिस्तथा।

एतद्गर्भं समासेन मयोक्तं चिंतयेत्सुधीः ॥ २१ ॥

मूल नक्षत्र में यदि गर्भ या सजल वारिद हो तो आर्द्रा नक्षत्र में वर्षा होगी। पूर्वाषाढ़ में गर्भ हो तो पुनर्वसु में, उत्तराषाढ़ में गर्भ हो तो पुष्य, श्रवण में गर्भ हो तो अश्लेषा, धनिष्ठा में गर्भ हो तो मघा, शतभिषा में गर्भ हो तो पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाभाद्रपद में गर्भ हो तो उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद में हो तो हस्त और रेवती नक्षत्र में गर्भाधान हो तो चित्रा स्वाती नक्षत्र में वर्षा होती है। इस प्रकार यहाँ संक्षेप में यह गर्भविचार किया गया है। इसमें उत्तराषाढ़ के आगे अभिजित् को भी गिनकर भलीभांति विचार किया जा सकता है।

*(*पाठांतर- पूर्वनिर्दिष्ट मातृका- पूर्वाषाढेऽर्यमा खलु। ** पाठान्तर- पूर्वाषाढेऽर्यमा खलु ॥)*

स्पष्टार्थचक्रम्

गर्भाधान नक्षत्र	वर्षण नक्षत्र	गर्भाधान नक्षत्र	वर्षण नक्षत्र
मूल	आर्द्रा	पूर्वाषाढ़	पुनर्वसु
उत्तराषाढ़	पुष्य	श्रवण	अश्लेषा
धनिष्ठा	मघा	शतभिषा	पूर्वाफाल्गुनी
पूर्वाभाद्रपद	उत्तराफाल्गुनी	उत्तराभाद्रपद	हस्त
रेवती	चित्रा/स्वाती		

अथाश्विन्यादीनां

तुरगर्क्षे गते भानौ यदि मेघः प्रवर्षति।

मूलोद्भवं तदा(? तथा) गर्भं नादेश्यं दैवचिंतकैः ॥ २२ ॥

भरण्यादिस्थिते भानौ यस्मिन् मेघः प्रवर्षति।

तस्मिंस्तस्मिन गर्भऋक्षे गर्भनाशं वदेद्बुधः ॥ २३ ॥

अश्विनी नक्षत्र पर सूर्य हो और तब वर्षा हो तो मूल नक्षत्र में गर्भ नहीं होगा। इसी प्रकार भरणी के सूर्य में वर्षा हो तो पूर्वाषाढ़ में गर्भ नहीं होगा। ऐसे ही मृगशिरा तक गर्भ का विनाश जानना चाहिए। आर्द्रा आदि दस नक्षत्रों में जिस-जिस नक्षत्र पर वर्षा हो तो मूल आदि दस नक्षत्रों में उस-उस नक्षत्र में गर्भ की पुष्टि होती है, ऐसा विज्ञजनों का मत है।*

(इसके बाद यह श्लोक भी मिलता है- रौद्रर्क्षे संस्थिते भानौ जलं वर्षति वारिदः। पुष्टिर्भवति गर्भाणां प्रोक्तानां नात्र संशयः॥ प्राच्यभारतीय ऋतुविज्ञानम् पृष्ठ १३८)*

विधौर्याम्योत्तरेचपलादर्शनफलं

पौषस्य पञ्चदश्यां च विधोर्याम्योत्तरा तडित्।

दृश्यते वियदाच्छन्नं धन्नैर्वृष्टिस्तदा * भवेत्॥ २४॥

पौष की पूर्णिमा के दिन बादल हो और चंद्रमा से दक्षिण-उत्तर में विद्युतदर्शन हो तो उसी दिन के नक्षत्रों पर पावसकाल में वर्षा योग कहना चाहिए।

*(*पाठांतर- पूर्वनिर्दिष्ट मातृका- नभो वृष्टिः सदा)*

सप्तम्यास्वातियोगेनवर्षणफलम्

पौषे स्वात्यां च सप्तम्यां यदा स्याद्वारिवर्षणम्।

मेघच्छन्नभो वापि तदा सस्याकुला धरा॥ २५॥

पौष में सप्तमी तिथि पर स्वाती नक्षत्र के योग में वर्षा हो और आसमान मेघाच्छन्न दिखाई दे तो तृण बहुत होता है।

अत्रैव श्रावणीयोगं

कुद्वत्तासुत्रितिथिषु पौषे गर्भः प्रजायते।

तदा सुभिक्षमारोग्यं श्रावण्यां वारिवर्षणम्॥ २६॥

पौष मास में त्रयोदशी, चतुर्दशी और अमावस्या को यदि आकाशीय गर्भ हो तो सुभिक्ष का योग बनता है, यह योग आरोग्यता भी प्रदान करता है और श्रावणी या श्रावण की पूर्णिमा को वर्षा करवाता है।

पञ्चम्यानभतारकस्वात्याहिमपातश्च फलं

पौषस्य कृष्णा पञ्चम्यां नभो विमलतारकम्।

स्वात्यां तुषारपातः स्याच्छ्रावणे तत्र वर्षणम्।

प्रजाभवन्ति सुदिता सर्व सस्य महर्घता॥ २७॥*

पौष कृष्णा पञ्चमी को निर्मल आसमान में तारे हों और स्वाती नक्षत्र में तुषारापात या पाला पड़े तो श्रावण मास में अवश्य वर्षा होती है। इससे प्रजा में हर्ष होता है किंतु तृण महंगा होता है।

*(*उक्त मातृका में इस पङ्क्ति के स्थान पर 'मेघाच्छन्नभो वाऽपि तदा सस्याकुला धरा' पङ्क्ति मिलती है। पूर्वोक्त ग्रंथोद्धृत)*

अमावस्यार्किर्केभौमवार फलं

अमावस्या सहस्यस्य शनिसूर्यारवासरे।

यदि स्याद्भयभा दृश्यं तदा सस्य महर्घता॥ २८॥

पौष मास की अमावस्या को यदि शनिवार, रविवार और मङ्गलवार हो तो भयोत्पादक होती है तथा तृण महंगा हो जाता है।

कृष्णपक्षे अमाया वा सप्तम्यां वृष्टिफलं

पौषमासस्य कुह्वा वा सप्तम्यां यदि वर्षणम्।

***प्रावृट्काले तदा तत्र समर्घं वारिवर्षणम्॥ २९॥**

पौष कृष्णामावस्या और सप्तमी के दिन यदि बादल बरसते हैं तो वे ही मेघ वर्षा काल में भी जल लाते हैं।

*(*पाठांतर- पूर्वनिर्दिष्ट मातृका- प्रावृटकाले तदा वृष्टिर्घर्मः स्याद् वारिवर्षणम्॥)*

सितेपक्षसप्तम्याघनफलं

शुक्लायां यदि सप्तम्यां घनैराच्छादितं नभः।

तदास्याच्छ्रावणे * मासि सप्तम्यां वृष्टिरुत्तमा॥ ३०॥

इसी प्रकार पौष शुक्ला सप्तमी के दिन यदि बादल हो तो श्रावण शुक्ला सप्तमी के दिन उत्तम वर्षा का योग कहना चाहिए।

*(*पाठांतर- पूर्वनिर्दिष्ट मातृका- तदा तु श्रावणे)*

इति श्रीनारदीये मयूरचित्रे पौषमासफलवर्णनोनाम द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

अथ माघमासफलकथनम् त्रयोदशोऽध्यायः

अत्रैव माघतिथौमंद युतिफलं

माघशुक्लद्वितीया च तृतीया शुक्रसंयुता:।

यदास्यान्मन्दसंयुक्ता तदा युद्धाकुला धरा॥ १॥

अब माघ मास के फल का वर्णन किया जा रहा है। माघ के शुक्लपक्ष की द्वितीया अथवा तृतीया को यदि शुक्रवार हो तो पृथ्वी पर युद्ध की आंशका रहती है।

द्वितीयागुरुवारफलं

यदि सङ्गद्गुरुसंयुक्ता तदा सस्याकुला धरा।

राजानस्तत्र सुखिनः प्रजानंदति नित्यशः॥ २॥

माघ शुक्ला द्वितीया को गुरुवार हो तो तृण बहुत होता है और राजा-प्रजा में सुख का संचार होता है।

षष्ठीपञ्चमीसप्तमीशुक्रार्किर्के युतिफलं

षष्ठी च पञ्चमी चैव कृष्णा माघस्य सप्तमी।

शुक्रार्किरविसंयुक्ता तदा युद्धाकुला धरा॥ ३॥

माघ कृष्णा पञ्चमी, षष्ठी या सप्तमी को यदि शुक्रवार, शनिवार और रविवार हो तो पृथ्वी पर संग्राम की आशंका जाननी चाहिए।

अन्यदप्याह

एते योगा यदा माघेन भवति कदाचनः।

भाद्रमासे च गोधूम-मुद्गधान्य महर्घता॥ ४॥

पूर्वोक्त योग यदि माघ में नहीं हो तो भाद्रपद मास में गेहूँ, मूंग आदि अनाज, दालें महंगी हो जाएंगी।

त्रयोदश्यातुषारफलं

माघमासे त्रयोदश्यां यदा स्याद्धिम वर्षणम्।

पृथ्वी तदान्नबहुला प्रजाः सुख समन्विताः ॥ ५ ॥

माघ की त्रयोदशी को यदि कुहरा पड़े तो यह जानना चाहिए कि पृथ्वी पर भरपूर अन्न निपजेगा और प्रजा सुखान्वित हो सकेगी।

वृष्टिगर्भलक्षणानि

हिमन्नपतितं माघे ज्येष्ठे-मूले च वर्षति।

नार्द्रायां पतितं वारि कालो दुष्टस्तदा मतः ॥ ६ ॥*

यदि माघ मास में (न) तुषारापात या कुहरा पड़ता है और ज्येष्ठा व मूल नक्षत्र में (न)वर्षा होती है, आर्द्रा नक्षत्र में वर्षा नहीं होगी तो समय को दुष्टयोग का जानना चाहिए।

*(*पाठांतर- पूर्वनिर्दिष्ट मातृका, पृष्ठ १६- हिमं न पतितं माघे ज्येष्ठे मूलं न वर्षति। नार्द्रायां पतितं वारि कालो दुष्टस्तदा मतः ॥ इसका अर्थ भी पृथक् होगा कि यदि माघ में ज्येष्ठा व मूल नक्षत्र में न कोहरा छाता है न ही वर्षा होती है या आर्द्रा ही बरसता है तो समय का दुष्ट जानना चाहिए।)*

सङ्क्रान्त्यावृष्टिफलं

माघमासे(शे ?) च सङ्क्रांतौ यदि वर्षति वारिदः।

तदा पृथ्वो तु सस्याढ्य धेनवो बहुदुग्धदाः ॥ ७ ॥

माघ के सङ्क्रान्ति के अवसर पर यदि वर्षा होती है तो यह जाने कि खेती में बहुत उपज होगी और गायें बहुत दूध देने लगेंगी।

वाराणांफलं

माघशुक्ल प्रतिपदा बुधवारो यदा भवेत्।

अन्न महर्घतां याति वर्षेत्वाऽऽगामिकेभयम् ॥ ८ ॥

माघ शुक्ला प्रतिपदा के दिवस यदि बुधवार हो तो अन्न महंगा होगा और आगे के वर्ष में भय व्याप्त होगा।

पञ्चार्का: पञ्चवाभौ वा पञ्चवामन्दवासरा:।

दुर्भिक्ष्यं भयमादेश्यं तदा शेषा: शुभावहा:॥ ९॥

माघ मास में यदि पाँच रविवार या पाँच मङ्गलवार या पाँच शनिवार हो तो दुर्भिक्ष जानना चाहिए। इससे भय भी होता है। इनको छोड़कर माघ मास में अन्य वार शुभ होते हैं।

येषु येषु च मासेषु तस्यवृद्धि: प्रजायते।

सुभिक्ष क्षेममारोग्यन्तेषु ज्ञेयं विचक्षणै:॥ १०॥

जिस मास में पाँच शुभवार हो, उस मास में सुभिक्ष होता है, कुशल और आरोग्य रहता है, ऐसा विचक्षणजनों का कहना है।

महर्घतादीनां

माघमासस्य प्रतिपत्सवाता मेघ वर्जिता।

यदा याति महर्घत्वं तैलद्रव्यं सुगन्धकम्॥ ११॥

माघ मास में प्रतिपदा को यदि पवन चलता है और मेघ नहीं हो तो तेल, सुगंधित द्रव्यों के भाव बढ़ जाते हैं।

द्वितीयामेघसंयुक्ता धन-धान्य विवृद्धिदा:॥ १२॥

माघ मास की द्वितीया के दिन यदि आसमान में बादल छाये हुए हों तो धन-अन्नादि की वृद्धि होती है।

माघस्यतृतीयोघनगर्जनफलं

माघेमासे तृतीयायां गर्ज्जनं च जलं विना।

सङ्ग्रहस्तत्र कर्तव्यो गोधूमस्य यवस्य च॥ १३॥

माघ के महीने की तृतीया को यदि बादल गरजें और वर्षा नहीं हो तो गेहूँ व जौ का सङ्ग्रह कर लेने में ही लाभ है।

चतुर्थी जलसंयुक्ता नालिकेरार्थदा मता॥ १४॥

माघ की चतुर्थी को यदि बरसात होती है तो नारियल की फसल लाभदायक हो जाती है, ऐसा मत है।

सघनापञ्चमी फलं

पञ्चमीमेघसंयुक्ता यदा जलविवर्जिता।

तदा भाद्रपदे मासि स्वल्पा वृष्टिश्च जायते॥ १५॥

माघ के महीने में पञ्चमी के दिन यदि बादल हों और जल नहीं बरसे भाद्रपद मास में अल्पवृष्टि ही जानना चाहिए।

निरभ्रनभेषष्ठ्याफलं

षष्ठ्यां निरभ्रं गगनं दिशश्चविमला यदा।

सङ्ग्रहस्तत्र कर्तव्याः कर्पासस्य हितैषिणा॥ १६॥

यदि माघ मास की षष्ठी के दिन मेघ न हो, सभी दिशाओं में आसमान निर्मल रहे तो कपास का लाभ की दृष्टि से संग्रह कर लिया जाना चाहिए।

सप्तम्यासौम्यादीनां फलं

सप्तमी सौम संयुक्ता राजविग्रहकारका।

मासे धवलपक्षस्य महादुर्भिक्षदायिका॥ १७॥

माघ शुक्ला सप्तमी के दिन यदि सोमवार हो तो राजविग्रह होता है और महादुर्भिक्ष अर्थात् घोर अकाल का कारण बनता है।

उदयव्यापिन्याष्टमीफलं

आदित्योदयवेलायां यदा स्यादष्टमी तिथिः।

तदा रौद्रगतेसूर्ये श्रावणे नहि वर्षति॥ १८॥

माघ में सूर्योदय की वेला में जब अष्टमी अर्थात् उदयव्यापिनी अष्टमी तिथि हो तब यदि आर्द्रा पर सूर्य का आगमन हो तो श्रावण में वर्षा नहीं होती।

नवम्यापरिवेषफलम्

नवम्यां चंद्रबिम्बस्य परिवेषश्च जायते।

तदाऽऽषाढे महावृष्टिः पूर्वं (? सर्व)धान्य महर्घता॥ १९॥

माघ शुक्ला नवमी को यदि चंद्रमा के चतुर्दिक परिवेष या मण्डल के दर्शन हो तब यह जाने कि सर्वप्रथम अन्न महंगा होगा और आगामी आषाढ़ में महावृष्टि होगी।

अन्यदप्याह

शुक्लपक्षस्य सप्तम्यां माघे व्योमाचिंतघनैः।

पुरोवातोकौथवेरो वारुण्यां चञ्चला यदि॥ २०॥

हिमं पतति वा तत्र वांति वातास्तदोद्धता।

तदा सुभिक्षमादेश्यं तस्मिन्देशे विचक्षणैः॥ २१॥

माघ शुक्ला सप्तमी को यदि काले घने बादल हों और पुरवाई तथा उत्तर की पवन बहे और पश्चिम की ओर विद्युत चमकती दीखे अथवा हिमपात या कुहरा हो, तो प्रचण्ड पवन प्रवाह के बावजूद उस देश में समय अच्छा होता है, वहां सुभिक्ष होता है।

स्वात्याऽपियोगाः

माघमासे(शे ?)तपस्ये वा चैत्राषाढे च माधवे।

सप्तम्यां स्वातियुक्तायां लक्षणञ्च शुभप्रदम्॥ २२॥

माघ सहित चैत्र, वैशाख, आषाढ़ और फाल्गुन में यदि सप्तमी के दिन स्वाती नक्षत्र का योग और शुभ लक्षण दिखाई देते हों तो समय शुभप्रद लक्षणों वाला जानना चाहिए।

माघमासस्य नवमी दशम्येकादशी तथा।*

विद्युद्वातसमायुक्ता तदा बहुजलप्रदा॥ २३॥

माघ शुक्ला नवमी, दशमी अथवा एकादशी के दिन यदि पवन संचरण होता है और विद्युत चमकती है तो वर्षा बहुत होगी, ऐसा जानना चाहिए।

*(*पाठांतर- पूर्वनिर्दिष्ट मातृका- माघस्य नवमी कृष्णा दशम्येकादशी यदा।)*

त्रयोदश्याचतुर्दश्याप्राग्मेघफलं

कृष्णायां च(? वा) त्रयोदश्यां चतुर्दश्यामथापि वा।

पूर्वस्यामुद्गता * मेघास्तदाऽऽषाढे च वर्षणम्॥ २४॥

इसी प्रकार माघ शुक्ला त्रयोदशी और चतुर्दशी के दिन यदि पूर्व दिशा में मेघ उठते दिखाई दें तो आषाढ़ मास में समय पर वर्षा होगी।

*(*पाठांतर- पूर्वनिर्दिष्ट मातृका- पूर्वस्यां चोत्थिता)*

अन्यदप्याह

पञ्चमी कृष्णपक्षस्य माघमासस्य षष्ठिका।

सप्तमी शुक्रमन्देन्दुयुक्ता सस्यर्द्धिदा मता॥ २५॥

इसके अतिरिक्त माघ के कृष्णपक्ष की पञ्चमी, षष्ठी व सप्तमी तिथि को यदि शुक्रवार, शनिवार और सोमवार हो तो खेती बहुत होती है।

अन्येषां

येते योगापदा माघेन भवन्ति तदा खलु।

गोधूमाः शालयोमुद्गाः भाद्रे यान्ति महर्घतां॥ २६॥

माघ मास के उक्त फल वर्णन में कहे गए योग नहीं हो तो गेहूँ, शालीधान्य या चावल और मूंग जैसे जिंस भाद्रपद मास में तेजी पर जाते हैं।

त्रयोदश्यांहिमफलं

माघे मासे(शे ?) त्रयोदश्यां हिमैराच्छादितन्नभः।

यदा तदा समर्घंति व्रीहयो नात्र संशयः॥ २७॥

माघ में त्रयोदशी के दिन यदि हिमपात अथवा कुहिरा छाये और आसमान ढक जाए तो अन्न सस्ता होगा, इसमें कोई संशय नहीं है।

अमायापौर्णमास्याघनफलं

अमावस्या यदाच्छन्ना तदा भाद्रे जलं भवेत्।

पूर्णिमासी घनच्छन्ना षष्ठेमासि महर्घता॥ २८॥*

माघ की अमावस्या के दिन यदि बादल हो तो भाद्रपद में वर्षा का योग जानना चाहिए। इसी प्रकार यदि पूर्णिमा के दिन बादल हों तो आगामी छठे मास में वस्तुएँ महंगी होगी, ऐसा जानना चाहिए।

*(*पाठांतर- पूर्वनिर्दिष्ट* ***मातृका-*** *अमावस्या यदा छन्ना तदा* ***भाद्रे जलं भवेत्।*** *माघस्य शुक्लसप्तम्यां यदिस्याद् वारिवर्षणम् ॥ सविद्युन्मेघसंयुक्ता तदा पृथ्वी* ***जलाप्लुता*** *॥ यह भी श्लोक पूर्वोक्त मातृका के पृष्ठ.८ पर १८वें* ***क्रम*** *पर है- सप्तम्यां* ***माघमासे च*** *माधवे प्रथमेऽहनि। वान्ति वाताश्च* ***शुभदास्तदा प्रावृषि वर्षणम्*** *॥)*

इति श्रीनारदीये मयूरचित्रे **माघमासफलकथनोनाम त्रयोदश**ोऽध्याय: ॥ १३ ॥

अथ फाल्गुनमासफलकथनम् चतुर्दशोऽध्याय:

तत्र सङ्ग्रहकार्यमाह

यदा वक्रगतीस्यातां शनि: भौमो-तपस्यकौ।

माघेवाघासुतिथिषु त्रिषु सस्यस्य सङ्ग्रहः॥

कार्यो विपश्चिता तत्र पक्षां ते स्याच्चतुर्गुणम्॥ १॥

अब फाल्गुन मास का फल वर्णित किया जा रहा है। फाल्गुन मास में यदि मङ्गल और शनि ग्रह प्रतिपदा, द्वितीया और तृतीया तिथियों में वक्री हो तो तृण का संग्रह कर लेना चाहिए, इसको एक पखवाड़े के बाद बेचने में चौगुना लाभ मिलता है।

गुरवास्त वा वक्री फलं

फाल्गुने(णे ?) च गुरोरस्तम् वक्रम् वा यदि जायते।

तदा सस्य महर्घत्वं शनिर्वावक्रतां व्रजेत्॥ २॥

फाल्गुन में यदि वृहस्पति अस्त हो अथवा वक्री हो या फिर शनि वक्री हो तो तृण बहुत महंगा हो जाएगा।

शुक्रास्तफलं

यदा फाल्गुनकेमासे प्रयात्यस्तं भृगो:सुतः।

धान्यादि सर्वसस्यानां तदा वाच्या महर्घता॥ ३॥

फाल्गुन के मास में यदि शुक्रास्त हो तो अन्न सहित सभी प्रकार का चारा भी महंगा हो जाता है।

यदा दुर्भिक्षमादेश्यं षणमासं दैवचिंतकैः॥ ४॥

इसी प्रकार के योग पर, शुक्रास्त के दिन से लेकर आगामी छह महीनों का ज्योतिर्विदों को दुर्भिक्षकाल कहना चाहिए।

फाल्गुने वृष्टिगर्भलक्षणानि

सप्तमी कृतिकायुक्ता फाल्गुनस्य सिता यदा।

तदा भाद्रपदेमासि कुह्वा मेघः प्रवर्षति॥ ५॥

फाल्गुन शुक्ला सप्तमी पर कृतिका नक्षत्र हो और बादल दिखाई दें तो भाद्रमास की अमावस को अवश्य वर्षा होगी, यह जानना चाहिए।

सप्तम्यां विनावातंघनैश्छन्नफलं

विना वातं घनैश्छन्नं वियदस्यां (-षतस्यां ?) तिथौ यदा।

विद्युद्वा जायते * तत्र तदा सस्यावृता मही॥ ६॥

फाल्गुन शुक्ला सप्तमी को यदि बादल अथवा बिजली हो और पवन प्रवाहित होता हो तो अगले संवत्सर में पृथ्वी पर तृण बहुत होगा।

*(*पाठान्तर- तत्रैव- दृश्यते)*

त्रयोदश्याष्टम्यां वृष्टिफलं

फाल्गुनस्य त्रयोदश्यामष्टम्यां वृष्टिरुत्तमा।

यदि स्याच्चसितायां चैत्तदा लोका निरामयाः॥ ७॥

फाल्गुन शुक्ला अष्टमी तथा त्रयोदशी के दिन यदि वर्षा हो तो समस्त लोक समुदाय निरोगी होता है।

तिथिवृद्ध्यादीनां

प्रतिपच्छुक्लपक्षस्य वृद्धिं याति तदा शुभम्।

तृतीयादुःखिदा प्रोक्ता चतुर्दश्याष्टमी तथा॥ ८॥

इसी प्रकार फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष में यदि प्रतिपदा की वृद्धि हो तो शुभ समझना चाहिए। तृतीया बढ़े तो दुःखदायक जाने और चतुर्थी या अष्टमी बढ़ी हुई हो भी तृतीया के समान दुःखप्रदायक समझना चाहिए।

सङ्क्रान्त्यौरविभौमशनिवारश्च फलं

फाल्गुनेमीन सङ्क्रान्तौ भानुवारे तिथिक्षयः।

भौमशन्योश्च दुर्भिक्षं सितज्येन्दौ सुभिक्षकः ॥ ९ ॥

फाल्गुन में मीन की सङ्क्रान्ति में यदि रविवार, मङ्गलवार या शनिवार हो और तिथि का क्षय हो तो दुर्भिक्ष का कारण जानना चाहिए। इसी प्रकार यदि सोमवार, वृहस्पतिवार और शुक्रवार के साथ तिथि क्षय हो तो सुभिक्ष जानें।

मासलक्षणम्

माघे हिमं न पतितं वातो वांति न (च) फाल्गुने।

***न च व्योमान्वित चैत्रे घनेन पतनं यदि ॥ १० ॥**

करकाणां च वैशाखे शुक्ले चण्डातपो भवेत्।

तदातितुच्छ वृष्टिस्यात् प्रावृट्काले न संशयः ॥ ११ ॥

माघ मास में शीत नहीं पड़े, फाल्गुन में पवन नहीं चले, चैत्र में बादल नहीं हो, वैशाख में ओलावृष्टि नहीं हो, ज्येष्ठ में प्रचण्ड गर्मी नहीं पड़े तो पावसकाल में वर्षा नहीं होगी, ऐसा जानना चाहिए।

*(*पाठान्तर- तत्रैव- न च धूमायितं चैत्रे घनैर्नभस्ततं न तु। करका मोच(न) वैशाखे शुक्रे (शुचौ) चण्डातपो न तु। तदातितुच्छा वृष्टिः स्यात् प्रावृटकाले न संशयः ॥ उक्त मातृका में निम्न श्लोक अतिरिक्त भी हैं- शुक्ले पक्षे शशिनि तनुगे तोयराशिस्थिते वा। केंद्रे याति प्रचुरमुदकं सौम्ययोगे प्रदिष्टम् ॥ पापैर्दृष्टे न च बहुजलं प्रश्नकालेङ्गितज्ञैः। वाच्यं सर्वफलमविकलं चंद्रवद् भार्गवेऽपि॥ पृष्ठ १८)*

इति श्रीमयूरचित्रेनारदोक्ते फाल्गुनमासफल कथनं नाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

अथ सर्वमासफलम् नाम पञ्चदशोऽध्यायः

तत्रैव पौर्णमास्याभूकम्पनोफलं

सर्व्वमासे पूर्णियामां भूमिकम्पो यदा भवेत्।

तद्दिने वृष्टिदः प्रोक्त इतरासुन वृष्टिदः ॥ १ ॥

अब सभी महीनों के सम्बन्ध में कहा जा रहा है। जिस किसी माह में पूर्णिमा के दिन यदि भूकम्प आता है तो उसी दिन वृष्टि को करता है, अन्य दिनों में नहीं।

अन्योत्पातफलं

उल्कापातोवज्रपातः परिघः(धिः ? ?) शशिसूर्ययोः।

धूम्रकेतुः शक्रचापो ग्रहणं बहुधा यदा ॥ २ ॥

तदा सकल वस्तूनां जायते च महर्घता ॥ ३ ॥

यदि तारा टूटे, विद्युत्पात हो, सूर्य या चंद्रमा का मण्डल हो, धूम्रकेतु, इन्द्रधनुष और ग्रहण का एकाधिक योग होता है तो सभी वस्तुएँ महंगी हो जाती है।

इति सर्वमासफलम्।

अथ वर्षकुण्डल्याम्

यस्मिन् वर्षे च पक्षे शशिनितनुगते पापराशि

स्थिते वा केंद्रे याते प्रचुरमुदकं सौम्य योगोपदृष्टे।

पापेर्दृष्टे न च बहुजलं प्रश्नकालेपि तद्धर्वाच्यं

सर्वम् फलम् विकल चंद्र-भार्गवोऽपि ॥ ४ ॥*

जिस संवत्सर की लग्र कुण्डली में लग्र में अथवा केंद्र में यदि चंद्रमा हो और शुभग्रह कर्क सहित हो तथा शुभग्रह की दृष्टि हो तो अच्छी वर्षा के योग को बनाता है। यदि पापस्थान में केंद्र से और किसी भाव में हो तो वर्षा नहीं होती है। चंद्रमा के साथ

ही यह विचार शुक्र से भी जानना चाहिए। इस प्रकार प्रश्न कुण्डली में भी विचार किया जा सकता है।

*(*प्रकाशित पाठ में यहाँ से क्रमशः 'वियभितिरि' श्लोक तक क्रमशः १ से १२ श्लोकाङ्क डाले गए हैं)*

अत्रैव वृष्ट्यर्थ प्रश्नं चाह

पृष्ठापृच्छन् * स्पृशति सलिलम् वारिकार्योन्मुखो वा

पृच्छाकाले सलिलमिति वा श्रूयते(श्रवते ?) स(?त)न्मुखे वा।

दृष्टः कूपो विमलसलितं चेद्वदेद्वारिवृष्टि मेतत्सर्वं

भवति च फलं व्यत्ययं व्यत्ययेन॥ ५॥

यदि वर्षा के विषय में पूछताछ करने वाला जल का स्पर्श करे अथवा जल का ही काम करने वाला जलधारी, पानेरी आदि हो अथवा उस समय में जल शब्द या जल का स्वर सुनाई दे या फिर जल निर्मित वस्तु, कूप, वापि इत्यादि पर दृष्टि पड़े तो वर्षा का कह देना चाहिए और यदि इनके विपरीत लक्षण हो तो वर्षा का अभाव कहा जाना चाहिए।

(पाठांतर- 'ग' मातृका, पृष्ठ १८- वर्षाप्रश्ने। यही बात 'कृषिपराशर' में बताई गई है- जलस्थो जलहस्तो वा निकटेऽथ जलस्य वा। दृष्ट्वा पृच्छति वृष्ट्यर्थ वृष्टिः सञ्जायतेऽचिरात्॥ श्लोक ६५; अन्यत्र कहा गया है कि यदि सुबह का सूर्य अति दुर्निरीक्ष्य हो और मेघ वैदूर्य की शोभा के समान दिखाई देते हों तो निरंतर वृष्टि होगा, ऐसा कहना चाहिए- प्रष्टुर्ब्रूयाज्जलमविरलं दुर्निरीक्ष्योऽयोतिसूर्यः। प्रातःकाले भवति जलदः स्निग्धवैदूर्यकान्तिः॥ बृहद्दैवज्ञरञ्जनम् ५, १८)

सद्योवृष्टिलक्षणम्

प्रातःकाले पीतरश्मिर्दुर्निरीक्ष्यो भवेद्रविः।

स्निग्धवैदूर्यकान्तिश्चैन्मेघो वृष्टिः प्रद स्मृतः॥ ६॥

प्रभात के समय जबकि सूर्य के ताप में तीक्ष्णता हो, पीत वर्ण रश्मियाँ हो और बादल स्निग्ध, श्यामवर्ण वाले हो तो शीघ्र वृष्टि होती है।

अन्यदप्याह

प्रावृट्काले यदा सूर्यो मध्याह्ने दुःसहो भवेत्।

तद्दिने वृष्टिदः प्रोक्तो द्रु(द्व ?)तस्वर्णसमप्रभः ॥ ७॥

यदि पावसकाल में मध्याह्नकाल में सूर्य की किरणें प्रचण्ड या दुःसह हों और उसकी प्रभा तप्तस्वर्ण के समान हो तो उसी दिन पानी बरसता है।

अत्रैव शकुनाः

***यदा जलस्वै विरसं जलदा गौ(ने)त्र सन्निभा।**

दिशश्च विमलः सर्वाः काकारा(?-ण्ड)नाभन्नभस्तलम्॥ ८॥

अब तात्कालिक वृष्टि के और भी लक्षण कहे जा रहे हैं। जल विरस हो जाए और पर्वतों पर बादल हों, दिशाएँ निर्मल हो तथा कौओं के अण्डों के सदृश्य आकाश हो तो तत्काल वर्षा होगी, ऐसा कहना चाहिए।

(पाठांतर- 'ग' मातृका, पृष्ठ १८, श्लोक ४- यदा जलं च विरसं वियद्रोनेत्र सन्निभम्। दिशश्च विमलाः सर्वा काकाण्डाभं यदा नभः॥)

अन्यदप्याह

न यदा वातिं पवनश्च स्थलं(न्नं ?) यान्ति झषादयः।

शब्दं कुर्वन्ति मण्डूकास्तदा (स्याद्)वृष्टिरनुत्तमा * ॥ ९॥

यदि पवन का बहना थम जाए और जल में तैरती हुई मछलियाँ नीचे जाने लगे, मेंढक बोलने लगे तो हो तो तत्काल अच्छी वर्षा संभावित है, ऐसा कहना चाहिए।

(पाठांतर- 'ग' मातृका, पृष्ठ १८, श्लोक ५- वृष्टिरुत्तमा॥)

पशुपक्षिकीटादीनां वृष्टिसूचिकाश्चेष्टाः

नखैर्लिखन्ति मार्जाराः पृथिवीं च यदा भृशम्।

लोहानास्मलनिचयो विस्त्रगन्धो यदा भवेत्॥ १०॥

बिल्लियाँ और कुत्ते अपने नाखूनों से धरती को नोचने लगें तथा लोहे में लगे जंग से दुर्गंध आने लगे तो तत्काल पानी बरसेगा, ऐसा कहना चाहिए।

अन्यदप्याह

सेतुं कुर्वंति रथ्यायां शिग(?-श)वो मिलिता यदा।

(अं)जनाशुद्धाभा * गिरयो वाष्पमुद्रितकन्दराः॥ ११॥

रास्ते में बच्चे मिलकर सेतु या घर पाथ रहे हों, पर्वतों का वर्ण अञ्जन जैसा काला दिखाई देने लगे और गुफाओं से वाष्प उठने लगे तो तत्काल बरखा होगी, ऐसा जानना चाहिए।

(पाठांतर- 'ग' मातृका, पृष्ठ १८, श्लोक ७- शुद्धाञ्जनाभा)

अन्यदप्याह

पिपीलिका यदाऽण्डानि गृहीत्वोच्चम्प्रयान्ति च*।

सर्पा वृक्षं समायान्ति तदा बहुजलप्रद(ा):॥ १२॥

इसी प्रकार चीटियाँ अपने अण्डों को उठाकर ऊपर किसी सुरक्षित स्थान पर लेकर जाती हों, सांप व नाग वृक्ष पर चढ़ जाते हों तब खूब पानी बरसेगा, ऐसा जलप्लावन कहना चाहिए।

(पाठांतर- 'ग' मातृका, पृष्ठ १८- गृहीत्वोच्चैः प्रयान्ति वै।)

शीघ्रवृष्टिकारणाः

गावः सूर्य्यं निरीक्ष्यन्ते * कृकलासगणास्तथा।

गृहान्नेच्छन्ति पशवो निर्गमं कुक्कुरास्तथा॥ १३॥

गायें सूर्य की ओर मुख किए हुए हों, गिरगिट भी सूर्य की ओर टकटकी लगाए हुए हों, पशु घर से बाहर नहीं निकलने और कुत्ते भी बाहर जाने में रुचि नहीं दर्शाते हों तब तत्काल वर्षा के विषय में कहना चाहिए।

(पाठांतर- 'ग' मातृका, पृष्ठ १८- निरीक्षन्ति)

अन्यदप्याह

लताश्चोर्द्ध्वमुखाः सर्वा स्नानं कुर्वन्ति पक्षिणः।

पांसु(शु ?)भिश्च तृणाग्राणि सेवन्ते वा सरिसृपाः॥ १४॥

लताएँ ऊर्ध्वमुखी होकर पेड़ों पर चढ़ जाती हों, शाखाएँ भी ऊँची हो गई हो, जीव-जन्तु धूलस्नान में रत दिखाई दें तथा चारे के आगे के भाग पर कीट झूलते दिखाई देने लगें तो तत्काल वर्षा होगी, ऐसा विचारना चाहिए।

अन्यदप्याह

वियभि(?-ति)तिरिपक्षाभमलिपक्षनिभं तथा।
तदा वृष्टिः समादेश्या निश्चितं दैवचिन्तकैः ॥ १५ ॥

इसी प्रकार बादलों का रंग तितर के पंखों जैसा हो जाए या फिर भौरों के पंख जैसा दिखाई दें तो समय-कथनकर्ताओं को निश्चित ही तात्कालिक वर्षा के विषय में कहना चाहिए।

(अन्य जन्तुओं की चेष्टा से वर्षा का ज्ञान बृहद्दैवज्ञरञ्जनम् में इस प्रकार बताया गया है- अवातवातस्तपशीत उष्णं रटन्ति मण्डूकशिवाहिचातकाः। मयूरकण्ठद्युतिसूर्य मण्डले त्रिभिर्दिनैर्वारि पतन्ति भूतले॥ ५, २९)

इति श्रीमयूरचित्रे वृष्टिलक्षणं पञ्चदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

अथ ग्रहयोगफलमाह षोडशोऽध्यायः

अत्रैव वृष्ट्यादिसूचक ग्रहयोगाः

प्रावृट्काले शीतरश्मिर्यदास्या–

च्छुक्रादस्ते * सौम्यदृष्टो यदा स्यात्।

बुद्धिस्थाने सप्तमे च त्रिकोणे

वृष्टिर्वाच्या दैवविद्भिः पुराणैः ॥ १ ॥

पावसकाल में शुक्र से ४, ५, ७वें त्रिकोण में यदि चंद्रमा स्थित हो और प्रश्न लग्नानुसार भी उक्त स्थानस्थ हो तो उत्तम वर्षा कहना चाहिए।

(पाठांतर– 'ग' मातृका, पृष्ठ १८, श्लोक १२– स्यात्सूर्यादस्ते)

शुभग्रहवशात् वृष्टिज्ञानं

शुभाश्च जलराशिस्थाः केंद्रगाः स्वीयगेहगाः।

जलप्रदाः सित पक्षे विधौ चोदयगे जले ॥ २ ॥

यदि शुभग्रह जलराशि में हो और केंद्र के ग्रह अपने गृह में ही स्थानस्थ हो तथा शुक्लपक्ष में चंद्रमा का उदय जलराशि में हो तो जलवर्षक जानना चाहिए।

अन्यदप्याह

सप्तमगौ रविचंद्रौ सितरविजौ रसातले लग्नात्।

प्रावृट्काले जलदौ भवतो वा द्वितीयसहजस्थौ ॥ ३ ॥

वर्षाकाल में लग्न से यदि सातवें सूर्य, चंद्रमा हो और चतुर्थ शुक्र, शनि हो अथवा द्वितीय, तृतीय हो तो भी वर्षा का योग बनता है।

प्रश्नलग्नानुसारे वृष्टिज्ञानं

प्रश्नलग्नात्तोयराशिर्यदि वित्तः तृतीयके:।

तोयसंज्ञो ग्रहस्तत्र भवत्यत्र(-भ्रं ?) जलप्रदम् ॥ ४ ॥

प्रश्नलग्न से द्वितीय या तृतीय जलचर राशि हो और उनमें जलसंज्ञक ग्रह स्थित हो तो भी वर्षा कहना चाहिए।

द्वे शुभग्रहयोग फलं

समागमे सित बुधयोस्तथा * च गुरु-शुक्रयोः ।

तथैव जीव-बुधयोर्वृष्टिः स्यान्नात्र संशयः ॥ ५ ॥

यदि शुक्र, बुध एक ही राशि के हों तथा वृहस्पति, शुक्र अथवा बुध-वृहस्पति एक घर में हो तो निश्चय ही वर्षा होती है, इसमें कोई संदेह नहीं है।

(पाठांतर- 'ग' मातृका, पृष्ठ १८, श्लोक १७- समागमे ज्ञसितयोस्तथा)

अन्यदप्याह

यदा भवन्ति सूर्य्यस्य ग्रहाः पृष्ठावलम्बिनः ।

पुरतो वा यदा यान्ति तदा त्वेकार्णवा मही ॥ ६ ॥

यदि सूर्य के आगे और पृष्ठावलम्बित समस्त ग्रह हो अर्थात् जब सभी ग्रह सूर्य से आगे या पीछे की राशियों में विचरण करते हैं तो पृथ्वी पर अच्छी वर्षा का योग बनता है।

(तुलनीय- अग्रतः पृष्ठतो वापि ग्रहाः सूर्यावलम्बिनः। यदा तदा प्रकुर्वन्ति महीमेकार्णवामिव॥ बृहत्संहिता २८, २२)

अन्यदप्याह

बुध-भृग्वोर्मध्यगतः सूर्य्यश्चेज्जलशोषकः ।*

तयोर्यदि समीपस्थस्तदा बहुजलप्रदः ॥ ७ ॥

बुध और शुक्र के बीच यदि सूर्य का संचरण हो तो वह जल को सोख लेता है और यदि निकट ही होता है तो बहुत जल बरसता है।

(पाठांतर- 'ग' मातृका, पृष्ठ १९, श्लोक १९- बुधशुक्रयोर्मध्यगतः सूर्यः स्याज्जल शोषकः ।)

अन्यदप्याह

अग्रे याति तदा(?यदा) भौमः पश्चाच्चलति भास्करः।

तत्र वृष्टिर्न विपुला * जायते नात्र संशयः॥ ८॥

इति सद्योवृष्टिग्रहाः।

ग्रहों में यदि आगे मङ्गल हो और पीछे सूर्य गमन करता हो तो पर्याप्त वर्षा नहीं होती, इसमें कोई संदेह नहीं समझें।

(पाठांतर- 'ग' मातृका, पृष्ठ १८- बहुला)

तत्र विशेषोक्तयः

दशेवि(?दर्शेव) पौषमासे भवति यदि बलारातिमक्षत्रयुक्तो

देशे सस्यम्महर्घम्मवति चतदामूलयुक्तोऽर्धमौल्यम्।

पूर्वाषाढायुतश्चेन द्विगुण सर्पयुतोवैश्वदेवेन कुर्यात् दुर्भिक्षं

राष्ट्रभङ्गज्जनपद मरणन्नर्तयेत्कौपिशाचान्॥ ९॥

पौष की अमावस के दिन यदि ज्येष्ठा नक्षत्र हो तो तृण महंगा होता है। मूल नक्षत्र हो तो आधा मूल्य हो जाता है, पूर्वाषाढ़ हो तो दुगुना तथा धनिष्ठा नक्षत्र हो तो दुर्भिक्ष पड़ता है और मृत्युजन्य त्रासदियों के साथ पिशाचादि ताण्डव करने लगते हैं।

यदि भवति शशाङ्के मण्डलं चण्डरश्मौ

रविशनिकुजवारे पौषमासे(शे ?)त्वमायामद्विगुण।

दहनवैदेस्तुल्यते रत्नमौल्यम् बुधगुरुभृगुसोमे

स्वल्पमौल्यं हि धान्यम्॥ १०॥

पौष कृष्णामावस्या यदि शनिवार, मङ्गलवार को पड़ती हो और उसी दिन सूर्य एवं चंद्रमा में मण्डल हो तो अन्न का मोल तिगुना, चौगुना हो जाता है या फिर इतना महंगा हो जाता है कि रत्नों के मूल्य के बराबर हो। इसी प्रकार बुध, वृहस्पति, शुक्र और सोमवार यदि अमावस्या को हो तो मूल्य कम हो, अन्न बहुत ही सस्ता बिकता है।

माहेयवारे रविजे दिने वा

भवेदमा शीतकर प्रियावा।

लोकः सलोक क्षितिपाल लोकः

परस्परं कुद्ध्यति शस्त्रसंघै॥ ११॥

पौष की अमावस्या अथवा पूर्णिमा को रविवार, शनिवार और मङ्गलवार हो तो समस्त लोकों में परस्पर क्रोध, आतंक और सशस्त्र युद्ध होता है।

वक्रातिचारयो

अतिचारगतेजीवे भौमे-मन्दे च वक्रीणि।

हाहाभूतं जगत्सर्वं विशेषा दक्षिणापथे॥ १२॥

यदि वृहस्पति का अतिचार हो अथवा शनि, मङ्गल वक्री हो जाए तो जगत में हाहाकार मच जाता है। विशेष रूप में दक्षिणापथ के देशों में इसका प्रभाव देखने को मिलता है।

वक्रेसौरपितृफलं

छत्रस्यभङ्गस्सलिलस्यनाशो

लोकेषु पीडा पशुवित्त हानिः।

स्याच्छ्रीविहीनो यदि चक्रवर्ती

वक्रे च सौ(शौ ?)रेपितृ संस्थिते च॥ १३॥

यदि मघा नक्षत्र पर शनि वक्री होता है तो छत्रभङ्ग होता है और जल तथा जीवों का नाश करता है। इस योग से वित्त की हानि, लोक व पशुधन में कष्ट व्याप्त होता है, चक्रवर्ती राजा तक श्रीविहीन हो जाते हैं।

धनुमीनवृषालिस्थेवक्रसौरस्यफलं

यदा धनुमीनवृषालिसंस्थे

धरासुते सूर्यसुते च वाक्रिणि।

हयैश्चनागैश्चनरैश्च गोकुलै विभाग

शेषां कुरुते वसुंधराम्॥ १४॥

वृष, वृश्चिक, धन, मीन- इन राशियों पर यदि मङ्गल, शनि वक्री होता है तो गज, अश्व, मानव और गोधन आदि जीव इस पृथ्वी पर एक तिहाई ही शेष बचेंगे। यह योग अतिनाशकारी है।

अन्येषां

यदारशौरीसुरराजमंत्री

यदैकरांशो समसमसप्तके वा।

अयोध्यलङ्कापुर मध्यदेशे

क्षुधाभयं शस्त्रभयं करोति॥ १५॥

वृहस्पति, मङ्गल, शनि ये तीनों ग्रह यदि एक ही राशि पर हो अथवा आपस में सातवें हों तो अयोध्या से लेकर लङ्का के बीच में स्थित देशों में अकाल का प्रभाव होगा और शस्त्रभय व्याप्त होगा।

वक्रगतो रविसुतोय धरासुतो वा

हस्ते तथैव पितृ दैवति रौद्रभेषु।

छत्रस्यभङ्गं पतनं करोति

ससैनिकानां खलु शस्त्रसंघेः॥ १६॥

आर्द्रा, मघा एवं हस्त नक्षत्रों पर शनि या मङ्गल वक्री होता है तो छत्रभङ्ग होता है और युद्ध में सैनिक कट-कटकर पृथ्वी पर धराशायी होते हैं।

अन्यदप्याह

कन्यायां मीनसिंहेवृषधनुषि यदा वक्रगौ भौममन्दौ

पृथ्वीशाः क्रूरचिंताः बहुरिपु दलिता विग्रहश्चैव पीडा।

दुर्भिक्षं सख्यनाशोग्रहगति भयदाः पित्तरोगाः प्रजानाम्पीड्यंते

चात्रिगोत्रा नृप महिष गजास्तन्निवृतौ तु यावत्॥ १७॥

कन्या, मीन, सिंह, वृष एवं धनु राशियों पर यदि मङ्गल और शनि वक्री होता है तो राजाओं को शत्रुओं से पीड़ा होती है। इस योग में दुर्भिक्ष पड़ता है, प्रजा में पित्त जन्य व्याधियों का कुप्रभाव होता है और चंद्रवंशी राजाओं को पीड़ा विशेष होती है। इसी प्रकार महिष, गजादि पशुधन भी व्याधि से नहीं बचता। ये पीड़ाएँ ग्रह के मार्गी होने पर ही दूर होती है।

प्रतिपद्दीनां

प्रतिपद बुधसंयुक्ता सदादुर्भिक्षकारिका।

ज्येष्ठमासविशेषेण वर्षेत्वा गामिके फलं॥ १८॥

यदि किसी संवत्सर में प्रत्येक मास की प्रतिपदा बुधवार वाली हो तो दुर्भिक्ष को करने वाली होती है। यदि ज्येष्ठ की प्रतिपदा बुधवार वाली हो तो अग्रिम वर्ष में विशेष रूप से दुर्भिक्ष करती है।

पूर्णिमाफलं

मासर्क्षात्पूर्णिमा हीना समाना याधिवाऽधिका।

समर्घ च महंचं च महर्घत्त भवेत् क्रमात्॥ १९॥

महीने नक्षत्र से यदि पूर्णिमा न्यून हो तो अन्नादि वस्तुएँ सस्ती होती है तथा बराबर अथवा अधिक हो तो अन्नादि द्रव्य महंगे हो जाते हैं।

सङ्क्रान्तिविचार

सङ्क्रान्तिर्जायते यत्र भास्करे भूसुते शनौ।

तस्मिन मासिभयं घोरं दुर्भिक्ष द्दष्टितो भयम्॥ २०॥

यदि सूर्य, मङ्गल और शनिवारों में सङ्क्रान्ति हो तो दुर्भिक्षकारक होती है। उस योग में भयाधिक्यता रहती है।

सङ्क्रान्तिसमये भानोभवेत्सप्तमगः शशी।

तदा काले महर्घं स्यात्सर्वधान्यं सुनिश्चितम्॥ २१॥

सङ्क्रान्ति के दिन यदि सूर्य से सातवें घर में चंद्रमा हो तो उसी मास में अन्नादि वस्तुओं का दाम बढ़ जाता है, इसे सुनिश्चित जानें।

मीने-मेषे द्विमासं स्यात्तथा सिंहेदये त्रिषु।

मासं मिथुनगेसूर्ये द्विमासं वृषकुंभयोः॥

कर्केमगे च षणमासं मासं शेषं महर्घता॥ २२॥

मीन, मेष की सङ्क्रान्ति में यदि सूर्य सातवें से चंद्रमा हो तो दो माह तक अन्न में महंगाई रहती है। सिंह में तीन माह तक, वृष-कुंभ में दो माह तक और कर्क-मकर में छह माह तक महंगाई रहती है, शेष माह में एक माह तक दुर्भिक्ष रहता है।

पूर्व सङ्क्रान्ति नक्षत्रात्पर सङ्क्रमणं यदि।

द्वित्रिऋक्षेसुभिक्षं स्यादुर्भिक्षं तुर्य्य पञ्चमे।

षष्ठे लोका भ्रमंत्याशु ग्रहीत्वा खर्परं करे॥ २३॥

पहली सङ्क्रान्तिके नक्षत्र से दूसरे तथा तीसरे नक्षत्र पर यदि दूसरी सङ्क्रान्ति हो तो सुभिक्ष का कारण बनता है और चतुर्थ, पञ्चम नक्षत्र पर हो तो दुर्भिक्ष उसी महीने में होता है। यदि छठे नक्षत्र पर सङ्क्रान्ति हो तो लोग खप्पर हाथ में लिए मांगते फिरेंगे।

ज्येष्ठवारानुसारफलकथनं

ज्येष्ठस्यागमने प्राज्ञैर्यातिथिः प्रथमा भवेत्।

केनवारेणसंयुक्ता विज्ञेया साविशेषता॥ २४॥

ज्येष्ठ मासारंभ में यह विचार करना चाहिए कि प्रतिपदा के दिन कौन सा वार है? इसी वारानुसार फल जानना चाहिए।

भानुनापवनोवाति कुजेन व्याधिमादिशेत्।

चंद्रपुत्रेण दुर्भिक्षं भवतिह न संशयः॥ २५॥

गुरुभार्गवे सौमानामेकोपि यदि जायते।

वर्षावधि भवेत्पृथ्वी सस्यधान्यधनाकुला॥ २६॥

अथवा दैवयोगेन शनिवारस्तदा भवेत्।

जलशोष प्रजानाशच्छत्रभङ्गस्तदा भवेत्॥ २७॥

ज्येष्ठ मास में कृष्णपक्ष की प्रतिपदा को यदि रविवार हो तो पवन चलेगा, मङ्गलवार हो तो रोग, बुधवार हो तो अकाल पड़ेगा तथा गुरुवार, शुक्र और सोमवार हो तो पावसकाल में वर्षा होगी व तृण, धन धान्य की वृद्धि होगी। यदि दैवयोग से शनिवार हो तो जल का शोषण करेगा और प्रजा का नाश, छत्रभङ्ग होगा। इन फलाफलों को निम्न चक्र से भी जाना जा सकेगा।

ज्येष्ठप्रतिपदावारानुसारफलचक्र

क्रम	वार	फल
१.	रविवार	पवन चलेगा, बादल छिन्न-भिन्न
२.	सोमवार	सुवृष्टि, सस्योत्पादन होगा
३.	मङ्गलवार	रोग, व्याधियाँ बढेंगी
४.	बुधवार	दुर्भिक्षकारक
५.	वृहस्पतिवार	सुवृष्टि, धान्यवृद्धि का सङ्केतक
६.	शुक्रवार	सुवृष्टि, धनसंपदाकारक
७.	शनिवार	जल शोषक, प्रजानाश, छत्रभङ्ग

चंद्रोदयन्निरोक्षेत द्वितीयालब्धजन्मनः।

ज्येष्ठोत्तरेष्व(ह्य ?)मायां च भानोरस्तं विलोकयेत्॥ २८॥

इसी प्रकार ज्येष्ठ की द्वितीया के चंद्रमा के उदयकाल पर विचार करें और ज्येष्ठ कृष्णा अमावस्या के दिन सूर्य के अस्तकाल पर विचार करें।

यद्युत्तरे शशी मध्यम्वायाति दक्षिणेः रवेः।

उत्तमो-मध्यमो-नीचः कालः संपद्यते तदा॥ २९॥

सूर्य से उत्तर में यदि चंद्रमा हो तो उत्तम समय होता है। यदि मध्य में हो तो समय मध्यम तथा दक्षिण में हो तो अधम समय जानना चाहिए।

आषाढादीनां वारफलं

आषाढे-श्रावणे-पौषे रविभौमशनैश्चराः।

वासरा यत्र जायंते तत्फलं यच्छ्रणु स्व तत्॥ ३०॥

आषाढ, श्रावण और पौष मासों में पड़ने वाले रविवार, शनिवार और मंगलवार का फल कहा जा रहा है, उसे सुनना चाहिए।

पञ्चार्कवारेदुर्भिक्षं पञ्चभौम महद्भयम्।

पञ्चमंदे च दुर्भिक्षे शेषा वारा शुभावहाः॥ ३१॥

उक्त मासों में यदि पाँच रविवार हो तो रोग, पाँच मङ्गलवार हो तो भय, पाँच शनिवार हो तो दुर्भिक्ष पड़ता है। अन्य वार हो तो शुभकर्ता जानना चाहिए।

शुक्रोदयास्तफलं

आषाढे-श्रावणे-पौषे-वैशाखे भृगुनंदनम्।

गवां मृत्युः प्रजापीडा दुर्भिक्षं राजविग्रहः॥ ३२॥

आषाढ़, श्रावण, पौष और वैशाखमास में यदि शुक्र का उदय हो तो गौ आदि पशुओं की मृत्यु, प्रजा को पीड़ा और दुर्भिक्ष होता है। राजाओं में विग्रह भी होता है।

शुक्रसौर्यास्तफलं

शुक्रसौर्य्योर्द्व(र्द्ध ?)योरस्तमैक राशौ यदा भवेत्।

अन्नपीडा महायुद्धं देशे देशे च विग्रहा *॥ ३३॥

यदि शुक्र और शनि दोनों ग्रह एक ही राशि पर अस्त हों तब महायुद्ध की आशंका जाननी चाहिए। इससे अन्न की क्षति, पीड़ा और देशों-देशों के बीच विग्रह होता है।

*(*पाठान्तर 'ग' मातृका पृष्ठ २३, श्लोक २७- विग्रहाः।)*

चतुर्पञ्चग्रहस्य युतिफलं

चत्वारः पञ्चगाः खेटा चालेनत्वेक राशिगाः।

राज्ञाम्बहुभयन्दद्युररिभिर्दुःखदा मता ॥ ३४ ॥ *

यदि कोई चार एक ही राशि पर वर्ष लग्न से पाँचवें हों तो राजाओं का बड़ा भय होता है। यह योग दुःख देने वाला होता है।

*(*पाठान्तर तथैव, श्लोक २८- चत्वारः पञ्चषाः खेटा बलिनस्त्वेकराशिगाः। राज्ञां बहुभयं दद्युरिभिर्दुःखदा मताः।)*

वक्रीफलं

यदा प्रतिपगौ खेटो नृपं क्षोभयतस्तदा।

प्रतीपगास्त्रयः खेटा युद्धवृष्टिभयप्रदाः ॥ ३५ ॥

जब दो ग्रह वक्री हो जाए, तो राजाओं में क्षोभ की वृद्धि कर राज्य चलायमान या अस्थिर कर देते हैं। इसी प्रकार यदि तीन ग्रह वक्री हो जाए तब बारम्बार युद्ध तथा भयजनक योग बनाते हैं।

चतुर्पञ्चवक्रग्रहस्य फलं

राज्यभङ्गं * हि कुर्वंति चत्वारो यदि वक्रिण।

प्रतीपगाः पञ्च खेटा भङ्गदा राज्यराष्ट्रयो ॥ ३६ ॥

इसी प्रकार यदि चार ग्रह वक्री हो जाते हों तब राज्य और देशों को भङ्ग करने में सहायक होते हैं। पाँच के वक्री होने पर भी राज्य व राष्ट्र को भङ्ग करते हैं।

*(*पाठान्तर तथैव- राजान्यत्वं।)*

महीनाशयोगं

अर्कसौ(शौ ?)री भौमसौ(शौ ?)री

तमस्सौ(सौ ?) रोज्यमङ्गलौ।

गुरुसौ(शौ ?)री महायोगो महीनाशाय कल्पते ॥ ३७ ॥

रवि-शनि, भौम-शनि, राहु-शनि, वृहस्पति-मङ्गल और गुरु-शनि इनका महायोग पृथ्वी के लिए नाशकारी होता है, यह जानना चाहिए।

पञ्चषट्सप्ताष्टग्रहस्य युतिफलं

पञ्च ग्रहा घ्नंति चतुष्पदांश्च षडवै

ग्रहा घ्नंति समस्तभूपान्।

सप्तग्रहा घ्नंति समस्तदेशान् अष्टग्रहैः

स्यात् खलु कूटयोगः ॥ ३८ ॥

यदि कोई भी पाँच ग्रह एक राशि पर आ जाएँ तो पशुओं का नाश जानना चाहिए, छह ग्रह यदि एक राशि पर हों तब राजाओं के लिए विनाशकारी, सात ग्रहों का एक ही राशि पर संचरण सब देशों के लिए नाशकारी होता है। इसी प्रकार आठ ग्रहों का एक राशि पर आना कूटयोग होता है।

फलं किमुपलभ्यते ? तदर्थमाह

समाना ऋतवः सर्वे वाति वाताः शुभा यदि।

लक्षणानि शुभानि स्युः सर्वदेव शुभं तदा॥ ३९ ॥

इस प्रकार इस मयूरचित्र ग्रंथ में वर्षा, संवत्सर, मास फलादि पर विचार किया गया है। ये सभी कथन सत्य ही होंगे, यदि ऋतुविपर्य्य नहीं होगा, पवन कठोर नहीं होगा और अन्य सब लक्षण शुभकारी होंगे। इनके साथ ही सर्व देवताओं का शुभ होना भी आवश्यक है।

इति श्रीमयूरचित्रेनारदोक्ते ग्रहयोगफलम् षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

॥ समाप्तोयं ग्रंथः ॥

श्लोकानामकाराद्यनुक्रमः

य

परिशिष्ट

अथ गार्गीसंहिता

मयूरचित्रम् के साथ प्रासङ्गिक होने से गार्गीसंहिता का पाठ यहाँ अविकल रूप से दिया जा रहा है। उदयपुर के प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान में विद्यमान इस ग्रंथ का 'गार्गीसंहिता' नाम इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि गर्ग ने इस दिशा में ग्रंथ का प्रणयन किया था, वराह, भट्टोत्पलादि ने इससे उक्तियाँ उद्धृत की है। इसके श्लोक रुद्रयामलोक्त कही जाने वाली 'गुरुसंहिता' ग्रंथ से मिलते हैं जिसकी पाण्डुलिपि (संख्या ३४७२५) सरस्वती भवन पुस्तकालय, वाराणसी में विद्यमान है। अन्यत्र भी मिलती हैं। नारदोक्तमयूरचित्रम् के अधिकांश सन्दर्भ गार्गी ग्रंथ में में खोजे जा सकते हैं।

कुल दस पृष्ठों (२० कागज) पर लिखित यह पाण्डुलिपि सन् १६८९ ई. में तत्कालीन महाराणा राजसिंह के काल में पुरोहित गरीबदास के लिए तैयार की गई थी। राजसिंह को दक्षिण राजस्थान की सर्वाधिक सुंदर झील 'राजसमंद' के निर्माण का श्रेय है और उसके तट पर २७ शिलाओं पर उत्कीर्णकर लगवाई गई 'राजप्रशस्ति' को विश्व का सबसे बड़ा शिलालेख होने का श्रेय है। गरीबदास राजसिंह के दरबार में अति सम्मान्य पुरोहित एवं उत्सवाधिकारी था।

ऐसा जान पड़ता है कि लिपिकार ने इसे किसी अन्य विशाल ग्रंथ से पुनर्लेखित किया था। इसमें न मङ्गलाचरण है न ही कहीं श्लोकों का क्रमाङ्क दिया गया है। बीच में ही पाठान्तर नाम से भी श्लोक दिए गए हैं तथा घाघ भड्डरी की उक्ति का भी समावेश कर लिया गया है। प्रस्तुत पाठ में यत्र-तत्र भाषागत पर्याप्त त्रुटियाँ हैं, किंतु आशय स्पष्ट हो सकता है, इसकी और कोई पाण्डुलिपि नहीं मिलने से पाठशोधन संभव नहीं हो सका है, तथापि अविकल मूलपाठ दिया जा रहा है ताकि शोधार्थियों के लिए उपयोगी हो सके और इस विषय की एक अज्ञात पाण्डुलिपि भी विद्वज्जनों के समक्ष आए।

ईश्वरोवाच

शृणु शक्त्य यथातथ्यं चैत्रायाः पञ्चमी फलं।
चैत्रस्य शुक्ल पञ्चम्यामभ्रछन्नं यदा नभः॥ १॥

निर्मला स दिशः सर्वा दृश्यन्ते वायु संयुताः।
गोधूमांस्तत्र गृह्णीयान्महर्घानपि बुद्धिमान्॥ २॥
संप्राप्ते श्रावणे मासि लाभस्त्रिगुणितो भवेत्।
वैशाखे शुक्लपञ्चम्या पूर्वावातो यदा भवेत्॥ ३॥
अभ्रछन्न यदाकाशं पतन्ति बिंदवास्तथा।
ब्रह्माण्डै प्रचुरम् तत्र गृह्यते लाभकाङ्क्षिभिः॥ ४॥
तत्सर्वं विक्रयेच्छीघ्रं मासि भाद्रपदे तथा।
क्रीते च त्रिगुणं शक्र लाभो भवति पुष्कलः॥ ५॥
ज्येष्ठस्य शुक्लपञ्चम्यां गर्जितम् श्रुयते यदि।
दक्षिणस्य भवेद्वायुरभ्रच्छंभयदा नभः॥ ६॥
धान्य सङ्ग्रह कार्यस्त क्षणाद्विक्रयो भवेत्।
मासि चाश्वयुजेशक्र लाभो भवति पुष्कलः॥ ७॥
आषाढ शुक्ल पञ्चम्या पश्चिमो यदि मारुतः।
मेघरुदिशः सर्वादृश्यते ... ... ॥ ८॥
फाल्गुन फाल्गुवातस्याव्वैत्रे किञ्चित्ययोदितं।
वैशाखः पञ्चरूपीस्यात् ज्येष्टो धर्मान्वितः शुभः॥ ९॥
मासाष्टक मित्तेषु चतुष्टयमभीष्टदं।
द्वादस्यां कार्त्तिकेमासि शुक्लयां नवमी सह॥ १०॥
सकला निर्मलातीव पुष्यबन्धु स उच्चते।
कार्तिकी पूर्णमासी चत्पूर्णाकृतिकयान्विता॥ ११॥
सर्व सस्य समुत्पर्त्तिं निर्वैरा धरणीभुजः।
अथवाभरणी तद्वत्पूर्णमास्यात्पूर्णिमा दिनोः॥ १२॥
तदास्या क्षेम संतापो दुर्भिक्षादत्र्यमञ्जसं।

ईश्वरोवाच

पुष्यबन्ध प्रवक्ष्यामि श्रृणु तत्वेन भामिनि।
कातिक्यां पूर्णमास्यां तु नक्षत्रं कृतिका यदा॥ १३॥

पुष्पबन्ध समादिष्टं चतुर्मासेषु वर्षणं।
दुर्भिक्षं क्षेममारोग्यं सस्यनिष्पत्ति रेव च॥ १४॥
अथवा तद्दिनं देवि सौम्य सक्षेण संयुतं।
रोग दीर्घमनावृष्टि षण्ड-षण्डेषु वर्षति॥ १५॥
समायो विविधाकार उत्पाता विविधास्तथा।
राजानश्च तथा देवि युद्धन्ते च परस्परं॥ १६॥
अथाश्विनी च देवेषु यदा न वर्षते तदा।
मध्यमं जायते सस्य मेघो वर्षति मध्यमः॥ १७॥
अथवा रोहिणी सक्षंतद्दिने वर्त्तते प्रिये।
द्विपदाश्च तुष्यदा चैव विह्वजी भूतमानसा॥ १८॥
कार्तिकादिषु मासेषु यदींदु ग्रहणं भवेत्।
तारकापतनं चैव उल्कापातो यदा भवेत्॥ १९॥
भूमिकं पोथनिर्घातः पतंति जलबिंदवः।
आकाशात्पतितं दृष्ट्वा परिवेषं सूर्य चन्द्रयोः॥ २०॥
इन्द्रायुध वज्रपात धूमिकाश्चैव दर्शनं।
सङ्ग्रहेत्सर्व धान्यानि प्रयत्नेन तु कारयेत्॥ २१॥
मासे तु प्रथमे शक्र लाभस्तू द्विगुणो भवेत्। मार्गशीर्षः॥
मार्गादि पञ्चमासेषु शुक्ल पक्षे तिथि क्षयः।
सौर वा छत्रभङ्गो वाज्य यते राजविड्वरः॥ २२॥
मार्गशीर्षे यदा मासे सप्तमी नवमी दिने।
ईशानीं दिशिमाश्रित्य दृश्यते मेघमण्डलं॥ २३॥
स्तोकं वर्षति पर्जन्योहृथवा वातमादिशेत्।
दशम्यामुत्तरोवातः सितायां यदि जायते॥ २४॥
मार्गशीर्षे घ्रहोरात्रं तदा स्नान मुदीरयेत्।
मासस्य मार्गशीर्षस्य नक्षत्रं पितृ दैवतं॥ २५॥

कृष्णपक्षे चतुर्दस्यां सविद्युन्मेघदर्शनं।
तस्मिन्नर्क्षे तथाषाढे जलपूर्णा मही भवेत्॥ २६॥
चतुर्थ्यां जलस्यागे च सुभिक्षं च समादिशेत्।
रात्रौ दृष्ट्वा दिने वृष्टि दिने दृष्ट्वा भवेन्निशि॥ २७॥
पुमांस्त्रीगर्भ संयोगो विद्युन्मेघस्थैव च।
सक्षेत्वाष्ट्रे तथाष्टम्यां नवम्यां वायु दैवतं॥ २८॥
सवातादिशि दृष्ट्वातु विद्युदभ्रेण संयुता।
त इक्षे चैवमाषाढे जल पूर्णा मही भवेत्॥ २९॥
सुभिक्षं सस्य निष्पत्ति वसुधानंदिते प्रिये।
चतुर्थी पञ्चमी षष्ठी अश्लेषा च मघा तथा॥ ३०॥
यदा तु पूर्वफा सक्षंत्रिरात्रं वर्षते ध्रुवं।
अष्टमी नवमी चैव चित्रानक्षत्र संयुता॥ ३१॥
आषाढेश्वेत पक्षे तु अष्टमी चैव सुन्दरि।
स्वाति नक्षत्र संयुक्ता त्रिरात्रं वर्षते ध्रुवं॥ ३२॥
नवमी दशमी चैव एकादशी यदा भवेत्।
चित्रा स्वाति विशाखा सु अमावस्यां प्रवर्षति॥ ३३॥
सर्व सक्षेस्तु संयुक्ता सर्व मारुत संयुता।
वर्षते तद्दिने देवि नात्र कार्या विचारणा॥ ३४॥
आषाढे श्वेत पक्षे तु सुक्ष वीरण संयुता।
नवमी दशमी चैव वर्षते नात्र संशयः॥ ३५॥
द्वादश्यां तु त्रयोदश्यां चतुर्दश्यां तथैव च।
अमावस्यां च विज्ञेया सर्व नक्षत्र संयुता॥ ३६॥
अष्ट मारुत संयुक्ता मेघाबिंदु समन्विता।
आषाढे श्वेत पक्षे तु वर्षते नात्र संशयः॥ ३७॥
एवं देवि समायोगो मेघानां गर्भलक्षणं।

कार्तिकं मार्गशीर्षं च कथितं तव सुंदरि॥ ३८॥

(घाघोक्ति-)

पौष मासि विजुल लवै इवं रसइग जुइ अभ्र।

तु जाणजे भडली जल हर वरसइ अभ्र॥

पौषे भाद्रपदे माघे शुक्ल पक्षे तिथि क्षयः।

यत्संख्ये जायते चाह्नि तत्संख्ये दोस्थ विग्रहौ॥ ३९॥

पौषे शुक्लचतुर्थ्यां तु विद्युद्दर्शनमुत्तमं।

अभ्रछिन्नं नभः श्रेष्ठमस्यमैंद्रधनुस्तथा॥ ४०॥

अजपादं प्रयत्नेन अहोरात्रं निरीक्षयेत्।

परिवेषं गर्जनं च पतंति जलबिन्दवः॥ ४१॥

सर्वेषा मेव चिह्नानां विद्युद्दर्शनमुत्तमं।

कृष्ण पक्षे तथाषाढे अमोघं वर्षते प्रिये॥ ४२॥

विद्युन्मेघ धनुर्मस्यो सद्यो कमपिनो भवेत्।

न सक्षं वर्षते तच्चन काले वर्षते तदा॥ ४३॥

अनेन ज्ञायते सर्वं वर्षणं चाप्य वर्षणं।

एतद्वैपरम गुह्यं गर्भाधानस्य लक्षणं॥ ४४॥

विद्युत्संयोग चिह्नं च न देयं यस्य कस्यचित्।

पौषमासे सिते पक्षे शतभिषज्ञ सक्षमेव च॥ ४५॥

पञ्चमी अजपादेन अभ्रमारुत संयुता।

विद्युन्मेघ समायुक्ता गर्भश्चैवं प्रजायते॥ ४६॥

आषाढे कृष्णपक्षे तु चतुर्थ्यं वर्षते ध्रुवं।

द्रोण संख्या च विज्ञेया सप्तरात्रं प्रवर्षति॥ ४७॥

पौषे तुषार्वितस्यात्पञ्चम्यां पिण्ड सिद्धये।

शुक्ला या रत्नतो वीक्ष्यतत्तोया चार्थिनात्पुनः॥ ४८॥

पौषे तु सप्तमी शुक्ला अष्टमी नवमी तथा।

सप्तम्यां रेवती रक्षमष्टम्यामश्विनी तथा॥ ४९॥

नवमी भरणीयुक्ता वातविद्युद्विनिर्दिशेत्।
हेमं तु जायते चैव *इति गर्भ समुद्भवः॥* ५०॥
एकादश्यां तथा ज्ञेयं पौर्णमास्यां तथैव च।
आषाढस्यत्वमावास्यां प्रभूत जलमादिशेत्॥ ५१॥
विद्युत्स्फुरति तत्वेन गर्जंती प्राणनाशिनि।
एवं विज्ञायते देवि मेघानां च प्रवर्षणं॥ ५२॥
एकादशी तथा ज्ञेया सहिमाविद्युतायुता।
सजला रोहिणी योगः सदादेश्यो विचक्षणेः॥ ५३॥
पूर्णमासा द्वितीया च सहिमीविद्युतायुता।
काल निष्पत्तिरादेशो मेघच्छिन्ने तथाम्बरे॥ ५४॥
आष(ा)ढस्य त्वमावास्यां प्रभूतं जलमादिशेत्।
निःपत्रि सर्व सस्यानां प्रजा च निरूप इवा॥ ५५॥
गावः पयोष्णः सर्वत्र सर्वस्यानं दिते प्रिये।
प्रथमे श्रावणेमासि पक्षेद्राण समादिशेत्॥ ५६॥
नागरेवो विजानियात् किञ्चित्सर्पभयं भवेत्।
पौष मासस्यं संक्रांतौ रविवारो यदा भवेत्॥ ५७॥
द्विगुणं धान्यौ मौल्यं च कथितं मुनि सत्तमेः।
शनिनात्रिगुणं प्रोक्तं भौमे नैव चमुर्गुणं॥ ५८॥
तुल्यं बुध शुक्राभ्यां मूल्यार्द्ध गुरुसोमयोः।
शनिभानु कुजैवारैर्यदा संक्रांतयस्तथा॥ ५९॥
मर्घं अतुलं रौद्रं कुर्वते राजविड्वरं।
वारेप्पकार्किभौमानां संक्रांति मृग कर्कयोः॥ ६०॥

इति खाद्यादिकं तथा।

मेष संक्रांति काले तु नभस्यपि दिनेप्पथ।
यत्राभ्रंवात विद्युत व्यामादौ तत्र वर्षति॥ ६१॥

यद्वात्र नवमासेषु वाताभ्रादिषु निर्णयः।
यस्यां दिशिच्चनं यामे दिग्धिष्णो तत्र वर्षति॥ ६२॥
किंवा नवसु सामेषु वाताभ्रादि शुभं भवेत्।
यस्यां दिशि च संपूर्णं नद्दिनेप्यखिल जलं॥ ६३॥
पौष मूल भरण्यांतं चन्द्रमाने न साभ्रकं।
आद्रादौ च विशाखांतर विमाने न वर्षति॥ ६४॥
धनराशिस्छिते देवि मूलाद्या गर्भधारणा।
गर्भाद्या च ध्रुवं वृष्टिः पञ्चो ने द्विशते दिने॥ ६५॥
दिन संख्या वरा रोहे वर्षते नात्र संशयः।
मूलं च वर्षते चार्द्रा पूर्वाषाढ पुनर्वसु॥ ६६॥
उत्तरा च तथा पुष्यं श्रवणः सार्प दैवतं।
धनिष्ठा च मघाज्ञेया शतभिषक् पूर्वफा तथा॥ ६७॥
भद्रपदोत्तराहस्तेभद्रा पूर्वायद्वैवतं।
रेवतीत्वार्द्रमादिष्यं इयं संज्ञा प्रवर्षति॥ ६८॥
मेष राशिस्थिते सूर्ये अश्विनी सक्ष संयुतं।
यदा प्रवर्षते देवि मूलगर्भ विनश्यति॥ ६९॥
भरण्यादौ सर्पदैवत्यं क्रमेण वर्षति प्रिये।
पूर्वाषाढादि पौष्णांते गर्भश्चैवं विनिश्यति॥ ७०॥
पञ्चमे पञ्चमेस्थाने गर्भपतति नान्यथा।
आर्द्रा प्रवर्षते देवी गर्जंती वा कथंचन॥ ७१॥
सर्वे गर्भाश्च तत्रैव वर्षंति पुष्टि संयुता।
आर्द्रा पुनर्वसुपुष्यो अश्लेषा च मया तथा॥ ७२॥
पञ्चभिर्गलिते सक्षे छिद्रं वर्षति माधवः।
पौर्णिमास्यां यदा पौषेवं इमा विचरस्यति॥ ७३॥
श्रावणस्य त्वमावास्यां जल योगो भविष्यति।

पौषस्यकृष्णसप्तम्यां स्वाति योगे जलं भवेत्॥ ७४॥
सुभिक्षं क्षममारोग्यं जायते नात्र संशयः।
अभ्राणि यदि पूर्वं वा जलं वा पतिते यदि॥ ७५॥
अभ्रछिन्नं जलं स्वल्पं जलपाते न वर्षति।
पौषस्य कृष्णं सप्तम्यामभ्रैर्वाविक्षिनं नभः॥ ७६॥
अष्टमारुत संयुक्तं दिव्य गर्भं तु जायते।
श्रावणे शुक्लपक्षेषु स्वाति संचूण सप्तमी॥ ७७॥
ध्रुवं वर्षति पर्जन्यं एतत्सत्यं वरानने।
अष्टमी नवमी चैव सप्तरात्रं प्रवर्षति॥ ७८॥
एवमृक्षैस्तु संयोगे जायते वरर्णिनि।
त्रयोदश्यां चतुर्द्दश्यां अमावास्यं च सुंदरि॥ ७९॥
गर्भतेतु त्रिरात्रेण विद्युन्मेघै समन्विनं।
श्रावणे पूर्णमास्या च श्रवणं च प्रर्वर्षति॥ ८०॥
द्रोण संख्या भवेन्मेघैः सुभिक्षं जायते तथा।
ऐद्रीविद्युदमावास्यां दर्शनं वाहिमासतु॥ ८१॥
अभ्रच्छिन्नं नभो वापि जलं च पतिते यदि।
अभ्रछिन्ने जलं स्वल्पं जलपाते सुवृष्टिभिः॥ ८२॥
श्रावणे पूर्णिमा स्यांतु श्रवणे जल संयुते।
सुभिक्षं च समादेश्यंतिस्मिन्वर्षं न संशयः॥ ८३॥
आषाढे प्रथमे पादे द्वितीये श्रावणे तथा।
इति पादक्रमेणैवं चतुर्मासं प्रकीर्तितं॥ ८४॥
अमावास्या तु पौषस्य शनिः सूर्य महीसुता।
संग्रहेत्सर्वधान्यानि लाभो (भवं?) द्वितुर्गुणः॥ ८५॥
वर्षते माघमासे तु संक्रांतु मघवो यथा।
बहु क्षीरस्तथा गावो बहु सस्या वसुन्धरा॥ ८६॥

माघादि दिवसे वारौ शुद्धा भवन्ति चेद्यदा।
मास त्रय महर्घंस्याद्भाव वर्षति वनस्पति॥ ८७॥
बुधश्चेत्प्रथमोवारः सर्वमासाद्यवासरे।
तत्प्रभृत्ति त्रिभिर्मासै महर्घं राज विह्वलं॥ ८८॥
प्रतिपत्सर्व मासेषु बुधो दुर्भिक्षकारकः।
ज्येष्ठेमासि तदा नूनं परिवर्षं विनाशकृत्॥ ८९॥
न माघे पतितं ज्येष्ठे... ... मूलं च वृष्टिकृत्।
नाद्रायां पतितं तोयं दुष्टकालस्तदा मतः॥ ९०॥
माघसितेयमशिषिडे मेघयु भवति सस्या निष्पत्तिः।
अथवा मेघ विहीते सस्यानां संग्रहः कार्यः॥ ९१॥
पौषे भाद्रपदे माघे शुक्लपक्षे तिथि क्षयः।
यत्संख्या जायते चाह्नि तत्संख्यै यौस्य विग्रहौ॥ ९२
पञ्चार्का पञ्चमासाश्च पञ्चसूर्यसुतस्तथा।
दुर्भिक्षम तुलं रौद्रं राजयुद्ध परस्परं॥ ९३॥
सर्वेषु चैव मासेषु सक्षवृद्धि सुभिक्षकृत्।
माघस्य प्रतिपच्चैव वाता मेघ विवर्जिता॥ ९४॥
यदा भवेत्तदाग्राहं तैलं वस्तुसुधादिकं।
द्वितीया मेघ संपूर्णा मेघच्छन्नं यदानभः॥ ९५॥
सविद्युजायते यत्र तत्र धान्यमहर्घता।
तृतीया अभ्रू संयुक्ता निर्जला गर्जते सदा॥ ९६॥
गोधूमान् तत्र गृहस्यात् यवांश्चैव विशेषतः।
चतुर्थी मेघ संयुक्ता बिंदुभिर्जल संभवं॥ ९७॥
नालिकेलानि पत्राणि महर्घाणि भवंति ही।
पञ्चमी मेघ संयुक्ता पादाबिन्दु विवर्जिता॥ ९८॥
उदकावनयुक्ता भाद्रपदे न वर्षति।
षष्टी च बिंदुका ज्ञेयानिरभ्रा निर्जला दिशौ॥ ९९॥

कर्पासं संग्रहे तत्र लाभो भवति पुष्कलः।
चतुर्थी सोमवारेण यदा गच्छ नराधिपः॥ १००॥
घोराघोरास्तथा मेघा राजविड्वर मेव च॥ १०१॥

पाठांतर

सप्तमी सोमवारः स्यान्माघे पक्षे सिते यदा।
दुर्भिक्ष्यं जायते रौद्रं विग्रहोपितु भूर्भुजां॥ १०२॥
अष्टम्यां यदि पश्चेत आदित्यमुदयं गतं।
न वर्षते तदार्द्रायां श्रावणांते तथैव च॥ १०३॥
नवमी शशाङ्क योगेन मण्डले कुरुते यदि।
आषाढं सकलं वृष्टि लोके धान्य महर्घता॥ १०४॥
माघस्य शुक्लपक्षे तु सप्तम्यादि दिन त्रयं।
रवेरस्तमने मेघास्ते चोत्तर मध्यमयोः॥ १०५॥
माघस्य शुक्ल सप्तम्यां सावधानैरहर्निशं।
वीक्षणीयं प्रयत्नेन काल निश्चय कारणे॥ १०६॥
अहोरात्रं भवेत्साभ्र वारुण्यां विद्युता सह।
ऐद्रो वातोथकौवेरे शर्वरीषुदिवापि वा॥ १०७॥
महासुभिक्षमादेशं तद्वर्षं निरूप इवं।
माघस्य शुक्ल सप्तम्यां मेघैः छिन्नं यदम्बरं॥ १०८॥
तत्प्रदेशे सुवृष्टिस्यात्सुभिक्षं तत्र विनिर्देशेत्।
शुक्लपक्षे सप्तम्यां माघ मासे प्रवर्षति॥ १०९॥
दुर्विनं वा यदापश्येत् वर्षाकाले सदा भवेत्।
पूर्णिमास्यां अमावास्यां संलग्ना तारकाक्षयः॥ ११०॥
महर्घं तत्र पूर्वार्घा मास मध्येपि जायते।
सप्तम्यां स्वाति योगे प्रदिपप्तति हिमम्॥ १११॥
माघमासोंधकारे वातो वा चण्डवेगः।
सजल जलध्वरो गर्जते वाप्यजस्त्रं॥ ११२॥

विद्युन्मालाकुला वा तदपि च भुवन्नष्टचन्द्रार्कतारं।
विज्ञेया प्रावृडेषा मुदितं जनपदैः सर्व सस्यै रूपेता॥ ११३॥
तथैव फाल्गुने चैत्रे वैशाखे च विशेषतः।
स्वाति योग विजायांताः आषाढे च विशेषतः॥ ११४॥
माघस्य नवमी शुक्लामूल सक्षेण संयुता।
विद्युन्मेघ धनुर्भिश्च अभ्रैर्वावेष्टितं नभः॥ ११५॥
मासे भाद्रपदे देवि वर्षते नवमी दिने।
माघस्य नवमी कृष्णादशम्येकादशी तथा॥ ११६॥
सवातावियुतायुक्ता कथयन्ति जलं बहु।
माघमासे तु सप्तम्या कृष्णपक्षे त्रयोदशी॥ ११७॥
चतुर्दश्यां तथा चै पूर्वस्यां दिशि चोत्थितः।
बहुदेक करे मेघा आषाढे सप्तरात्रकं॥ ११८॥
अमावास्यांतिथौधिष्णे यदा रेवति कार्तिके।
इति घनाकृतौर्नूनं वर्षे तत्र न संशयः॥ ११९॥
माघमासेत्वमावास्यां अभ्रछन्न यदा भवेत्।
हेमेनवातसंयुक्ता अहोरात्रं प्रवर्षति॥ १२०॥
पञ्च कर्णं तु विज्ञेयं दिव्य गर्भे समुद्भवं।
भाद्रपदस्य पूर्णिमास्यं प्रवर्षति॥ १२१॥
सितोस्तमितोमासि फाल्गुने यदिश्श्रितः।
तदादुर्भिक्ष्यमादेश्यं षणमासावधिर्मता॥ १२२॥
फाल्गुने चैव संक्रातौ यदा वर्षति माधवः।
विचित्रं जायते सस्यं वैशाखे ज्येष्ट हस्तयोः॥ १२३॥
फाल्गुने श्रृणु देवेशी यथा जानंति साधकाः।
सप्तमीश्वेतपक्षे तु कृतिरक्षेण संयुता॥ १२४॥
अष्टमी नवमी चैव दशम्येकादशी तथा।
भाद्रपदत्वमास्यां द्रोण मेघ प्रवर्षति॥ १२५॥

अश्वयुजस्य मासस्य चतुर्थी पञ्चमी तथा।
एवं देवि समायोगो वर्षते नात्र संशयः॥ १२६॥
फाल्गुने शुक्ल सप्तम्यां पौणिमास्यां तथैव च।
निवाता गगने मेघा विजलं विद्युता युता॥ १२७॥
यदा तत्र भविष्यंति सुभिक्षं क्षेममादिशेत्।
द्वावेतौ जल योगे च प्रभूतजलदायकौ॥ १२८॥
नभस्य कृष्ण सप्तम्यां अमावास्यां तथैव च।
तस्यैव कृष्ण सप्तम्यां अष्टम्यां यदि लक्षणं॥ १२९॥
एभिर्दिनैः समादेश्यं जलयोग समुद्भवं।
विजला मारुता यान्ति समेघा विद्युता सुता॥ १३०॥
जलयोगा भविष्यंति गर्जितं विद्युता सह।
फाल्गुनस्य तु मासस्य वर्षते चाष्टमी दिने॥ १३१॥
सुभिक्ष्यं च समादेश्यं सस्य संपत्ति रेव च।
चैत्रे च गौरि संक्रांतौ यदा वर्षति माधवः॥ १३२॥
विचित्रं जायते सस्यं वैशाख ज्येष्टयोस्तथा।
चैत्रे च श्रावणे वापि पञ्चार्काश्चेद्द्रवन्ति हि॥ १३३॥
दुर्भिक्षं तत्र जानीयात् राज्ञो विघ्नं समादिशेत्।
शुक्लपक्षे तु चैत्रस्य चतुर्थी पञ्चमीषु च॥ १३४॥
वर्षणं प्राक् शुभं किञ्चित क्रमादुत्तरतो घना।
चैत्रस्य शुक्लपञ्चमाम्यां मभूछिन्नं यदा नभः॥ १३५॥
गोधूमै श्रावणे मासित्रिगुणं लाभमादिशेत्।
चैत्रस्य शुक्ल पञ्चम्यामभ्रछन्नं यदा नभः॥ १३६॥
निर्मला वा दिशः सर्वा दृश्यन्ति वायुना युता।
गोधूमास्तत्र गृह्णीयात् महर्घानपि बुद्धिमान्॥ १३७॥
संप्राप्ते श्रावणेमासि लाभश्चे त्रिगुणोभवेत्।
द्वितीये दिवसे प्राप्ते चैत्रे वायुश्च सर्वतः॥ १३८॥

न च मेघा प्रदृश्यन्ते वृष्टिर्भाद्रपदे ध्रुवं।
तृतीये दिवसे प्राप्तेह्युत्तरो यदिमारुत॥ १३९॥
न च मेघा प्रदृश्यंते कार्तिके वृष्टिमादिशेत्।
चतुर्थे दिवसे प्राप्तमेष जालं प्रदृयते॥ १४०॥
दुर्भिक्षं जायते घोरम् नावृष्ट्या न संशयः।
दिन द्वयं यदा वाति वायुर्द्दक्षिण पश्चिमः॥ १४१॥
तदा न पच्यते धान्यं दुर्भिक्ष्यं चात्र जायते।
तृतीयायां च पञ्चम्यां वायुः पूर्वोत्तरो यदि॥ १४२॥
सर्व सस्यानि जायंते प्रजाकृत युगोपमाः।
चैत्रेमासे तु देवेशि शुक्ले तु पञ्चमी दिने॥ १४३॥
पञ्चम्यां च त्रयोदश्यां यदादेवः प्रवर्षति।
तारकाः पतनं चैव गर्जनं विद्युता सह॥ १४४॥
वर्षाकालंतदोछंन्नं नात्र कार्य विचारणा।
चैत्रस्यादौ दिवस सदशकं कल्पयित्वाक्रमेण॥ १४५॥
स्वात्यं तार्द्रा प्रभृति मुनिभिर्वृष्टिहेतो विलोक्यं।
यावत्संख्ये भवति दिवसे दुर्द्दिनं चाप्पवृष्टिः॥ १४६॥
तावत्संख्यं भवति नियतं वार्षिकं दग्धमृक्षं।
मूलमादौ समस्यांते कृष्णे चैत्रे निरीक्षयेत्॥ १४७॥
एभिश्च गलितैश्चैव गर्भश्रावो भविष्यति।
साभ्रे च हन्यते वृष्टिर्निरभ्रे वृष्टिरुत्तमा॥ १४८॥
आषाढं रोहिणीहंती आद्रावैश्रावणं तथा।
पुष्यो भाद्रपदे चैव चित्रा चाश्विन मेव च॥ १४९॥
चैत्रस्य श्रुत्वापञ्चम्यां सप्तमी नवमीषु च।
पौर्णिमास्यां तथा चैव जल योग विनिश्चयः॥ १५०॥
पञ्चमी सह रोहिण्या सप्तमी चाई संयुता।
नवमी सह पुष्येण ज्ञातव्या कालचिंतकैः॥ १५१॥

स्वात्या सहपौर्णिमासी विद्युन्मेघ समन्विता।
एभिश्च गलिते सक्षैर्गर्भश्रावं समालिखेत्॥ १५२॥
पुष्यंवृष्टैः समादेश्यं नान्य सक्षै कदाचन।
भवंति गलिता गर्भा एभिर्ज्ञनै प्रवर्षति॥ १५३॥
चैत्रस्य शुक्लपक्षे तु त्रयोदश्यां तथैव च।
धूमिका जायते चैव मेघस्तत्र न वर्षति॥ १५४॥
वैशाख पञ्चमरूपी स्यात् ज्येष्ठो धर्मान्वितः पुनः।
मासाष्टक निमित्तेषु चतुष्ट्यभीष्टदं॥ १५५॥
वैशाखे गर्जितं भूरि सलिलं पवनोघनः।
उष्णोज्यैष्टे विशिष्टः स्यात्किमन्यैर्गर्भ चेष्टितेः॥ १५६॥
वैशाखे शुक्लपञ्चम्यामभ्रछिन्नं यदानभः।
गर्जते वर्षते चापि पूर्व वातो यदा भवेत्॥ १५७॥
उदयास्तमयं यावत् ज्ञातव्यं च विचक्षणैः।
संग्रहेत्सर्वधान्यानि प्रचुराणि वरानने॥ १५८॥
मासि भाद्रपदेत्यंतं महर्घाणि भवन्ति हि।
वैशाखे तु प्रतिपदि सप्तमी नवमीषु च॥ १५९॥
अष्टमीषु यदा चैव मेघा गच्छन्तिचाम्बरे।
मेघागच्छन्ति चक्षि प्रवृष्टिस्तत्र विनिर्दिशेत्॥ १६०॥
मेष संक्रांति काले तु नवस्वपि दिनेषु च।
यत्रा भवात विद्युद्वाथार्द्रादौ तत्र वर्षति॥ १६१॥
यद्वात्र न च यामेषु वाताभ्रादि दिनं भवेत्।
सस्यां दिशि च सम्पूर्णं तद्दिनेष्वखिलं जलं॥ १६२॥
धनराशि गच्छते सूर्ये मूलाद्यागर्भ धारणा।
गर्भाद्या च ध्रुवं वृष्टिः पंचोनेद्विशतो दिने॥ १६३॥
मूले प्रवर्षति चार्द्रा पूर्वाषाढे पुनर्वसु।
उत्तराषाढा तथा पुष्यं श्रवणे सर्वदेवतं॥ १६४॥

धनिष्ठायां मघाज्ञेया पूर्वफा शततारका।
पूर्वाभाद्रे उत्तराफा उत्तराभाद्रपदेकरः॥ १६५॥
अहिर्बुध्न्यस्तथारेका रेवत्यामादिशेत्व हि॥ १६६॥

इति संज्ञा प्रवर्त्तते॥

मेष राशि स्थिते सूर्येमश्वनीरक्ष संयुते।
यदा प्रवर्षते देवि मूल वर्षं प्रवर्षति॥ १६७॥
एवं क्रमेण विज्ञेयं वृष्टि लक्षणमुत्तमं।
पञ्चमेपञ्चमस्थाने गर्भ पतति नान्यथा॥ १६८॥
आद्रा प्रवर्षतो देवि गर्जते न कथंचन।
सर्वगर्भाश्च तद्रैव ज्ञातव्या पुष्टिकारका॥ १६९॥
पुनर्वसु च पुष्यं च अश्लेषा च मघा तथा।
गलितैः पञ्चभि गर्भेश्चछिद्रं वर्षति माधवः॥ १७०॥
ज्येष्ठस्य प्रथमे पक्षेया तिथिः प्रथमा भवेत्।
आपाके न वारेणता मन्वेष प्रयत्नतः॥ १७१॥
भानुना पवनो वाति कुजो व्याधि करो मतः।
राजपुत्रेण दुर्भिक्षं भवती हि न संशयः॥ १७२॥
गुरुभार्गवसोमानामेकोपि यदि जायते।
जलेन पूरिता पृथ्विधनधान्य समाकुला॥ १७३॥
कदाचिदेव योगेन शनिवारेण जायते।
जलशेषं प्रजानां च छत्र भङ्गं विनिर्दिशेत्॥ १७४॥
आर्द्रादौ नव सृक्षाणि ज्येष्ठशुक्ले निरीक्ष्येत्।
साभ्रे च हन्यते वृष्टिं निरभ्रे वृष्टिरुत्तमा॥ १७५॥
ज्येष्ठे शुक्ल प्रतिपति सूर्यास्त मनं यदि।
द्वितीयायां निरीक्षेत् चंद्रेद्वामदक्षिणं॥ १७६॥
दक्षिणे चैव दुर्भिक्षं सुभिक्षं च तथोत्तरे।
कीलमार्गं समारोप्य आदित्यास्त मने प्रिये॥ १७७॥

पुनर्निरीक्षयेच्चंद्रे तेन मानेन लक्षयेत्।
चित्रा स्वाति विशाखासु यस्मिन्मासेन वर्षति॥ १७८॥
तं मासं निर्जलामेघा यदि वर्षति वर्षति।
ज्येष्टस्य शुक्ल पञ्चम्यां गर्जितं श्रुयते यदि॥ १७९॥
दक्षिणस्य भवेद्वायुः अभ्रछिन्नं यदानभः।
धान्याना संग्रहः कार्यस्त्रिगुणोर्थोश्विने भवेत्॥ १८०॥
ज्येष्ठस्य सिताष्टम्याश्चत्वारो वायु धारणात्।
दिवसाः मृदुः सुभवना शस्तास्त्रिघ्नघृतास्छगतिगगता॥ १८१॥
तत्रैवस्या प्राज्ये वृष्ट्ये क्रमान्मासा श्रावणे पूर्वा ज्ञेया।
परिश्रुता धारणास्तास्युः यदि तास्युरक रूपाशुभ प्रदाः॥ १८२॥
शांतरास्तुत विशा वाय तस्करभयंदाश्चोक्ता *श्लोकास्याप्यत्रवासिप्पः*॥
१८३॥
सविद्युत सवृष्टिकः सपांशूकर मारुतः।
सार्कश्चन्द्र नभस्छिन्ना धारणाशुभ धारणा॥ १८४॥
सापाश्रु वर्षा सावश्चतु भयुक्तियास्तथा।
पक्षिणां सस्व सवाचा क्रीडायां सजलादिषु॥ १८५॥
रविचन्द्र परिवेषा स्निग्धानात्यंत दूषितां।
वृष्टिस्तदापि विज्ञेया सर्व स्यापि वृद्धयो॥ १८६॥
मेघाः स्निध्नासंहताश्च प्रदक्षिण गतिः क्रिया।
तदास्यान्महती वृष्टिः सर्वसस्यार्थ साधकाः॥ १८७॥
ज्येष्ठे चैवतु मासश्च शुक्लपक्षे तदा श्रृणु।
एकादश्यां यदा देवि पूजां कुर्यात्सुशोभनः॥ १९०॥
शुभं च मण्डपं कृत्वा पुष्पै धूपैरलङ्कृतं।
तयंस्छानंसंस्थाप्य महादण्ड महाध्वजं॥ १९१॥
एवं कृत्वा प्रयत्नेन शोधयेत् काल निर्णयं।
एको वातो यदावाति चतुर्दिनानि चोत्तरे॥ १९२॥

चत्वारो वार्षिकामासा ध्रुवं वर्षति माधवः।
विपरीत यदा वाति यांति चिह्नानि वायवे॥ १९३॥
तानि चिह्नानि वर्षन्ति प्रावृटे च न संशयः।
प्रथमं पश्चिमो वातःश्चतुर्दिनानि वाति च॥ १९४॥
अनावृष्टिं विजानीया दुर्भिक्षं रौरवं भवेत्।
उत्तरोदशमार्गेण च तस्त्रोहंति चा दिशः॥ १९५॥
चत्वारो वार्षिका मासो मेघ वर्षंतिवै मृशं।
विपरीतं यदावातः चतस्त्रोहंति वा दशाः॥ १९६॥
विमार्गे परिमार्गे च परिभृष्ट शृणु तथा लक्षणं।
शीतकाले भवेद्वृष्टि वर्षाकालेन विद्यते॥ १९७॥
विपरीतो यदा वातो वर्षाकाले विनिर्द्दिशेत्।
वायव्यां पश्चिमो चैव नैर्ऋत्यां वाति वासदा॥ १९८॥
आषाढे श्रावणे क्षिप्रं द्वौमासौ वृष्टिरुत्तमा।
पूर्वस्यां तथेशान्यां आग्नेयां वाति वायदा॥ १९९॥
भाद्रपदाश्विनौछिद्रं आद्यंते वृष्टिरुत्तमा।
वक्ष्यामि रोहिणी योगोज्येष्ठे आषाढे समुद्भवौ॥ २००॥
अवृष्टिनंदभौत्यक्तं समेघं वृष्टिकारकं।
सुभिक्ष्यं जलपातेन न च ईति भयं भवेत्॥ २०१॥
अभ्रेसु मध्यमावृष्टिः वृषवृष्टे तथोत्तमाः।
निरभ्रे न तु वृष्टिः स्यात् रोहिणीहुः समागमे॥ २०२॥
सुभिक्षं प्रजेशांशे द्वितीये सपिकीटकान्।
पादे चैव तृतीयेतु मध्यमां वृष्टिमादिशेत्॥ २०३॥
चतुर्थे मन्दबुद्धि स्यात्सर्व सस्यनि पञ्चमे।
षष्टेवैमुद्गमाषश्च औषधान्यानि सप्तमे॥ २०४॥
अष्टमे च यदावृष्टिः छिद्रां वृष्टि समादिशेत्।
ज्येष्ठस्य पूर्णिमास्यं च मूलं प्रश्रवते यदि॥ २०४॥

षष्टिर्द्यप्रान वर्षंति पश्चाद्वर्षति माधव।
पादानां संक्षपावृष्टिः वृष्टिरोधो विनिर्दिशेत्॥ २०५॥
आषाढमासे प्रथमे च पक्षेनिरभ्र दृष्टे रवि मण्डले च।
न विद्युतोगर्जति नैव वृष्टिर्मास द्वयं वर्षति नैव माधवः॥ २०६॥
आषाढे शुक्लपञ्चम्यां पश्चिमोदयदि मारुतः।
गर्जते वर्षते चापि शक्र चापं च दृश्यते॥ २०७॥
संग्रहेत्सर्व धान्यानि कार्तिके च महर्घता।
शीघ्रं लाभम वाप्नोतिनान्यथा मुनि भाषितं॥ २०८॥
ज्येष्ठे वापरपक्षे तु द्वौ सक्षे श्रवणादिके।
अवर्षणे न वर्षे च वर्षतिर्वर्षते सदा॥ २०९॥
आषाढस्य तु मासस्य रोहिणी योग उत्तमः।
तत्राभ्रं विद्युदं भोवा कालो निष्पतये तदा॥ २१०॥
न वृष्टो रोहिणी योगो न पूर्वोनोत्तरोनिलः।
वृषान् श्रुवं गृहं यामः सर्पास्तं कृषि लक्षणं॥ २११॥
माघे च फाल्गुने मासि चैत्रे वैशाखयोस्तदा।
स्वाति योगे विजानीयात् आषाढस्य सितेपि वा॥ २१२॥
आषाढे स्वाति नक्षत्रे जलयोग स्फुटं भवेत्।
यद्यभ्रं विद्युदंभोवां वान्य निष्पत्तिकारणं॥ २१३॥
नवभ्यां यदि चाषाढे शुक्लायां निर्मलो रविः।
उदये वाथ मध्याह्न घन छिन्न तथास्तये॥ २१४॥
वर्षते चतुरोमासान् विपर्यासे विपर्ययः।
अस्तस्छानं रवे ज्येष्ठे अमावास्यां वीक्ष्य चिह्नितं॥ २१५॥
उत्तरेणैवदिंदोरस्त्व तच्छुभदं भवेत्॥
ज्येष्ठेमासेत्वामावास्यां पूर्णिमास्या मथापि वा॥ २१६॥

दिवावा यदि वारोत्रौ मेघा भवंतिचाम्बरे।
अवृष्टिस्तु भवेत्तत्र नात्र कार्या विचारणा॥ २१७॥
यावती भक्तिराषाढे शुक्रे प्रतिपदादिने।
पुनर्वसुश्चतुर्मास्यां वृष्टिस्यात्तत्रवै स्फुटं॥ २१८॥
आषाढे चैव संक्रांतौ यदि वर्षति माधवः।
वृद्धिरुत्पद्यते घोरा श्रावणे शोभना तथा॥ २१९॥
आषाढे तु यदा मासे द्वादशी प्रतिपद्दिने।
पूर्णिमास्यां यदा वश्यं महावातं विर्निदेशत्॥ २२०॥
सर्व एव भवेन्नित्यं देवो वर्षति शीघ्रतः॥ २२१॥

इति श्रीगार्गिसंहिता समाप्ताः।*

---

* समापन पुष्पिका- संवत् १७४६ वर्षे वैशाख सुदी 11 गुरे लिखितं भट्ट रूपजी कस्येणायं ग्रंथः। श्रीरस्तु॥ महाराजाधिराज पुरोहितजी श्री गरीबदाशजी कस्येदं पुस्तकं ॥ श्रीरस्तु॥

सहायक ग्रंथ

अर्थशास्त्र : कौटिल्य चाणक्य विरचित, संपादक- टी. गणपति शास्त्री, टीका शामा शास्त्री, मद्रास, १९२० ई. एवं संस्कृति संस्थान, बरेली, १९८८ ई.

काश्यपीयकृषिसूक्ति : जी. वोत्तेला कृत अंग्रेजी अनुवाद-ए संस्कृत वर्क ऑन एग्रीकल्चर-२, ऑक्टा ऑरियण्टालिया, एकेडमी साइंटिएरम, हंगरी तथा एसएम अयाचित कृत अनुवाद- एग्री हिस्ट्री बुलेटिन ४, एशियन एग्री-हिस्ट्री फाउण्डेशन, सिकन्दराबाद, २००२ ई.

कृषिपराशर : पराशर मुनि विरचित, संपादक- नारायणसिंह चौधरी, जयभारत प्रेस, वाराणसी से मुद्रित, १९७१ ई.

कादम्बिनी : राजस्थान पत्रिका के जयपुर-उदयपुर संस्करणों में धारावाहिक रूप में प्रकाशित।

छान्दोग्योपनिषद : संपादक ईश्वरीप्रसाद 'प्रेम', तपोभूमि कार्यालय, मथुरा, १९९० ई.

ज्योतिषरत्नमाला : श्रीपतिभटाचार्य कृत, संपादक - डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू', परिमल पब्लिकेशंस, दिल्ली, २००४ ई.

ज्योतिर्निबन्ध : शूरमहाठश्रीशिवराज, आनंदाश्रम संस्कृत ग्रंथमाला, पूना (संख्या 85), संशोधक- रङ्गनाथ शास्त्री व प्रकाशक- विनायक गणेश आपटे, १९१९ ई.

ज्योतिषसार : शुकदेव, टीकाकार पं. केशवप्रसाद शर्मा द्विवेदी, संशोधक पं. राधाकृष्ण मिश्र, गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास, मुंबई, संस्करण १९८५ ई.

ताजिकभूषण : गणेशदैवज्ञ कृत, टीका पं. सीताराम शास्त्री, खेमराज श्रीकृष्णदास, मुम्बई, संस्करण १९९५ ई.

दीपिका वा शुद्धिदीपिका : महामहोपाध्याय श्रीनिवास प्रणीत व कन्हैयालाल मिश्र की टीका, खेमराज श्रीकृष्णदास, मुंबई, संस्करण १९९४ ई.

नरपतिजयचर्यास्वरोदय : नरपति कवि कृत, व्याख्याकार पं. गणेशदत्त पाठक, चौखंबा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, संस्करण १९९९ ई.

नारदसंहिता : नारद मुनि प्रणीत, व्याख्या- पं. रामजन्म मिश्र, चौखंबा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, संस्करण २००१ ई.

पद्मकोश : दैवज्ञभगवानदत्त विरचित, टीका पं. दीनानाथ झा, चौखम्बा संस्कृत सीरीज ऑफिस, वाराणसी, १९९० ई.

प्राच्य भारतीयम् ऋतुविज्ञानम् : डॉ. धुनीराम त्रिपाठी, सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, द्वितीय संस्करण १९९३ ई.

बृहत्संहिता : वराहमिहिर विरचित तथा भटोत्पल विवृत्ति (भाग प्रथम)- महामहोपाध्याय सुधाकर द्विवेदी संपादित, पुनर्संपादन - डॉ. कृष्णचंद्र द्विवेदी, संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, दूसरा संस्करण १९९७ ई.

बृहत्संहिता : वराहमिहिर, पं. अच्युतानंद झा शर्मा कृत अनुवाद, चौखंबा विद्याभवन वाराणसी, संस्करण १९९७ ई.

बृहद्दैवज्ञरञ्जनम् : रामदीनदैवज्ञकृत, खेमराज श्रीकृष्णदास, मुंबई संस्करण १९९० तथा डॉ. मुरलीधर चतुर्वेदी कृत श्रीधरी व्याख्या, भाग प्रथम, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, संस्करण २००१ ई.

भद्रबाहुसंहिता : संपादक डॉ. नेमिचंद्र शास्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, संस्करण २००० ई.

भारतीय ज्योतिष : शंकर बालकृष्ण दीक्षित, शिवनाथ झारखण्डी द्वारा हिंदी में अनूदित, उत्तरप्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ, संस्करण १९५७ ई.

भारतीय ज्योतिष का इतिहास : डॉ. गोरखप्रसाद, हिंदी समिति, उत्तरप्रदेश शासन, लखनऊ, १९७४ ई.

मेघमाला (रुद्रयामले सारोद्धारोक्त) : संपादक डॉ. सर्वनारायण झा, गङ्गानाथ झा केंद्रीय संस्कृत विद्यापीठ, प्रयाग, १९९३ ई.

वनमाला : दैवज्ञ जीवनाथ झा, व्याख्याकार- कपिलेश्वर चौधरी, चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी, १९६४ ई.

वशिष्ठसंहिता : वृद्धवशिष्ठ विरचित, गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास, मुम्बई १९१५ ई.

वर्षप्रबोध : मेघविजय गणि कृत, टीकाकार हनूमान शर्मा, खेमराज श्रीकृष्णदास, मुम्बई, संस्करण १९९९ ई.
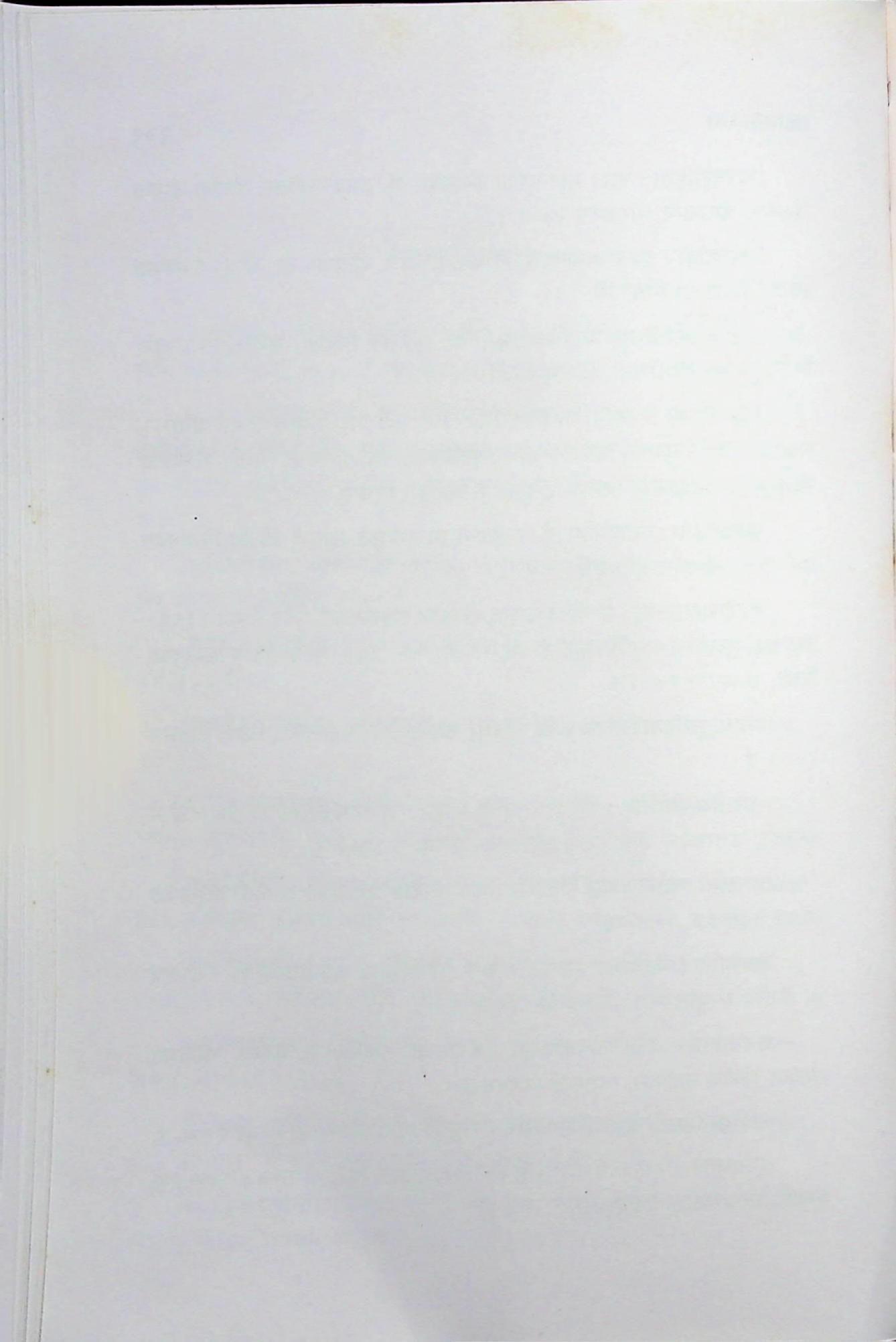
परिमल पब्लिकेशन्स

२७/२८ व २२/३, शक्ति नगर,

दिल्ली - ११०००७ (भारत)

दूरभाष : २३८४५४५६, ४७०१५१६८